CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# गोपाष्टमी

संवत् २०५५ २८ अक्टूबर १९९८

## श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला, वाराणसी

शाखा : सदर ( गोलघर ), बावनबीघा, रामेश्वर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

With Best Compliments From

RKBK

Radhakrishna Bimalkumar Limited
C.26/35, Ramkatora, Varanasi-221 001
Ph. : 343668, 342414, 346217 Fax : 0542-348579

DEALING IN

**Kerosene, Petrol, Diesel, Mobil Oil, Fertilizer, Cement & Tea**

Regd. Office : 216, Acharya Jagadish Chandra Bose Road, CALCUTTA-700 017
Ph. 247-0818, 0969 Gram : Sambhavit

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला

प्रधान कार्यालय

के० ४०/२५, दुलहिनजी रोड, गोलघर, वाराणसी

**शाखाएँ**

| | | |
|---|---|---|
| सदर ( गोलघर ) | फोन : | ३३३४१३ |
| गोकुल ( बावनबीघा ) | फोन : | ३८५६०३ |
| रामेश्वर ( मधुबन, वृंदावन, पंचशिवाला ) | फोन : | ६२४२६६ |
| सारंग ( पहड़िया ) | | |

## ११२ वाँ वार्षिक कार्य-विवरण

संवत् २०५४-५५

गोपाष्टमी, संवत् २०५५

बुधवार, २८ अक्टूबर, १९९८

सम्पादक मण्डल

**पुरुषोत्तमदास मोदी**

**शरद झिंगरन**

**श्री राम माहेश्वरी**

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

## शासक-मण्डल (सन् १९९८-२००० ई०)

| | |
|---|---|
| श्री राधेश्याम खेमका | *अध्यक्ष* |
| श्री राजकुमार जैन | *उपाध्यक्ष* |
| श्री ब्रजमोहन मूंदड़ा | *मंत्री* |
| श्री रघुनाथ प्रसाद प्रहलादका | *उपमंत्री* |
| श्री मातादीन अग्रवाल | *कोषाध्यक्ष* |

### सदस्य

श्री पुरुषोत्तमदास मोदी
श्री गगनेन्द्र केडिया
श्री परमानन्द सराफ
श्री नन्दलाल जालान
श्री दीनदयाल जालान
श्री गोपी कुमार सिंघानिया
श्री राजकुमार शाह
श्री काशीनाथ चौधरी
श्री कुंजबिहारी गुप्त
श्री प्रभात कुमार ढ़ांढ़निया

## प्रबन्धकारिणी समिति (सन् १९९८-९९ ई०)

| | |
|---|---|
| श्री रामकुमार रूँगटा | *संरक्षक* |
| श्री श्रीगोपाल गोयल | *सभापति* |
| श्री राधेकृष्ण अग्रवाल | *उपसभापति* |
| श्री मुकुन्दलाल टण्डन | *उपसभापति* |
| श्री भरतलाल लडिया | *प्रधानमंत्री* |
| श्री आनन्द ड्रोलिया | *उपमंत्री* |
| श्री मदनमोहन बलदुआ | *कोषाध्यक्ष* |
| श्री रामजीलाल चाण्डक | *कृषिमंत्री* |

### सदस्य

श्री देवेन्द्र बजाज
श्री श्रीराम माहेश्वरी
श्री मोहन लाल लढ्ढा
श्री भगवती अग्रवाल
श्री शिवशंकर अग्रवाल
श्री भूपेन्द्र वालिया
श्री रामअवतार अग्रवाल
श्री सूर्यकान्त जालान
श्री मुरारीलाल डिडवानिया
श्री घनश्यामदास शाह
श्री अंजनीकुमार सर्राफ
श्री पवनकुमार जालान
श्री राजेन्द्रकुमार गोयनका
श्री मांगीलाल सारडा



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# गोशाला प्रबंध समिति के सक्रिय सहयोगी सदस्य

## वर्ष १९९८-९९

**गोलघर**

१. श्री गिरधारीलाल दरक
२. श्री अश्विनी डिडवानिया
३. श्री संजय झाँझटिया
४. श्री मुरारीलाल धानुका
५. श्री आनन्द स्वरूप अग्रवाल
६. श्री बिट्ठल दास गुजराती
७. श्री शशिनाथ तिवारी
८. श्री लोकेन्द्र करवा
९. श्री राधेश्याम अग्रवाल

**रामेश्वर शाखा**

१. श्री कमल शर्मा
२. श्री अनिल शारडा
३. श्री ओमप्रकाश अग्रवाल
४. श्री विश्वम्भरदास अग्रवाल
५. श्री अश्विनी डिडवानिया
६. श्री सूर्यकान्त जालान
७. श्री रमेश मेहरा
८. श्री घनश्यामदास शाह
९. श्री चन्द्रमोहन सेठ
१०. श्री शैलेन्द्र रस्तोगी
११. श्री अनिल तोदी



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# प्रतिवेदन

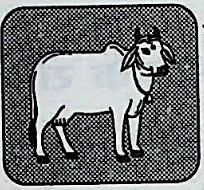

भोलेबाबा विश्वनाथ जी की नगरी में सर्वपूज्य गोमाता एवं शिववाहन नन्दी की सेवा करना महान सौभाग्य और पुण्य का कार्य है। काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला में सेवा का अवसर प्राप्त होना मेरे लिए एक ऐसा ही सुखद और संतुष्टि का काल रहा है। इस कार्यकाल में गोशाला के सुचारु प्रबंधन एवं व्यवस्था में अपने सहयोगियों के प्रशंसनीय प्रयासों एवं अग्रजों के मार्गदर्शन के द्वारा गोशाला के समुचित प्रबंधन, व्यवस्था एवं उन्नयन में अपनी अल्प योग्यता एवं क्षमतानुसार सुचारु कार्य संपन्न करने का प्रयास मैंने यथासाध्य किया है। ११२ वर्षों पूर्व हमारे पूर्वजों द्वारा स्थापित तथा अतीत के अनेक योग्य एवं कर्मठ अग्रजों द्वारा संचालित यह गोशाला अनेक स्थितियों एवं अवसरों से गुजर कर काशी की जन सेवा करते हुए तथा सभी के स्नेह और प्यार से सिंचित होकर आज देश की गोशालाओं में अपना विशिष्ट स्थान बना चुकी है।

काशी सदैव से ही धर्म एवं ज्ञान का केन्द्र रही है। इस नगर ने अनेक क्षेत्रों में देश एवं समाज का मार्ग दर्शन किया है। आज देश और लगभग पूरा संसार ही अनेक संक्रमणों के दौर से गुजर रहा है। भौतिकतावाद के अँधानुकरण तथा विज्ञानरूपी वरदान के गलत उपयोगों ने हमारी संजीवनी शक्ति-पृथ्वी और प्रकृति तथा प्राण शक्ति पर्यावरण को अधोगति की स्थिति में पहुँचा दिया है। इन भयावह परिस्थितियों का चिंतन करने वाले अन्वेषकों, वैज्ञानिकों एवं पर्यावरणविदों को अब अनुभव होने लगा है कि हम गलत दिशाओं की ओर चल रहे हैं, विनाश के रास्तों पर बढ़ रहे हैं तथा प्रकृति से सामँजस्य बनाकर ही मानवता का भविष्य सुरक्षित रख सकते हैं। इस प्रसंग और परिस्थिति में उनका ध्यान पुनः गाय पर केन्द्रित हो रहा है। रासायनिक उर्वरकों से बँजर होती भूमि, घटते पेट्रोलियम भँडार, बढ़ते प्रदूषण जैसी अनेक समस्याओं के लिए गौ और गोवंश में ही उन्हें आशा की ज्योति दिखाई दे रही है। यह चिंतन एक शुभ लक्षण है जो हमें उत्साह और प्रेरणा देता है कि हम गो और गोवंश सँवर्धन प्रयासों में और भी अधिक प्राण-प्रण से जुटें। पूज्य मालवीयजी ने कहा था "गोवंश की रक्षा में देश की रक्षा समायी है" महामना के इस कथन में महान् सत्य छुपा है।

कहा जाता है कि कार्य और प्रयासों से प्राप्त अनुभव अमूल्य होते हैं। इस कार्यकाल के अपने अनुभवों के आधार पर गोशाला की निम्नलिखित समस्याओं और आवश्यकताओं की ओर समाज का ध्यान आकृष्ट करना मैं आवश्यक समझता हूँ।

### सम्पत्ति सुरक्षा आवश्यक है

वर्त्तमान में जमीनों के मूल्य आसमान छू रहे हैं कभी जिस कीमत में एकड़ और बीघों में जमीन मिलती थी अब उस कीमत में जमीन फुटों में मिल रही है। समाज में विवेक शून्यता लोभ बढ़ रहा है। दबँग और स्वार्थी प्रवृत्ति के लोग परमार्थी और सामाजिक सँस्थाओं के प्रति भी निर्मम हो रहे हैं। गोशाला के पास मौजूद जमीनें अब काफी कीमती और महत्वपर्ण हो चुकी हैं। अतः इन पर गलत लोगों की कुदृष्टि पड़ना स्वाभाविक है। गोशाला के बाह्य परिसर पर लोगों ने अनाधिकृत कब्जा कर रखा है, तथा कब्जा बढ़ाने के कुटिल षड़यंत्रों में लगातार संलग्न हैं। प्रबंधकों एवं कार्यकर्त्ताओं को धमकियों से प्रताड़ित कर उनका मनोबल घटाने की कोशिशें भी जारी हैं। प्रशासन की उदासीनता और शिथिलता के कारण ऐसे लोगों का मनोबल बढ़ रहा है। गोशाला की रामेश्वर, मधुबन, वृन्दावन, पाँचों शिवाला, गोकुल (बावन बीघा) सारंग तथा गोलघर सभी शाखाएँ इन समस्याओं से आक्रांत हैं। इस समस्या पर गहन चिंतन और विचार कर के ही हम गोशाला का भविष्य सुरक्षित और निरापद बना सकेंगे।

### दैनन्दिनी समस्याएँ और आवश्यकताएँ

लगातार बढ़ती मँहगाई के प्रभाव से हमारा बजट तेजी से घाटे का शिकार हो रहा है, जब कि आय के साधन काफी सीमित हैं। आमदनी और खर्च के बीच बढ़ते इस अन्तर को कम करने के उपाय पर विचार करना आवश्यक है। गोशाला जैसी धार्मिक संस्थाएँ मात्र जन सहयोग एवं दाताओं के सम्बल पर आश्रित होती हैं। अतः हमारे संसाधन सीमित होते हैं। समाज के उदारमना तथा हमारे अग्रज इस विषय पर चिंतन कर हमारा सहयोग और मार्गदर्शन करें हम यह अपेक्षा करते हैं।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

**दुग्ध वितरण की समस्याएँ**

रोजाना के दुग्ध वितरण की व्यवस्था भी एक समस्या है। दूध एक कच्चा बाना है (अतिशीघ्र खराब हो जाने वाला पदार्थ) ऋतुचक्र परिवर्त्तन के साथ इसका उत्पादन भी घटता बढ़ता रहता है। गोशाला से वितरण हेतु निकले दूध की मात्रा एवं गुणवत्ता में हॉकर या कर्मचारी द्वारा यदाकदा गड़बड़ी की आशंका हमेशा बनी रहती है। कई बार दुग्ध प्रेमी गोभक्तों की प्रताड़ना प्रबंधकों को भी झेलनी पड़ती है। हम सभी गोभक्तों से निवेदन करते हैं कि ऐसी शिकायतों को दूर करने के संबध में अपने विचार व सुझाव दे कर सुधार की दिशा में हमारा सहयोग करें।

**गो चिकित्सा प्रबंध अपेक्षित है**

गोवंश के बीमार होने पर उनकी चिकित्सा, जाँच, देखभाल और समुचित दवाओं के प्रबंध की आवश्यकता है। स्वस्थ्य और निरोगी गाय ही अच्छे गोवंश की जननी तथा पुष्टिकारक दुग्ध प्रदाता हो सकती है। गोसंवर्धन प्रकल्प में हमें स्वस्थ्य और निरोगी गोवंश के दृष्टिकोण पर समुचित ध्यान देना चाहिए। गोशाला में निम्नलिखित चिकित्सा प्रबंध वांछनीय है।

**(क) पैथोलॉजी क्लिनिक**

समय-समय पर गौ के गोबर-खून-मूत्र आदि की जाँच कर उसके स्वास्थ्य का परीक्षण करने की व्यवस्था गायों को अधिक स्वस्थ्य बनायेंगी। ऐसी जाँच व्यवस्था से किसी रुग्ण गाय की जानकारी होते ही उसका दूध वितरण होने से रोका जा सकेगा।

**(ख) फ्रैक्चर क्लिनिक**

जानवरों के घायल या चुटैल होने पर अथवा किसी रोग के घाव के कारण यदि उनकी समुचित चिकित्सा तत्काल नहीं होती तो घाव सड़ने लगते हैं और शनैः शनैः रोग बढ़ने से मृत्यु तक की स्थिति आ जाती है। गोशाला में फ्रैक्चर चिकित्सा तथा प्लास्टर वगैरह की व्यवस्था होने से हम गोवंश को कष्ट पीड़ा से बचाने के साथ-साथ अधिक स्वस्थ्य रख सकेंगे।

**(ग) वीर्यशाला**

साँगोपाँग पूर्ण देशी अथवा विदेशी साँड़ों के वीर्य (Siemens) को सुरक्षित रखकर गायों के गर्भाधान के लिए उसे काशी एवं आसपास के गोपालकों के लिए सुलभ कराया जाय। गोवंश की आगामी नस्लें सुधारने का यह वीर्य बैंक एक आधार बन सकता है।

**(घ) गाय एम्बुलेंस व्यवस्था**

इसके द्वारा गोशाला एवं गोपालकों की अधिक बीमार अथवा घायल गायों को पशु चिकित्सालय पहुँचाने की व्यवस्था की जानी चाहिए, ताकि प्रचुर चिकित्सा व्यवस्था के अभाव में हमारा गोवंश नष्ट न हो।

**पालित ठाठ गायों की बढ़ती संख्या**

पहले लोग अपंग या अपाहिज गायों को ही गोशाला या पिंजरापोलों में पहुँचाते थे, परन्तु आजकल लोग अपनी ठाठ व नकारा गायों को भी गोशाला में पहुँचा देते हैं, इनकी संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इन गायों को गाभिन बनाने लायक प्रयास में चिकित्सा एवं रसद पर खर्च काफी बैठता है, क्योंकि ऐसी गायों की खुराक अपेक्षाकृत अधिक होती है, परिणाम स्वरूप गोशालाओं का व्ययभार बढ़ता है।

**गोशाला विस्तार-निर्माण योजना बद्ध हो**

गोशाला की सभी शाखाओं के विस्तार एवं निर्माण के प्रारूप का आंकलन कर एक दसवर्षीय मास्टर-प्लान की रूपरेखा निर्धारित करने से हमारा कार्यक्रम अधिक सुचारु हो सकता है। अनियमित तथा अनियोजित तथा थोड़ा-थोड़ा करने से धन, श्रम और समय का अपव्यय होता है। हमें प्रत्येक शाखा का किसी विशिष्ट प्रकल्प (कार्य) के लिए चयन करना होगा तदनुरूप उसका मास्टर-प्लान बनाना होगा। इस व्यवस्था के प्रबंधन को सुचारु और सुदृढ़ बनाने हेतु निर्माण क्षेत्र के दक्ष एवं अनुभवी व्यक्ति की सेवाएँ प्राप्त कर उसे प्रबंध समिति का अंग बनाना चाहिए।

**गोशाला से जनजुड़ाव एक आवश्यकता है**

गोशाला की उपयोगिता एवं महत्ता बढ़ाने के लिए हमें सामान्य लोगों से अधिक जुड़ना चाहिए, उन्हें गोपालन व गोसंवर्धन के लिए प्रोत्साहित करने के साथ ही उनकी गोसंबन्धी समस्याओं एवं आवश्यकताओं को समझना चाहिए। इस कार्य हेतु गोशाला की प्रबंध समिति तथा ट्रस्ट बोर्ड के सदस्य गोशाला की सेवा के लिए एक निश्चित और निर्धारित कार्य अपने जिम्मे लेकर अपने को उत्तरदायी मानने का मनोभाव बनायें, इससे उनका गोशाला में आवागमन भी सुनिश्चित होगा, जो हमारी सक्रियता में वृद्धि करेगा।

**गोशाला का आधुनिक स्वरूप**

गोलघर, गोकुल (बावनबीघा) तथा सारंग शाखा को क्रमशः गो-मंदिर , मॉडल गोशाला तथा गो-कृषि विश्वविद्यालय के रूप में परिवर्तित करने की महत्वपूर्ण योजना का चिंतन और प्रयास कर इस परिकल्पना को मूर्तरूप देना निश्चय ही एक सुदृढ़ भविष्य का निर्माण होगा। गोशालाएँ अधिकाधिक समाज से जुड़ें, स्वावलंबी बनें तथा समाज में अपनी उपादेयता सिद्ध करें, यही समयोचित है, यद्यपि यह एक कठिन लगने वाली दुरुह योजना है, लेकिन संकल्प शक्ति से किसी भी लक्ष्य को पा लेना ही मानवता का गुण है।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोशाला के कार्य संचालन हेतु प्रबन्ध समिति के सदस्यों का मनोनयन करने के पश्चात् न्यास मण्डल को भी सक्रिय रूप से दिशा-निर्देश करना चाहिए। उसे प्रबन्ध समिति के कार्यों की मानिटरिंग करते रहना चाहिए। प्रबन्ध समिति के समक्ष उपस्थित आकस्मिक समस्याओं और आर्थिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए सुझाव, मार्गदर्शन और जरूरत पड़ने पर सहभागिता भी करनी चाहिए।

**महिला भागीदारी आवश्यक है**

यह एक सच है कि हमारे धर्म के प्रतिपालन में हमारे महिला समाज की भागीदारी कहीं अधिक रही है। गाय सदैव से उनकी आराध्या रही है, गोसेवा कार्यों में वह हमारी काफी सहायक सिद्ध हो सकती हैं। उन्हें गोशाला संबन्धित कार्यों की अधिकाधिक जानकारी देने के साथ ही गो-ग्रास भाव को स्थापित करने का सघन प्रयास होना चाहिए इससे पूरे परिवार की भावना गाय के साथ प्रगाढ़ होगी तथा नई पीढ़ी में गो-संस्कार गो-चिंतन का बीज पड़ेगा।

**आभार**

अपनी शाखा रामेश्वर गोशाला में गोसंरक्षण-संवर्धन पालन एवं गौ संस्कृति प्रसार एवं उत्थान हेतु नित नूतन अनुसंधान एवं कार्य अनवरत रूप से होते रहते हैं जिनमें से अनेक प्रयास काफी परिणामदायी सिद्ध हुए हैं जिससे संपूर्ण देश में अपनी गोशाला का महत्व और सम्मान बढ़ा है। रामेश्वर गोशाला आज देश की एक आदर्श गोशाला मानी जाने लगी है तो उसके पीछे वहाँ के संचालक श्री सूर्यकांत जालान के प्रयास ही हैं। इस युवा की कार्यशैली और गोचिंतन प्रशंसनीय हैं। गोतत्व चिंतन में नींव के पत्थर की भाँति अदृश्य रहकर श्री जालान का मार्ग दर्शन करने वाले श्री शरद कुमार साधक एवं श्री जानकीवल्लभ करवा के प्रयास भी काफी सराहनीय हैं, हम इन सभी का हृदय से आभार प्रकट करते हैं। गत वर्ष के विशिष्ट कार्यक्रमों में गोपाष्टमी मेला, गाँधी वैवश्विकरण गोष्ठी का आयोजन महत्वपूर्ण कार्यक्रम रहे। शाखा विकास समिति के संयोजक श्री अश्विनी डिडवानिया ने नए कार्यकर्त्ताओं को गोशाला से जोड़कर काफी सक्रिय भूमिका निभाई। डॉ० यू० एन० सिंह, डॉ० एस० एन० सिंह, एवं श्री रामनारायण सिंह की विशिष्ट सेवाएँ इस शाखा के विकास में काफी सराहनीय रही हैं, हम इनका आभार प्रकट कर सदैव सहयोग की कामना करते हैं।

सदर गोशाला (गोलघर) गोकुल (बावन बीघा) एवं सारंग शाखाओं के प्रबंध समिति अध्यक्ष श्री श्रीगोपाल गोयल, प्रधान मंत्री श्री भरत लडिया एवं कोषाध्यक्ष श्री मोहनलाल लड्ढा ने गत वर्ष गोकुल (बावनबीघा) एवं सारंग के निमार्ण के स्वरूप परिकल्पना एवं निमार्ण कार्यों में कठिन परिश्रम करके सराहनीय प्रयास किये। इसी वर्ष में रामेश्वर शाखा से जर्सी नस्ल की सभी गायों का स्थानान्तरण इस शाखा में किया गया। इतनी अधिक गायों के रख-रखाव एवं सँभालने की व्यवस्था यहाँ नहीं थी, परन्तु इन कर्मठ और समर्पित महानुभावों ने काफी धैर्य के साथ इस दायित्व को सँभाला और एक आदर्श व्यवस्था की स्थापना की। गोशाला के उत्थान में श्री बृजेश माहेश्वरी, श्री आनन्द ड्रोलिया, श्री रामजीलाल चांडक की युवाशक्ति से हम लाभान्वित हुए हैं तथा आशा करते हैं कि इन से प्रेरणा लेकर अन्य युवाशक्ति गोशाला से जुड़ेगी। श्री भवानी सिंह गोकुल (बावनबीघा) के विकास कार्यों में समर्पित हैं जो सराहनीय है।

ट्रस्ट बोर्ड (शासक मण्डल) के अध्यक्ष श्री राधेश्याम खेमका, उपाध्यक्ष श्री राजकुमार जैन, कोषाध्यक्ष श्री मातादीन अग्रवाल के समुचित मार्गदर्शन, प्रोत्साहन तथा समय-समय पर परामर्श से हमे सदैव उत्साह एवं बल मिला है जिसके हम आभारी हैं। शासक मण्डल के सदस्य श्री गगनेन्द्र केडिया, श्री पुरुषोत्तमदास मोदी, श्री दीनदयाल जालान का अनवरत् सहयोग मेरे लिये विशेष सहायक रहा, मैं इन सभी का आभारी हूँ। मैं हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ, मे० शिव एण्ड दीपक चार्टर्ड एकाउटेंट का जो गोशाला के आय-व्यय खातों की देख-रेख एवं जाँच करने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी का निर्वाह तत्पर रूप से करते हैं। गोशाला के नियमित दैनिक कामों में श्री वीरेन्द्र भुरारिया एवं श्रीराम चितलाँगिया (माहेश्वरी) का निरंतर सहयोग मेरे लिए अविस्मरणीय रहेगा। गोशाला प्रबन्धन में कर्मचारियों एवं अधिकारियों का सहयोग भी अत्याधिक महत्त्वपूर्ण रहा है, मैं इन सभी के प्रति आभार प्रकट करता हूँ।

हम अनुभव करते हैं कि गोशालाओं की सुरक्षा, समग्र विकास एवं वैज्ञानिक उन्नति के लिए मात्र धन प्राप्त कर लेने से ही लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होगी। उदारमना गोभक्तों को अब धन के साथ ही मन एवं तन के सहयोग की भावना भी जाग्रत करनी होगी, गोशाला को भी एक उपासना स्थल बनाना होगा। मंदिर जाने की ही भाँति गोशाला आने का विचार करें, इससे प्रबंधन का मनोबल बढ़ेगा तथा आप गोशाला की आंतरिक समस्याओं, आवश्यकताओं का निकट से अनुभव कर अधिक सार्थक चिंतन करेंगे जो गोशाला के वास्तविक उत्थान में सहायक सिद्ध होगा।

**ब्रजमोहन मूँदड़ा**
सचिव (ट्रस्ट बोर्ड)



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# गोलघर, गोकुल, सारंग शाखा का कार्यवृत्त
## एवं
# कार्ययोजना

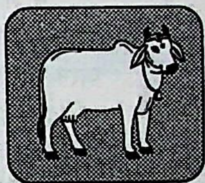

**कार्यवृत्त : 1-7-97 से 30-6-98**

250 के०वी०ए० का नया ट्रांसफॉरमर बिजली विभाग के सहयोग से लगा। श्री महेश पोद्दार, श्री रामेश्वर अग्रवाल तथा श्री श्रीबाबू अग्रवाल के सहयोग से 62 के०वी०ए० का नया जेनरेटर स्थापित हुआ और जेनरेटर कक्ष का निर्माण हुआ।

देशी गोवंश के सुधार हेतु 3 सांड़ तैयार हुए तथा 30 बाछा-बाछी तैयार किए जा रहे हैं। हरियाणा और साईवाल नस्ल की 8 गाएँ खरीदी गईं। मण्डल के नियमानुसार पहले 500 लीटर दुग्ध वितर्रण का दायित्व हमें दिया गया, उसके बाद जर्सी गायों को रामेश्वर शाखा से बावनबीघा स्थानान्तरित किया गया। मौसम में दूध का उत्पादन बढ़ जाता है जबकि खपत कम हो जाती है। इतनी बड़ी संख्या में गोवंश को रखने आदि की व्यवस्था हमारे पास नहीं थी। इन दोनों दायित्वों को उठाने की हमारी पहले से कोई तैयारी नहीं थी। विषम परिस्थितियों में शासक मण्डल द्वारा आकस्मिक रूप से दिये गए इस दायित्व को बावनबीघा के कर्मचारियों, प्रबन्ध समिति के सदस्यों और सहयोगियों ने साहसपूर्वक संभाला और सफलतापूर्वक दोनों व्यवस्थाओं का संचालन किया। इस पूरे वर्ष में प्रति माह वर्षा होते रहने के कारण फसल की दृष्टि से मौसम विपरीत रहा फिर भी उत्पादन अच्छा हुआ।

सारंग शाखा में नई बोरिंग हुई। बिजली की लाइन का कनेक्शन मिलते ही वहाँ की सिंचाई की समुचित व्यवस्था प्रारम्भ हो जाएगी।

गोलघर मे एनिमल वेलफेयर बोर्ड, चेन्नई के सहयोग से एनिमल पैथालाजी लेबोट्री की स्थापना हुई।

**बावनबीघा गोशाला की कार्य योजना:**

**1. परिसर की बाउण्ड्री**

भूखण्ड पर होने वाले अतिक्रमण और अनाधिकार कब्जे को रोकने के लिए पूरे परिसर की पक्की बाउण्ड्री बनाने में 30 लाख रुपये के खर्च का अनुमान है।

**2. दूध की पोलीथीन पैकिंग**

किसी भी प्रकार की आशंका को निर्मूल करने के लिए, समय से सुविधापूर्वक ढंग से तथा तीव्र गति से दुग्ध वितरण के लिए पोलीथीन पैकिंग में दूध वितरित किया जाना उपयुक्त है। इसका आटोमैटिक प्लांट लगाने में 3 लाख के खर्च का अनुमान है।

**3. नस्ल सुधारक योजना**

देशी गोवंश की नस्ल सुधारने के लिये नये देशी 8 सांड़, 20 गायें, 40 बाछा-बाछी लेने की आवश्यकता है। इसके लिए अनुमानित धनराशि 2 लाख रुपये अपेक्षित है। प्रथम चरण में यदि इतना कार्य होता है तो 10 वर्ष में उन्नत किस्म का देशी गोवंश गौशाला के साथ-साथ अन्य गोपालकों के लिए भी सुलभ हो जाएगा।

**४. नये खटालों का निर्माण**

भूमि की सुलभता, गोवंश रक्षा की तत्परता और कार्यकर्त्ताओं का उत्साह देखते हुए वर्तमान 200 गोवंश की संख्या बढ़ाकर 500 तक करने के लिए 5 और नई खटालें आवश्यक हैं। प्रति खटाल 2 लाख रुपये की लागत बैठती है।

**५. आधुनिक तकनीकी से सिंचाई व्यवस्था**

आधुनिक स्प्रेंकलर पद्धति से पूरे परिसर में सिंचाई व्यवस्था का जाल फैलाने के लिए 4 लाख रुपयों की आवश्यकता है। इस क्रिया के लिए किसानों को सरकार द्वारा सब्सिडी दी जाती है। परन्तु सरकार द्वारा गोशाला को इस योजना में सब्सिडी देने का कोई प्राविधान नहीं है।

**6. गाँव के गोवंश हेतु पशु-चिकित्सा केन्द्र की स्थापना**

गाँव को गोशाला से जोड़ने के लिए और समीपस्थ क्षेत्र के



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोवंश के स्वास्थ्य सुधार तथा नस्ल सुधार के लिए पशु चिकित्सा की महती आवश्यकता है। इस केन्द्र से चिकित्सा सुविधाओं के साथ उच्चकोटि का वीर्य (siemens) भी सुलभ कराने की योजना है।

**7. भूमि विकास**

गोशाला की भूमि में लेवलिंग करने, पानी की निकासी की व्यवस्था एवं उत्पादन योग्य बनाने के लिए लगभग 2 लाख रुपये की जरूरत है।

**8. विविध**

गोबर, गोमूत्र का पूरा उपयोग करने के लिनदेप पद्धति से जैविक खाद बनाने, गोबर गैस संयंत्र लगाने, आधुनिक कृषि वैज्ञानिकों की सहायता से फल, सब्जी (हार्टिकल्चर) तथा जड़ी-बूटियों की खेती करने, विविध प्रकल्प चालू करने की तैयारी है। जैसे-जैसे साधन और सुविधाएँ मिलेंगी वैसे-वैसे ये प्रकल्प खड़े होंगे। सारे प्रकल्पों का उद्देश्य गोपालन, गोरक्षा, गोसंवर्धन के क्षेत्र में गोशाला को ऐसी स्थिति में पहुँचा देना है जिससे दाताओं से प्राप्त दान द्वारा अपेक्षित विकास कर गोशाला को निकट भविष्य में स्वावलम्बी बनाया जा सके और देश में श्वेत क्रान्ति व हरित क्रान्ति को ठोस आधार मिल सके।

## आभार

मैं प्रबन्ध-समिति के मृदु एवं मितभाषी अध्यक्ष श्री श्रीगोपाल जी गोयल, कोषाध्यक्ष श्री मोहन लाल लढ़ा, उपमंत्री श्री आनन्द ड्रोलिया, कृषिमंत्री श्री रामजीलाल चाण्डक ने मुझे भरपूर सहयोग दिया। प्रबन्ध समिति के सभी सदस्यों का उनके सहयोग के लिए आभारी हूँ। पशु-आहार क्रय करने में श्री बृजेश माहेश्वरी का जो सहयोग मिला उससे गो-ग्रास की आपूर्ति में कभी व्यवधान नहीं खड़ा हुआ।

मैं सभी शाखाओं में कार्यरत सभी कर्मचारियों के सहयोग के प्रति आभारी हूँ।

मैं शासक मंडल के सभी सदस्यों का आभारी हूँ। जिनके प्रोत्साहन और सहयोग से प्रबन्ध समिति में उत्साहपूर्वक कार्य करने की प्रेरणा मिलती रही।

शासक मण्डल के मंत्री श्री ब्रजमोहन जी मूँदड़ा का हमारे कार्य संचालन में सहयोग और दिशा निर्देशन का ही फल है कि प्रबन्ध समिति गो-सेवा के कार्य पूर्ण करने के लिए पूरे वर्ष तत्पर रही।

**—भरत लडिया**
**प्रधानमंत्री (प्रबंध समिति)**

❁❁❁

**Nand Lal Bhagwan Das**
**Jan Sewa Trust**
**Plot No. 73, Jawahar Nagar Extension**
**Bhelupura, Varanasi**
**Phone : 320113 (O), 311113 (R)**



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला

# रामेश्वर शाखा

## कार्यवृत्त १ जुलाई ९७ से ३० जून १९९८ तक

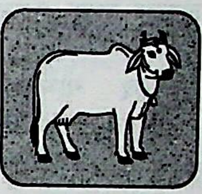

गोशाला से हमारा परिवार विगत ३०-३५ वर्षों से जुड़ा है। मुझे इस वर्ष संयोजक का दायित्व दिया गया जिसे मैंने सभी का सहयोग लेकर पूरा करने का प्रयास किया। रामेश्वर गोशाला की स्थिति अन्य गोशालाओं से भिन्न है। यहाँ गोरक्षा मूलक, स्थानीय उद्योग प्रधान, लोक शिक्षण का प्रयोग चल रहा है जिससे इस क्षेत्र में किसी को भी रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा और चिकित्सा का अभाव नहीं हो। इसके लिए गोशाला अपनी सहयोगी संस्थाओं के साथ मिलकर विविध आयाम चलाती है। इनमें कुछ अहम निर्णय इस वर्ष में लिये गये :

* इस वर्ष गोशाला ने लुप्त हो रही भारतीय नस्ल के संरक्षण का कार्य किया। जिसके तहत् गोशाला में केवल भारतीय नस्ल पर कार्य किया जाये, ऐसा निर्णय करके क्रास ब्रीड जर्सी, फ्रिजियन गायों को दूध के लिए रखना बन्द कर दिया।
* गंगा के किनारे की विशिष्ट नस्ल गंगातीरी नस्ल की गायों के विकास पर कार्य करना आरम्भ किया। इस नस्ल को दुनिया में उचित स्थान दिलवाना और उसकी अधिकतम क्षमता 28 लीटर तक के रिकार्ड को प्राप्त करके उसमें उत्तरोत्तर विकास लाना।
* गोमूत्र से विविध रोगों पर उपचार की औषधियों का प्रशिक्षण कार्यकर्ताओं को दिलवाया गया और उसका निर्माण प्रारम्भ हुआ।
* कीटनाशक के कुप्रभाव से बचाना एवं फसलों का हानिकारक कीड़ों से बचाव करने के लिए गोमूत्र के सहयोग से कीटनाशक तैयार करना जो पर्यावरण एवं मानव के लिए किसी भी प्रकार से हानिकारक नहीं हैं, बल्कि लाभदायक है।
* भारत सरकार के राष्ट्रीय साँड़ उत्पादन योजना के अन्तर्गत हरियाणा नस्ल के साँड़ तैयार करने की दिशा में आगे बढ़ाना और प्रतिवर्ष 50 साँड़ तैयार करने का लक्ष्य निर्धारित कर कार्य आरम्भ किया गया।
* गोशाला द्वारा गोरक्षा के प्रति जन जागरण करने के लिए गोपाष्टमी समारोह को भव्य रूप से मनाया गया जिसमें स्वदेशी, स्वावलम्बन, उच्च शिक्षा संस्थान के अध्यक्ष माननीय प्रो० एस० रिन्पोछे जी, माननीय गोविन्दाचार्य जी, डॉ० कमल टावरी जी जैसे विशिष्ट लोगों का आगमन हुआ।
* काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित विश्व आयुर्वेद में गो-उत्पाद की भूमिका पर विशेष गोष्ठी आयोजित की गयी जिसमें देश विदेश के 250 लोगों ने भाग लिया। इस बैठक के निष्कर्ष से सिद्ध हुआ कि गोघृत अमृत है। वह एक खाद्य ही नहीं औषधि भी है।
* इस वर्ष 25 दिसम्बर से 5 जनवरी तक गाँधी वैश्वीकरण, स्वावलम्बन और स्थायी विकास पर एक अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी आयोजित की गयी जिसमें देश विदेश के सैकड़ों लोगों ने भाग लिया। इस गोष्ठी में गाँधी के ग्राम स्वराज्य, स्वावलम्बन जैसी चीजों को आज के परिप्रेक्ष्य में व्यवहार में कैसे लाया जाये इस पर विचार हुआ।
* पर्यावरण, जीवदया और आजादी की स्वर्ण जयन्ती पर गोरखपुर, पूर्वांचल, काशी विद्यापीठ एवं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के फाइन आर्ट्स के छात्रों द्वारा एक चित्र प्रदर्शनी तैयार की गयी है, जिसे देश भर में अनेक स्थानों पर मेले में प्रदर्शित किया जा रहा है।
* गोशाला के भूखण्ड का समतलीकरण, जैविक कृषि, स्वदेशी बीजों का संरक्षण, भवनों का जीर्णोद्धार जैसे अनेक कार्य इस वर्ष में सम्पन्न हुए।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रामेश्वर गोशाला द्वारा वर्ष भर किये गये सभी कार्यों का विवरण देना सम्भव नहीं है। फिर भी संक्षेप में गत वर्ष का कार्यवृत्त प्रस्तुत कर रहा हूँ। जिसमें गोशाला के पदाधिकारी, दानदाता, कार्यकर्ता एवं क्षेत्रीय लोगों का सहयोग प्राप्त हुआ जिससे इस दायित्व का निर्वाह हो पाया। फिर भी मेरे द्वारा किसी प्रकार की त्रुटि रह गयी हो या मेरे व्यवहार से किसी को कष्ट हुआ हो तो मुझे क्षमा करेंगे। इन सब कार्यों को करने में मैं विशेष रूप से श्री सूर्यकान्त जी जालान (कानू बाबू) का उल्लेख करना चाहूँगा। जिन्होंने सब कार्यों को अन्जाम दिया। मैंने तो केवल उनके आदेश का पालन करने का प्रयास किया। कानू बाबू गोशालाओं के प्रति समर्पित व्यक्ति हैं जिन्होंने अपना तन-मन-धन गाँवों के सर्वांगीण विकास में लगा दिया है। अन्त में मैं पशुपालन विभाग, उत्तर प्रदेश, जय जगत सेवा संस्थान, गोरस भण्डार समिति एवं सेठ किशोरीलाल जालान सेवा ट्रस्ट का भी अभारी हूँ। इन संस्थाओं ने कदम-कदम पर सहयोग प्रदान किया है।

—अश्विनी डिडवानिया (संयोजक)

## गोग्रास-दान का अनन्त फल

योऽग्रं भक्तं किंचिदप्राश्य दद्याद् गोभ्यों नित्यं गोव्रती सत्यवादी।
शान्तोऽलुब्धो गोसहस्रस्य पुण्यं संवत्सरेणाप्नुयात् सत्यशीलः॥
यदेकाभक्तमश्नीयाद् दद्यादेकं गवां च यत्। दशवर्षाण्यनन्तानि गोव्रती गोऽनुकम्पकः॥

(महाभा०, अनुशा० ७३ । ३०-३१)

जो गोसेवा का व्रत लेकर प्रतिदिन भोजन से पहले गौओं को गोग्रास अर्पण करता है तथा शान्त एवं निर्लोभ होकर सदा सत्य का पालन करता रहता है, वह सत्यशील पुरुष प्रतिवर्ष एक सहस्र गोदान करने के पुण्य का भागी होता है। जो गोसेवा का व्रत लेने वाला पुरुष गौओं पर दया करता है और प्रतिदिन एक समय भोजन करके एक समय का अपना भोजन गौओं को दे देता है, इस प्रकार दस वर्षों तक गोसेवा में तत्पर रहने वाले पुरुष को अनन्त सुख प्राप्त होते हैं।

## आज के गोग्रास का सर्व सुलभ स्वरूप

आज की परिस्थिति में गोग्रास देने के लिये हर घर में गायें मिलना सम्भव नहीं। गोग्रास के लिये यदि गाय न मिले तो गोग्रास के रूप में हर परिवार को रोजाना कम-से-कम 2 रु० से 10 रु० तक निकालना चाहिए और साल भर के बाद जिस गोरक्षण-संस्था में, आपको गाय की सेवा होती दीखे, उसे समर्पित कर देना चाहिए। इसे 'धर्म का ही रूप, गोसेवा का ही रूप और गोरक्षा का ही एक रूप समझना चाहिए। इससे आप गोसंवर्धन जैसे पुण्य-कार्य में भागी बन सकेंगे।'



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# रामेश्वर गोशाला की कार्य योजना

## कार्यवृत्त योजना १ जुलाई १९९८ से ३० जून १९९९

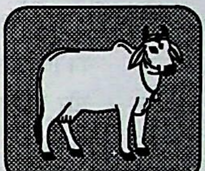

श्री रामेश्वर गोशाला के संयोजक के दायित्व से जो गोसेवा का अवसर प्राप्त हुआ, यह मेरे लिये आनन्द का विषय हैं।

रामेश्वर गोशाला ने गोरक्षा मूलक स्थानीय उद्योग प्रधान लोक शिक्षण की कार्य योजना ली है उससे देश में उसका सम्मान बढ़ा है। इस क्रम में इस वर्ष के लिए कुछ निम्न कार्य योजना बनाई गई है :

- कसाईयों से छुड़ाये गये, नगर पालिका से पकड़ कर आये या किसानों, गोपालकों द्वारा जमा कराये गये गोवंश को गोशाला में संरक्षित किया जायेगा।
- नस्ल सुधार की दृष्टि से केवल भारतीय नस्ल उसमें भी विशेषकर गंगातीरी, पूर्वी हरियाणा एवं हरियाणा नस्ल का चयन किया गया है। इनके नस्लों के उन्नत साँड़ों को तैयार करके किसानों को, गाँवों में एवं अन्य गोशालाओं को दिये जायेंगे।
- गोबर के पूर्ण उपयोग की दृष्टि से दो बड़े गोबर गैस प्लान्ट लगायेंगे।
- गोबर गैस के निकलने वाली स्लरी की गुणवत्ता एवं मात्रा बढ़ाने के लिए कम से कम 50 नड़ेप कम्पोस्ट गढ्ढे तैयार किये जायेंगे।
- केचुँआ खाद का उत्पादन भी और बढ़ाया जायेगा।
- गोमूत्र की औषधि का उत्पादन कर एवं प्रचारित कर उसका लाभ बतलाया जायेगा जिससे इसका प्रचार बढ़े।
- गोमूत्र से कीटनाशक तैयार कर फसलों पर छिड़काव किया जायेगा और कीटनाशकों से होने वाली हानि और गोमूत्र कीटनाशक के लाभ से किसानों को अवगत कराया जायेगा।
- गोशाला के कुशल संचालन के लिए कम से कम 100 प्रबन्धक इस वर्ष प्रशिक्षित किये जायेंगे।
- बैल चालित यन्त्रों पर शोध एवं निर्माणशाला प्रारम्भ कर बैलों का कार्य दिवस बढ़ाने का प्रयास होगा।
- पर्यावरण प्रदूषण से मुक्ति पाने के लिए एक लाख नीम के पेड़ लगाना एवं कम से कम 5 लाख नीम के पेड़ की नर्सरी लगाने की योजना है।

गोशाला में कार्यकर्ताओं एवं समाज के सहयोग से ही लक्ष्य प्राप्ति होगी। अतः आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि गोशाला के माध्यम से समग्र विकास कार्यक्रम में अधिकाधिक सहयोग करें ताकि यह गोशाला देश में पूर्ण गोहत्या बन्दी का अनुकूल वातावरण बनाने की भूमिका में सतत् बढ़ती रहे।

—कमल शर्मा
(संयोजक)



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# गोलघर शाखा : गो मंदिर

## (एक परिकल्पना)

—ब्रजमोहन मूँदड़ा

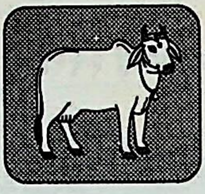

**गोलघर शाखा**

गोलघर शाखा को गो मंदिर में परिवर्त्तित करने के लिए परिसर का योजनाबद्ध रूप से पुनर्निमार्ण किया जाना चाहिए। इस शाखा के परिसर में तीन मंजिल भवन का निर्माण होना चाहिए। भूतल (ग्राउण्ड फ्लोर) पर अच्छी नस्ल की गायें रखकर ६०० लीटर दूध का प्रतिदिन उत्पादन किया जा सकता है। इससे नगर की जनता को गाय का शुद्ध एवं ताजा दूध सुलभ होगा। दुग्ध उत्पादन का एक निश्चित भाग (प्रारम्भ में लगभग ५०-६० लीटर) किसी चिकित्सालय में गरीब मरीजों के लिए निःशुल्क देने की व्यवस्था हो। इस दुग्ध उत्पादन से गोलघर शाखा केन्द्रीय कार्यालय के अतिरिक्त भार को वहन करते हुए आत्मनिर्भर हो सकेगी। ग्राउण्ड फ्लोर पर मुख्यद्वार के बाहर पशु पैथोलॉजी क्लीनिक तथा पशु डिस्पेन्सरी बनाई जाय। ग्राउण्ड फ्लोर पर ही कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र बनाया जाय। प्रथम तल पर गोशाला का केन्द्रीय कार्यालय, गोशाला की सभी शाखाओं का सम्पर्क कार्यालय और एक सभागार बनाया जाय। द्वितीय तल पर गोप्रदर्शनी तथा लाइब्रेरी की स्थापना की जाय। धार्मिक साहित्य में वर्णित गाय की महिमा, विश्व में गाय के विभिन्न पहलुओं को उजागर करने वाले चित्र एवं विद्युतचालित खिलौनों की प्रदर्शनी स्थायी रूप से लगाई जाय। गाय से सम्बन्धित देश तथा विदेश में उपलब्ध सामग्री भी एक स्थान पर प्रदर्शित की जाय। तृतीय तल पर चिकित्सकों तथा कर्मचारियों के लिए आवास बनाया जाय। शहर की जनता को गाय से जोड़ने के लिए गो-भक्तों को कार-सेवा के लिए गोशाला में आंमत्रित कर प्रेरित किया जाए।

**बावनबीघा : माडल गोशाला**

गोशाला रामेश्वर शाखा ने देश में अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया है। गोपालन की तमाम संभावनाओं को इस शाखा ने व्यावहारिक करके दिखलाया है। बावनबीघा को भी एक मॉडल गोशाला के रूप में विकसित करने की आवश्यकता है। इस शाखा में अच्छी नस्ल की गायों को पालकर प्रतिदिन १००० लीटर दूध का उत्पादन संभव है। यहाँ पर असहाय गोवंश को रखने के लिए खटालों का निर्माण होना चाहिए। यहाँ आधुनिक संसाधनों से परिपूर्ण एक पशु चिकित्सालय की स्थापना की जा सकती है। इस शाखा में १०० बीघे का विशाल भूखण्ड है। सड़क पर इसका १ किलोमीटर फ्रंटेज है और वर्तमान में यह शाखा शहर और गाँव का मिलन बिन्दु है। भविष्य में तो शहर सीमा के विस्तार के साथ शहर इसे अपने आगोश में ले लेगा।

इस भूखण्ड के ६० बीघे जमीन को गोवंश के लिए हरा चारा उत्पादन हेतु सुरक्षित रखा जाय। इस भूखण्ड के ३० बीघे जमीन पर वैज्ञानिक ढंग से सब्जी-फल-फूल तथा देशी जड़ी-बूटियों के उत्पादन की महत्वाकांक्षी योजना बनाई जाय। गाँव की जनता को गाय से जोड़ने के लिए गाँव के गोभक्तों की कार-सेवा का लाभ उठाया जाय। तनावपूर्ण माहौल से बेचैन आदमी आजकल मनोरंजन के जिन स्थानों और साधनों के पास जाता है वहाँ उसका अवचेतन मन शान्ति लेकर नहीं लौट पाता है। बावनबीघा शाखा में प्राच्य (भारतीय) संस्कृति के आधार पर एक मिनी रिसोर्ट (यद्यपि इस स्थान को मिनी रिसोर्ट कहना उचित नहीं है) टाइप का केन्द्र विकसित किया जाय। इस केन्द्र में व्यक्ति अकेले अथवा परिवार सहित आकर ऐसा आमोद-प्रमोद और मनोरंजन प्राप्त कर सके जिससे उसके अवचेतन मन में शान्ति का अनुभव हो। इस केन्द्र में शुचितापूर्ण खान-पान की व्यवस्था हो। बच्चों के लिए खेलकूद की भी व्यवस्था हो। गाय और घरेलू पशु-पक्षियों के साथ क्रीड़ा करने की सुविधा हो जिससे बच्चों तथा बड़ों में गाय और पशु-पक्षियों तथा पर्यावरण के प्रति लगाव बढ़े। बड़ों के विश्राम करने का ऐसा केन्द्र बने जहाँ उन्हें आज के तनावपूर्ण वातावरण से भिन्न आत्मिक शान्ति का परिवेश प्राप्त हो।

**सारंग शाखा : गो-कृषि विश्वविद्यालय**

देश में ऐसे विद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों की आवश्यकता है जहाँ गोपालन के सम्बन्ध में पूर्ण शिक्षण-प्रशिक्षण दिया जा सके और तत्सम्बन्धी अनुसन्धान कार्य अनवरत चलते रहें। इनमें



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

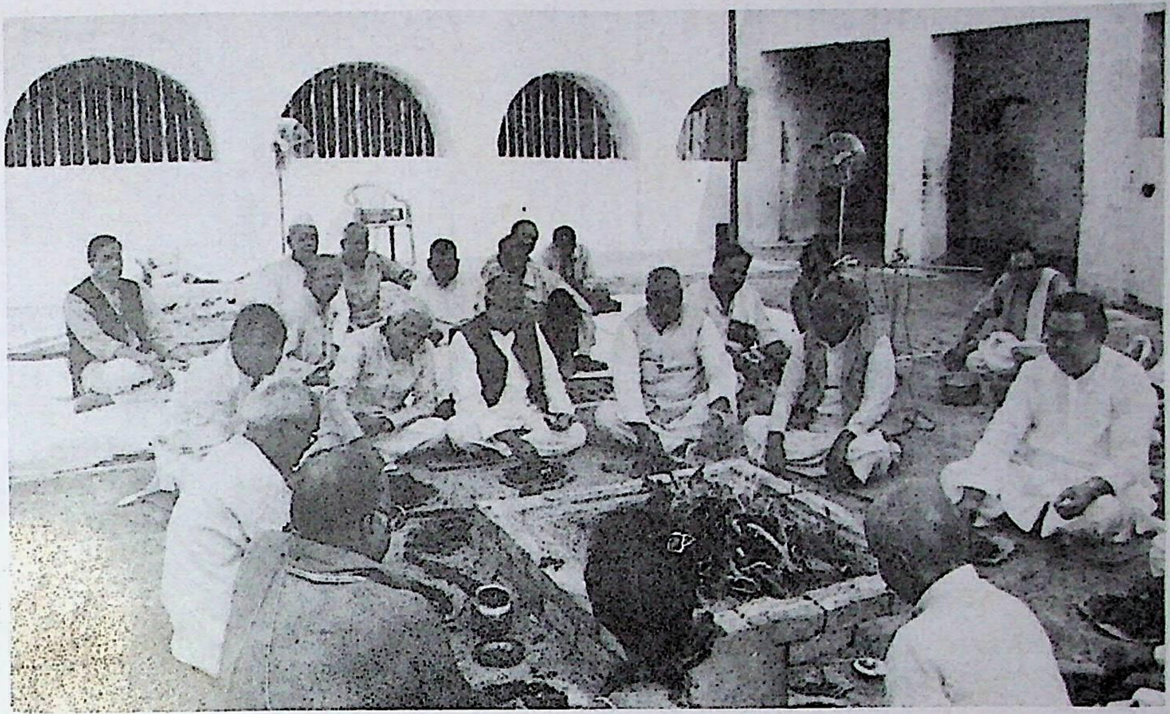

गोलघर गोशाला में सामूहिक हवन करते गो-भक्त

गोपाष्टमी समारोह के मुख्य अतिथि डॉ० मण्डन मिश्र ( कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय )
'गोमाता को गोग्रास समर्पण'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

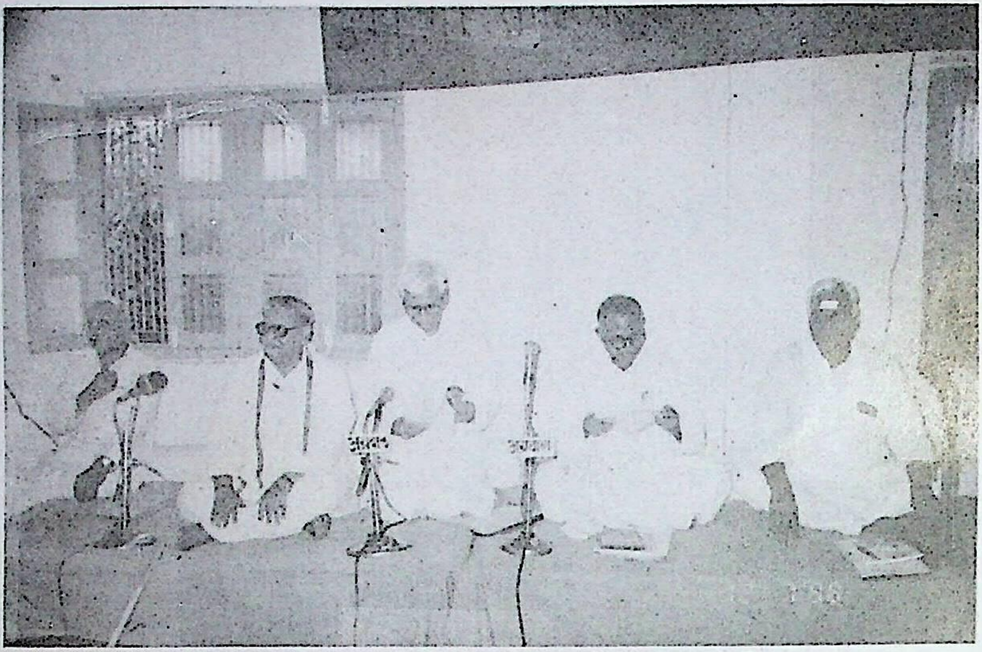

रामेश्वर गोशाला के विशिष्ट उत्सव के मुख्य अतिथि
माननीय गुमानमल लोढ़ा सम्बोधित करते हुए।

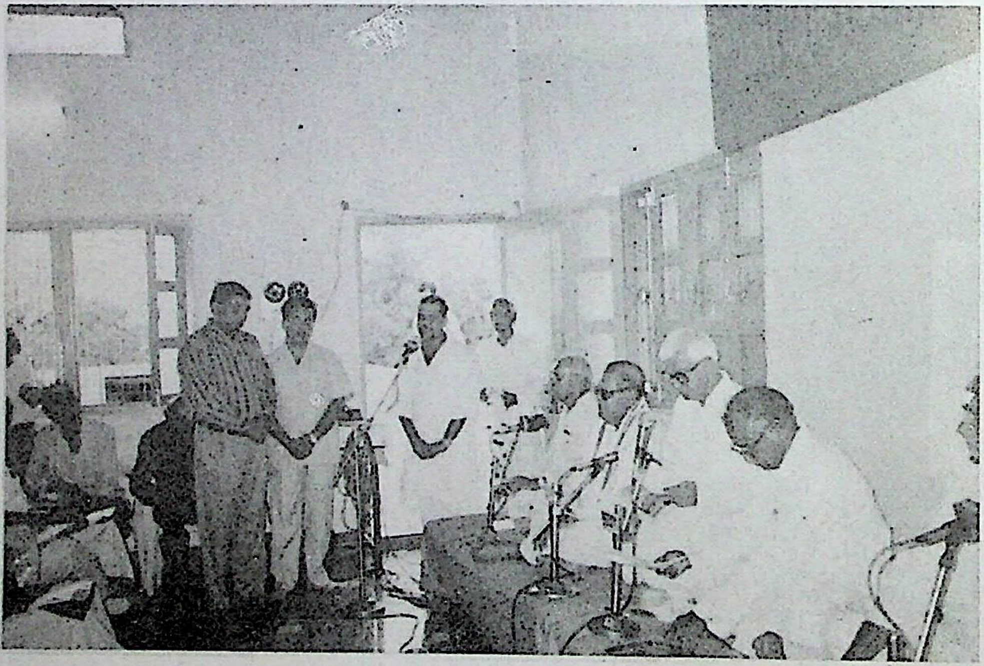

माननीय गुमानमल लोढ़ा का स्वागत करते हुए श्री सूर्यकान्त जालान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परिवारों की सुख समृद्धि शांति हेतु रसोई से गोग्रास निकालना हमारी संस्कारमयी परम्परा रही है, कालप्रवाह के कारण अब घरों, गली मोहल्लों में गोपालन शिथिल हो गया है। गोग्रास परम्परा न चाहते हुए भी बिखर रही है।

इसे बिखरने ना दें, अपने रसोई घरों में गोग्रास गोलक रखें तथा रसोई ग्रहण से पूर्व गो का ध्यान कर उसमें यथासाध्य नियमित गोअंश धन अर्पित करें—यह गऊएँ आपके गोग्रास की प्रतीक्षा में हैं—आपका एक-एक रुपया इनका पालन करेगा।

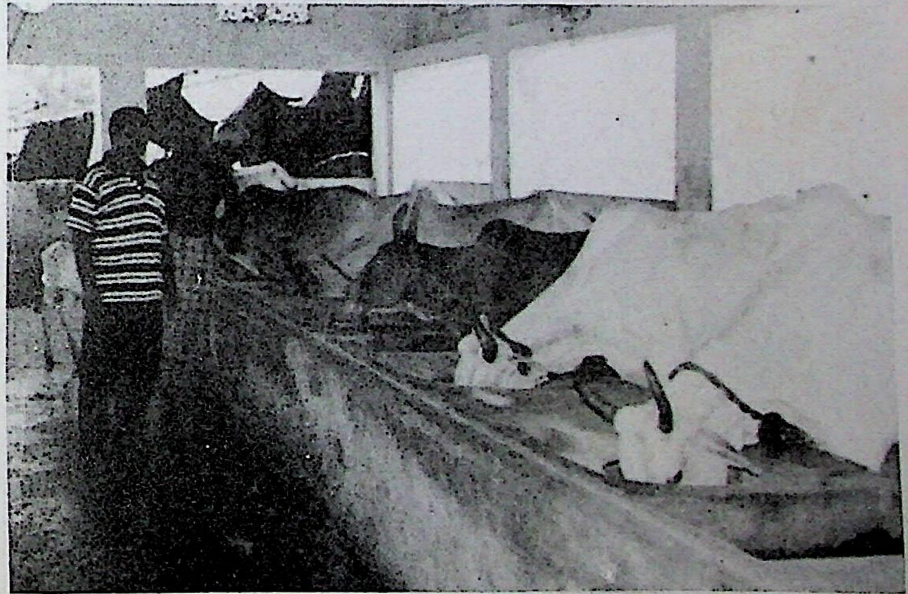

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बावनबीघा गोशाला गोपाष्टमी समारोह के मुख्य अतिथि
प्रदेश पशुपालन मंत्री श्री वीरेन्द्र सिंह एवं गोशाला के पदाधिकारीगण

बावनबीघा गोशाला के 'भजन संध्या' कार्यक्रम में रानी सती श्याम भक्त मण्डल के उत्साही गायक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शिक्षण-प्रशिक्षण की सुविधा सुलभ कराई जाय। गाय को केन्द्र बनाकर एक ऐसा प्रॉजेक्ट तैयार हो जिसे इस दावे के साथ पेश किया जा सके कि "गाय धन खाती नहीं देती धन है" अर्थात् इस भ्रान्ति को तोड़ा जा सके कि जन-सामान्य तथा गोशालाओं को गोपालन से आर्थिक लाभ नहीं प्राप्त हो सकता, गोपालन और कृषि के विकास से गोशालाओं को आत्मनिर्भर भी बनाया जाय। गाय को अर्थलाभ तथा ग्राम्य विकास से जोड़ने की कल्पना को चरितार्थ करके दिखाया जाय। गोवंश की नस्लसुधार का कार्य अनिवार्य रूप से किया जाय।

- गोवंश के मूत्र एवं गोबर को रासायनिक खाद के विकल्प के रूप में स्थापित करना और इस खाद की सुलभता के लिए योजना बनाना।
- गो मूत्र एवं गोबर से वैकल्पिक उर्जा प्राप्त करने की योजना।
- पूर्ण सुविधा एवं साधनयुक्त गो-चिकित्सालय की स्थापना इसके अन्तर्गत हो।
- प्रशिक्षित गो-सेवक तैयार करना।
- गोवंश की नस्ल-सुधार के लिए अन्य कार्यक्रमों के साथ-साथ वीर्य बैंक और नंदीशाला की योजना।
- गोवंश के आहार को सन्तुलित करने के लिए हराचारा के उत्पादन हेतु शोध एवं अनुसंधान एवं इसके साथ ही जनसामान्य को हराचारा सुलभ कराने की योजना।
- जड़ी-बूटियों के उत्पादन की योजना।

सांरग शाखा को गो-कृषि विश्वविद्यालय में परिवर्तित किया जा सकता है। इससे कृषि गो-पालन, गो-संवर्धन एवं गो-संरक्षण के आयाम निरन्तर सुदृढ़ होते जायेंगे।

☎ दुकान : ३५२२६८, ३५२९७५
निवास : २२०३८७, २२०३८९

**केड़िया साड़ीज प्रा० लि०**

*बनारसी साड़ी एवं फैन्सी पोत के*
*निर्माता एवं विक्रेता*

चित्रा सिनेमा भवन, चौक, वाराणसी-221001

☎ दुकान : ३३३२१२, ३३३४८७
निवास : ३२१०१०८

**गोरधनदास लक्ष्मीदास**

लक्खी चोतरा, वाराणसी-221001



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# गाय, गोशाला और ग्रामोद्योग

—सूर्यकान्त जालान 'कानू'

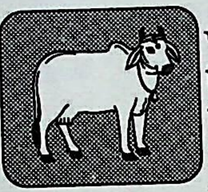

विश्व में भौतिक विकास सतत् हो रहा है। वैज्ञानिक नित् नये आविष्कार भी कर रहे हैं जिससे उत्पादन में सहायता तो मिल रही है साथ ही आर्थिक असमानता और बेरोजगारी भी बढ़ रही है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि वैज्ञानिक आविष्कार बन्द कर दिये जायें, बल्कि यह है कि वैज्ञानिकों को इससे उत्पन्न होने वाली समस्याओं के समाधान भी खोजने चाहिए। आजादी के पचास वर्षों में अपने देश में भी चतुर्दिक विकास हुए, फिर भी 30 करोड़ लोग गरीबी रेखा से नीचे जीने को विवश हैं। इन लोगों के समक्ष रोजी-रोटी का संकट है। सरकार एवं समाज शास्त्री इससे चिन्तित हैं, हल ढूँढ़ने में लगे हैं।

भारत गाँवों का देश है। यहाँ की संस्कृति गाँवों में विकसित हुई। नगर सभ्यता तो वैभव का प्रदर्शन है, जहाँ लोग अपनी लाभ बुद्धि के आधार पर अनुत्पादक समाज का निर्माण करते हैं। उनकी आश्रय स्थली नगर-महानगर है। रेत का महल बहुत दिन नहीं टिकता है। आज हर नगर-महानगर में गन्दगी, पेयजल, पर्यावरण, ध्वनि प्रदूषण जैसी कठिनाईयों से लोगों का स्वस्थ जीवन जीना ही कठिन हो गया है। इस स्थिति में देशभर की गोशालाएँ एक नया संदेश दे सकती हैं।

देश भर में समाज द्वारा संचालित लगभग 8000 गोशालाएँ हैं। इनके माध्यम से देश में गो रक्षा, गोसंवर्धन, गोपालन, गो-संस्कृति का संकल्प गोपाष्टमी के शुभ अवसर पर कराया जाता है। गोपाष्टमी के दिन से ही भगवान श्रीकृष्ण ने गोचारण प्रारम्भ किया था। गोपाष्टमी का पर्व गोरक्षा का संकल्प दिवस है। इस दिन का भारतीय जन मानस पर बहुत प्रभाव है।

वैश्वीकरण के कारण देश में बेरोजगारी का गम्भीर संकट पैदा हो गया है। करोड़ों युवक नौकरी की कतार में खड़े निराश हो रहे हैं। उनमें आत्म-विश्वास डगमगा रहा है। जिस देश की युवा शक्ति का आत्म-विश्वास डिग जाये, वह देश प्रगति नहीं कर पायेगा। ऐसे में समाज के अग्रणी लोगों का दायित्व है कि उन्हें सम्हालें। चतुर्दिक दृष्टि डालें तो भी उम्मीद की किरण नहीं दिखाई देती है। इस अन्धकार में प्रकाश की किरण गोसेवा है। सरकारी आँकड़ों के अनुसार देश में उन्नीस करोड़ गायें हैं। परन्तु वास्तव में इससे काफी कम हैं। भारत में मूलतः लोग शाकाहारी हैं। एक शाकाहारी व्यक्ति को स्वस्थ रहने के लिए न्यूनतम 350 ग्राम दूध प्रतिदिन चाहिए। जबकि हमारे पास प्रति व्यक्ति प्रतिदिन उत्पादन 197 ग्राम ही है। दूध के अभाव में हमारे यहाँ विशेषकर बच्चों में कुपोषण बढ़ रहा है। गोबर गोमूत्र के अभाव में कृषि उत्पादन भी प्रभावित हो रहा है। भूमि की उर्वराशक्ति घट रही है, ऊसर बढ़ रहा है। इन समस्याओं का समाधान गोवंश की संख्या बढ़ाना है। सरकार को चाहिये कि देशहित में अविलम्ब गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाये। यह सरकार का वायदा है और दायित्व भी। वर्तमान सरकार ने अपने चुनाव घोषणा पत्र में भी पूर्ण गोहत्या बन्दी का वचन दिया था। इसलिए सरकार को पूर्ण गोहत्या बन्दी का कानून बनाकर उस पर अमल करवाना चाहिए।

देश की सबसे बड़ी समस्या बेरोजगारी की है इसे दूर करने के लिए पूर्ण गोहत्या बन्दी आवश्यक है। क्योंकि गोवंश की हत्या रोकना और उसकी संख्या में वृद्धि करना नस्ल सुधार कर उनसे दूध, गोबर, गोमूत्र का उत्पादन बढ़ाकर एक करोड़ परिवारों को रोजगार दिया जा सकता है। इस कार्य के लिए विशेष तकनीक एवं विदेशी सहायता की आवश्यकता नहीं है। अपने परम्परागत साधनों एवं कार्य पद्धति के आधार पर भी यह सम्भव है और आवश्यक हो तो आधुनिक तकनीक का भी समावेश किया जाये।

जिस प्रकार गोसेवा के माध्यम से करोड़ों लोगों को रोजगार दिया जा सकता है, उसी प्रकार गोशालाओं को केन्द्र बनाकर ग्रामोद्योग भी खड़े किये जा सकते हैं। इसके लिए आवश्यकता है युवकों में आत्म-विश्वास जगाने की, बाजार सुलभ कराने की,



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनुकूलता लाने की। हमलोगों को विगत वर्षों के अनुभव से विश्वास हो गया है कि एक-एक गोशाला सैकड़ों गाँवों की बेरोजगार्री दूर कर सकती है। सुरभि शोध संस्थान रामेश्वर गोशाला के सहयोग से 194 गाँवों में कार्य कर रहा है। वहाँ सभी को रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा और चिकित्सा सुलभ हो, ऐसी परिणामप्रद योजनाएँ चल रही हैं।

ये योजनाएँ देश भर में फैलें, इसके लिए अब गोशाला में गोशाला प्रबन्धक प्रशिक्षण शिविर चलाया जा रहा है। इनको और अधिक प्रभावी कैसे बनाया जाये, इसके लिए सुझाव अपेक्षित है। ताकि गायों से गोशाला और गोशाला से ग्रामोद्योग खड़े हों और राष्ट्र समृद्धशाली बने।

जय गो माता, जय भारत।

★★★

# गाय के गोबर से मूल्यवान खाद

जनसंख्या बढ़ रही है, प्रति व्यक्ति जमीन की उपलब्धि घट रही है। शहर बढ़ रहे हैं, गाँव उजड़ रहे हैं। बढ़ते शहरों ने अपने आसपास की उपजाऊ भूमि को निगल लिया है। शासन का मानना है कि बढ़ती हुई जनसंख्या को खिलाने के लिए भूमि को रासायनिक खाद का सहारा देना जरूरी है, जिससे वह अधिक जनसंख्या को पोषित करने का भार उठा सके। लेकिन वर्षों से रासायनिक खाद काम में लाने वाले विकसित देशों को उस खाद के विषय में अनुभव दूसरा ही है। अमेरिका में हर वर्ष २७ लाख एकड़ जमीन रासायनिक खादों के कारण बेकार हो रही है। ''वर्ल्ड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट'' ने विस्तार से रासायनिक खादों के असर का अध्ययन करके निष्कर्ष निकाला है कि अभी तक पूरे संसार में तीन सौ करोड़ एकड़ जमीन रासायनिक खादों के अत्यधिक प्रयोग से ऊसर हो गयी है। यह पिछले ५० वर्षों का आकलन है। अर्थात् भारत और चीन दोनों महादेशों का मिला-जुला जितना क्षेत्रफल है, उतनी जमीन तो ५० वर्षों में बेकार हो चुकी है।

अमेरिका अपने विशाल भूखण्ड में से जमीन की बर्बादी की यह विलासिता सहन कर सकता है, क्योंकि उसके पास प्रति व्यक्ति १२ एकड़ जमीन है, किन्तु भारत में तो यह औसत पौन एकड़ से भी कम है। हम यह विलासिता अपनाकर कितने दिन जीवित रहने की सोचते हैं? बेटे-पोतों के लिये सोना-चाँदी और नोटों के रूप में तो लाखों करोड़ों छोड़ जाने का सपना संजोते हैं, किन्तु सबकी पोषणदायिनी भूमि को कैसी हीन दशा में छोड़ जाएंगे, इस ओर शायद ही हमारे नीति-निर्धारकों ने ध्यान दिया है। सरकारों का ध्यान तो तात्कालिक समस्याओं को सुलझाने में ही लगा रहता है। किसी तरह उनको दबाकार, टालकर, भ्रम पैदा करके यश मिलता रहे, इससे अधिक ध्यान देने की उनकी इच्छा होती ही नहीं, किन्तु सरकार के बाहर जो विचारक हैं, उनका ध्यान तो इस ओर जाना ही चाहिए। भूमि से तात्पर्य भूमि, जल, हवा अर्थात् पूरे पर्यावरण से है। इस परिस्थिति का उपाय क्या है? इसका उत्तर कम्पोस्ट खाद है।

☎ दुकान : ३६०२४२, ३६२१९४
निवास : ३६००२४

राठी मार्बल इण्डस्ट्रीज

अधिकृत विक्रेता : बिरला सफेद सिमेन्ट

थोक विक्रेता : मार्बल, मार्बल टाइल्स, कोटास्टोन, ग्रेनाइट, ग्रेनाइट टाइल्स

बी० 38/1 महमूरगंज रोड, वाराणसी-221010

फैक्ट्री—बी० 37/200, बिरदोपुर, वाराणसी-221001



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# पशुधन की देसी नस्लों का तिरस्कार

—डॉ० भरत झुनझुनवाला

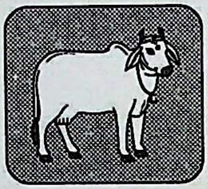

हमारी सरकार की नीति के अन्तर्गत केवल विदेशी नस्ल की (क्रासब्रीड) गायों के लिये ऋण दिया जा सकता है। बैंक से ऋण प्राप्त करने के लिये डॉक्टर द्वारा एक सार्टिफिकेट देना होता है कि गाय हाल्सटीन या जर्सी है। इसका परिणाम यह है कि हमारे किसान देसी नस्ल से विमुख होते जा रहे हैं। यदि विदेशी नस्ल के पशुओं से वास्तव में किसान का भला होता तो यह नीति स्वीकार्य थी। परन्तु वास्तविकता यह है कि विदेशी नस्लों से अक्सर किसानों को नुकसान ही होता है। आकर्षण तो मात्र ऋण का है। रिजर्व बैंक की ऋण नीति के चलते दो तरह से हानि हो रही है। सबसे पहले तो यह कि किसान बेवकूफ बन रहा है और दूसरा यह कि हमारी सदियों से चली आ रही अच्छी नस्लें लुप्त होती जा रही हैं।

इस दुखद स्थिति के पीछे एक अजीब गलतफहमी दिखती है। सामान्यतः हाल्सटीन गाय दूध अधिक देती है। जहाँ देसी गाय एक दिन में ७ लीटर दूध देती है वहाँ जर्सी १५ किलो। अतः हमारी सरकार विदेशी नस्लों को प्रोत्साहन देती रही है। लेकिन क्या दूध अधिक देने मात्र से हाल्सटीन अच्छी हो जाती है? नहीं। कारण यह है कि उसके नाज-नखरे भी उठाने पड़ते हैं और चारा भी अधिक खाती है। आर्थिक दृष्टिकोण से देखा जाये तो किसान के लिये गाय एक मशीन सरीखी है जो कि चारे को दूध एवं गोबर में परिवर्तित करती है। अतः हमें देखना यह होगा कि एक क्विंटल चारे से हाल्सटीन कितना दूध देती है और देसी कितना।

हाल में केरल के वायनाड जिले का दौरा करने का अवसर प्राप्त हुआ। वहाँ के डिप्टी डाइरेक्टर, एनिमल हस्बैंडरी ने बताया कि होल्सटीन गाय एक दिन में ७ किलो सूखी घास खाती है और १५ लीटर दूध देती है। देसी गाय ३.५ किलो सूखी घास खाती है और ७ किलो दूध देती हैं। यानी हाल्सटीन की तुलना में देसी गाय आधा खाती है और आधा दूध देती है। यूँ समझिये कि एक किसान यदि एक हाल्सटीन के स्थान पर दो देसी गाय रखे तो बात बराबर हो जायेगी। दो देसी गाय मिलकर ७ किलो चारा खायेंगी और १४ किलो दूध देंगी। एक हाल्सटीन ७ किलो खाकर १५ किलो दूध देती है। बात बराबर। अर्थात् यदि किसान के पास ७ किलो चारा है तो उसे वही १४-१५ लीटर दूध मिलेगा चाहे वह एक हाल्सटीन रखे या फिर दो देसी गाय। तो फिर हाल्सटीन से लाभ क्या हुआ?

वास्तव में हाल्टसटीन से तो किसान को नुकसान ही होता है। मैंने पहले ही कहा इसके नाज नखरे भी उठाने पड़ते हैं। वह मात्र घास से संतुष्ट नहीं होती। एक दुधारू हाल्सटीन को प्रतिदिन ८ किलो कैन्सन्ट्रेट देना पड़ता है। इसपर लगभग ५० रुपये का खर्च बैठता है। इसका रखरखाव भी महँगा है। हाल्सटीन बीमार भी अधिक पड़ती है। उसे पक्का मकान भी चाहिये। प्रतिदिन फिनाइल से सफाई होनी चाहिए। लाल दवा से हाथ धोकर ही उसका दूध निकालना चाहिये। बताया गया कि एक हाल्सटीन के बीमार होने की सम्भावना ४० प्रतिशत है जबकि देसी का मात्र १० प्रतिशत। यदि इन सब खर्चों को जोड़ा जाये तो हाल्सटीन गाय देसी गाय के सामने महँगी पड़ती है। बेचारी देसी न तो पक्का मकान मांगती है, न लाल दवा और न ही कैन्सन्ट्रेट। वह यहां की जलवायु को आत्मसात करती है और बीमार भी नहीं पड़ती। यदि एक क्विंटल चारा हो तो दो देसी मिलकर दूध भी हाल्सटीन के बराबर देती है। सूखे समय में चारा भी नहीं मांगती। सड़क के किनारे उगी घास से ही पेट भर लेती है। फिर भी बदनाम है। देसी में इतने गुण होने के बाद भी उसे खरीदने के लिये बैंक ऋण नहीं देते हैं। दूसरी ओर हाल्सटीन का बोलबाला है। आखिर क्यों? केवल एक गुण है। अधिक खाती है, अधिक दूध देती है। यानी यदि १५० लीटर प्रतिदिन की डेरी चलानी हो तो १० हाल्सटीन से काम चल जायेगा, जबकि २० देसी गाय रखनी होगी।

हो सकता है कि इनकी देखरेख में समय अधिक लगे। वायनाड के एक किसान श्री बेबी के अनुसार तो एक हाल्सटीन और दो देसी की देखरेख करने में समय भी बराबर लगता है। कारण यह कि जहाँ दो देसी को हांकना बांधना पड़ता है, वहाँ न तो फिनायल से सफाई करनी पड़ती है और न ही कैन्सन्ट्रेट तैयार करना पड़ता है। हाल्सटीन के लिये यहाँ के परिवेश में यह सब अलग से करना होता है। अतः यह भी स्पष्ट नहीं है कि किसान का समय बचता है या नहीं? हाँ पश्चिमी देशों की परिस्थिति में



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शायद हाल्सटीन ही ज्यादा उपयुक्त हो। वहाँ घास काटना, कैन्सन्ट्रेट तैयार करना, दूध निकालना इत्यादि सामान्य तौर पर मशीनों द्वारा होता है। अतः वहां १०० हाल्सटीन में लागत कम आयेगी। हमारी परिस्थितियों में तो देसी गाय ही ज्यादा उपयुक्त लगती है। उनके रख-रखाव की लागत कम आयेगी। सम्भवतः यही कारण है कि राजस्थान के एक किसान ने बताया कि गौमाता की पूजा तो वे देसी गाय की ही करते हैं। हाल्सटीन गाय को 'माता' की सूची में नहीं शामिल करते।

दुर्भाग्य है कि हमारे वैज्ञानिक और सरकार इन साधारण सी बातों को समझने को तैयार नहीं। इसके परिणाम दीर्घगामी हैं। सबसे अधिक नुकसान तो इस बात का हो रहा है कि देश में देसी अच्छी नस्लें लुप्त होती जा रही हैं। उदाहरणतः केरल में एक देसी गाय की नस्ल थी 'वेच्युर'। यह गाय एक बड़ी बकरी सरीखी थी। मात्र ३-१/२ फुट ऊँची। लेकिन यह प्रजाति बड़ी गुणी थी। एक देसी गाय की तुलना में दूध अधिक देती थी। एक देसी गाय दिन में ३.५ किलो सूखी घास खाकर ७ किलो दूध देती है यानी एक किलो घास में २ किलो दूध। एक वेच्युर २ किलो घास खाकर ५ किलो दूध देती है। यानी १ किलो घास में २$\frac{१}{२}$ किलो दूध। लेकिन सरकार तथा बैंकों द्वारा प्रोत्साहन न दिये जाने के कारण आज वेच्युर लगभग लुप्त हो गयी है।

> हमने अपने सही रास्ते को बिना वजह छोड़ दिया और गिर पड़े गड्ढे में। हमें गिराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है रिजर्व बैंक जो कि किसानों को विदेशी नस्लें खरीदने पर मजबूर कर रहा है।

केरल के किसान इस बात को थोड़ा बहुत समझ भी रहे हैं। दबी जुबान से किसानों ने बताया कि वे अब अपनी हाल्सटीन गायों को देसी सांड़ से गाभिन करा रहे हैं। जिससे बछड़े, बछियों में देसी गुण बढ़ जायें। इसे वे 'बैंक क्रास-ब्रीडिंग' कहते हैं। परन्तु सरकारी तन्त्र और बैंक की ऋण-नीति उन्हें हिलाये रखती है। एक तरफ उनका अनुभव है कि देसी गाय अच्छी है तो दूसरी तरफ सरकार देसी गाय का निरन्तर तिरस्कार कर रही है। इस असमंजस में वे अक्सर सरकारी प्रचार में बह जाते हैं, और लाभप्रद देसी को छोड़कर नुकसानदेह हाल्सटीन ले आते हैं और बेवकूफ बन जाते हैं। इसका लाभ मिलता है सिर्फ उन डाक्टरों, दवाई कम्पनियों तथा वैज्ञानिकों को जो अपनी रोजी के लिये इस प्रचार को निरन्तर बढ़ाते जा रहे हैं।

लगभग ऐसी ही परिस्थिति बकरियों की है। राजस्थान के डूंगरपुर जिले के बंजारे अजमल सिंह ने बताया कि एक देसी बकरी दिन में ६ पूले घास खाती है और उसका टेटा (नर बच्चा) १००० रुपये में बिकता है। उन्नत नस्ल की सिरोही बकरी १२ पूले घास और ५०० ग्राम दाना खाती है और उसका टेटा २०००-२५०० रुपये में बिकता है। बात तो वहीं की वहीं रही। दाने के खर्च को जोड़ा जाये तो देशी ही लाभकारी सिद्ध होती है। दो देसी बकरी एक दिन में १२ पूले घास और ३०० ग्राम दाना खायेंगी और १००० रुपये के दो टेटे यानी २००० रुपये का लाभ देंगी। एक सिरोही भी १२ पूले घास खायेगी और २०००-२५०० रुपये का एक ही टेटा देगी परन्तु वह खायेगी ५०० ग्राम दाना। यानी किसान के २०० ग्राम अतिरिक्त दाने के बदले यदि मिला तो ५०० रुपये का अतिरिक्त लाभ। इसे लाभ नहीं कहा जा सकता। ऐसा प्रतीत होता है कि सिरोही नस्ल ज्यादा दिन नहीं टिकेगी। मान लीजिये गांव के चारागाह में घास कम उग रही है। वर्षा कम हुई है। एक बकरी दिन भर में मुश्किल से ७-८ पूले के बराबर घास चर पाती है। ऐसी परिस्थिति में दो देसी बकरी तो मस्ती से जी सकती हैं, क्योंकि उनकी खुराक मात्र एक दिन में ६ पूले घास की है। बंजर में भी वे अपना पेट भर लेंगी। परन्तु सिरोही की हालत खस्ता हो जायेगी। उसकी खुराक एक दिन में १२ पूले की है। यदि बंजर में वह केवल ७ पूले के बराबर ही चर पाती है तो वह कमजोर पड़ती जायेगी। अतः आने वाले समय में सम्भवतः उन्नत किस्में चल नहीं पायेंगी। विचित्र परिस्थिति है। हम सदियों से देसी गाय-बकरी को पालते चले आ रहे थे, वे थोड़ा खाती और थोड़ा दूध देती थीं। विदेशी नस्लों ने हमें चकाचौंध कर दिया। हमने पाया कि वे दुगना लाभ देती हैं। बिना उनकी खुराक और रख-रखाव देखे समझे हम बह गये सरकारी प्रचार में। हमने अपने सही रास्ते को बिला-वजह छोड़ दिया और गिर पड़े गड्ढे में। हमें गिराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है रिजर्व बैंक जो कि किसानों को विदेशी नस्लें खरीदने पर मजबूर कर रहा है। हमारे वैज्ञानिक भाईयों और बैंक अधिकारियों से निवेदन है कि धरातल पर उतर कर किसान की परिस्थितियों को समझें। हो सकता है कि देश के अन्य भागों में परिस्थितियाँ भिन्न हों।

विशेषकर हरियाणा, पंजाब के लिये शायद हाल्सटीन उपयुक्त हो। अन्य स्थानों पर भौगोलिक एवं आर्थिक स्थिति माफिक न पड़ती हो। इन सबको अनदेखा करके केवल विदेशी वैज्ञानिकों के प्रचार में बह जाना गलत होगा। साथ ही किसान भाइयों से निवेदन है कि वे अपने अनुभव पर अधिक भरोसा रखें। सरकारी मृग-मरीचिका में न बहें।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

### बापू ने कहा था—

# गोहत्या और नर हत्या में कोई अंतर नहीं है

—कैलाश वाजपेयी

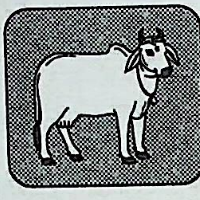

आज गोपाष्टमी है। गउओं और बैलों को सजाने का दिन है। पर साथ ही साथ गोधन के साथ हमारे दुर्व्यवहार के स्मरण का भी दिन है। इस्राइल में एक दीवार है जिसका नाम है—बिलखती दीवार। यहाँ आकर यहूदी लोग अपने ऊपर हुए अत्याचारों के लिए विलाप करते हैं। इसी के समानान्तर अब जर्मनी के एक गिरजाघर की बाहरी दीवार पर भी तरह-तरह के पोस्टर हर दिन उखाड़े-लगाए जाते हैं। इन पोस्टरों पर प्रतिरोध की भाषा में तरह-तरह के वाक्य लिखे रहते हैं। ये वाक्य शोषण, अन्याय, हत्या और दुनिया भर में छाई तबाही की कहानी कहते हैं जिनमें पशु-हत्या से लेकर तेजाबी वर्षा तक के प्रति सरोकार व्यक्त किया गया होता है। इसी शोक संतप्त दीवार पर इन गर्मियों में एक घायल पशु का रेखाचित्र कुछ इस तरह बनाया गया था कि वह पृथ्वी की आकृति से मिलता-जुलता था और नीचे लिखा था—हमारी घायल पृथ्वी माता—अवर उन्डेड प्लैनेट। हमारे पुराणों में पृथ्वी की आकृति गोरूप में ही वर्णित हुई है। पश्चिम में इन दिनों सबसे अधिक चिन्ता पृथ्वी को लेकर है जो ह्रासमान पर्यावरण के कारण जल्दी ही न रहने योग्य हो जायेगी।

> जितनी नृशंसता के साथ पशु हमारे देश में कटते हैं, उसका अन्दाज तो सिर्फ ईदगाह के निकट जाकर ही लगाया जा सकता है। कातिल और व्यापारी पशुओं को भर-भर कर अधमरी स्थिति में यहाँ लाते हैं और इतनी रोगोत्पादक परिस्थितियों में उन्हें इस तरह तड़पाकर मारते हैं कि कुम्भीपाक नरक का वर्णन फीका पड़ जाता है। हत्याघर की क्षमता से तीन गुना अधिक पशु यहाँ काटते हैं जिनमें से अधिकांश रुग्ण होते हैं। यह मांस पाँच सितारा होटल में परोसा जाता है।

घायल पशुनुमा (गो) पृथ्वी का यह रेखाचित्र ही हमें सहजत: उस मिथक का स्मरण दिलाता है जिसमें दु:ख से दबी पृथ्वी, सृष्टा के पास जाकर अपनी व्यथा-कथा कहती है। भविष्यवादियों का कहना है, हम विपर्यास से घिर चुके हैं। प्रकृति में उद्‌भव और पराभव का जो क्रम था, उसमें व्यतिक्रम पैदा हो गया है। हम सभी ने मिलकर यह व्यतिक्रम पैदा किया है। हम यह भूल गए हैं कि हम दिक् यात्री हैं, हम सब एक बहुत बड़े यान पर सवार हैं और हमारे इस यान का नाम पृथ्वी है। हम इतने मूढ़ हैं कि जिस यान पर सवार हैं, उसी में कील ठोंक रहे हैं।

शुद्ध दृग्विषयक दृष्टि से हमें अभी इसी वक्त यह समझ लेना चाहिए कि हम पृथ्वी पर विचरते, सबसे अधिक क्रूर और स्वार्थी प्राणी हैं। हमारी देह का तापमान सिरकादियन स्पन्दन के अनुरूप घटता-बढ़ता है। हमें अँधेरे से डर लगता है। हम अनजाने ही सूर्य के आने की प्रतीक्षा करते हैं। हम अनिवार्यत: भोगी हैं। प्रकृति अगर हमें मारपीट कर सुला न देती होती तो हमने पृथ्वी के शेष जीव भी खा डाले होते। अभी भी हमारे मद के प्रताप से सत्रहजीववंश हर दिन समाप्त हो जाते हैं। तानजानिया स्थित जीव-शोध-संस्थान के विशेषज्ञ मार्टिन डेल के अनुसार, एमिनो एसिड की गणना के बाद पता चलता है कि घोड़े और हममें बावन असमानताएँ हैं जबकि बानर और हममें मात्र दो असमानताएँ हैं, बहुत विकसित होने पर हमारा स्वभाव जब सरलतम हो चुका होता है, तब हम गो के सबसे अधिक निकट होते हैं मगर हमारी निरन्तर विकासमान सभ्यता और आहारवृत्ति ने हमें सबसे अधिक जानवर बना दिया है। हम पूरी पृथ्वी पर पनपती जीव श्रृंखला के, बुरी तरह प्रसिद्ध, हत्यारे हैं और हममें यह बर्बरता गलत खानपान और जीवन विरोधी अनुसन्धान के कारण आई है। हमारे दाँत और



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हमारी आँतों की लम्बाई से स्वत:प्रमाणित है कि हमें प्रकृति ने जानवर खाने के लिए नहीं बनाया था। हमारी रचना मांसाहार के लिये नहीं हुई थी। मगर विकसित राष्ट्रों को सम्भवत: यह तर्क स्वीकार्य नहीं होगा। जीवन का सबसे बड़ा विरोधी है अमेरिका। पृथ्वी विरोधी, यह अमेरिका प्रतिवर्ष कई अरब टन धुआँ, करोड़ों टूटी कारों, टनों रद्दी और साढ़े तीन सौ अरब गैलन कारखानों का मलबा पैदा करता है। कम लोगों को ज्ञात है कि वाशिंगटन से अस्सी किलोमीटर दूर अमेरिका की एक रसायनशाला है। इस प्रयोगशाला में अमेरिका ने ऐसे-ऐसे द्रव्य बनाए हैं, जो स्वभाव में एक बेढब वैपरीत्य पैदा करते हैं। इनमें 'ऐंजेल ड्रग' खाकर बिल्ली चूहे से लाड़ लड़ाने लग जाती है। 'बी जेड' ड्रग के प्रभाव से स्मृति में व्यतिरेक पैदा हो जाता है। ध्यान अतीत की किसी एक ही घटना पर अटक कर रह जाता है। सबसे दुखद बात यह है कि इनमें से कई रसायनों का प्रयोग अमेरिका ने, बिना बताए पशु और मनुष्यों पर किया जिसके कारण लोगों को भक्ष्य अभक्ष्य स्व और पर का भेद ज्ञान ही नहीं विसरा, अपना नाम और पता भी बिसर गया। इस रासायनिक प्रयोग की प्रतिक्रिया भी शोकाकुल दीवार (वैलिंग वाल) पर टंगे एक पोस्टर पर प्रतिध्वनित हुई जिनमें वधिक का चेहरा पशु और वध को जाती गाय का चेहरा सदय, सात्विक व्यक्ति जैसा दिखाया गया था।

जितनी नृशंसता के साथ पशु, हमारे देश में कटते हैं, उसका अन्दाज तो सिर्फ ईदगाह के निकट जाकर ही लगाया जा सकता है। कातिल और व्यापारी पशुओं को भर-भर कर अधमरी स्थिति में यहाँ लाते हैं और इतनी रोगोत्पादक परिस्थितियों में उन्हें इस तरह तड़पाकर मारते हैं कि कुम्भीपाक नरक का वर्णन फीका पड़ जाता है। हत्याघर की क्षमता से तीन गुणा अधिक पशु यहाँ कटते हैं जिनमें से अधिकांश रुग्ण होते हैं। यही मांस पाँच सितारा होटलों में परोसा जाता है।

पिछले दिनों ब्रितानी मुनाफाखोर कातिलों ने एक नयी तरकीब की और वह यह कि जो गाएँ मर जातीं या दूध देने में अक्षम हो जाती हैं, उन्हें समूचा पीसकर, दूसरी गायों के भोजन में एक रसायन के साथ मिलाकर खिला दिया। यह सोचकर कि मृत और अक्षम गायों का प्रोटीन युक्त मांस दूसरी गायों का दूध बढ़ा देगा, उन्हें और अधिक पुष्ट भी कर देगा। मुनाफाखोर व्यापारी अथवा फिर उद्योगपति के शैतानी दिमाग की माया, गायों ने यह नये तरह का भोजन, रसायन की मदद से खूब खाया। शाकाहारी गाय को मांसाहारी बना दिया उद्योगपति ने। सूचना के लिए हम बता दें कि पूरे पश्चिम में गाय, बैल, सुअर, भेड़, बकरी, खरगोश, हिरन और मुर्गियाँ सभी को फसल की तरह उगाया जाता है। फिर जल्दी से जल्दी फसल की ही तरह काट दिया जाता है।

गाय को मांसाहारी बनाने के परिणाम कुछ समय बाद सामने आए। गायें पागल होने लगीं। योरोप में एक नया रोग फैला 'मैड काउ डिजीज' यानी पागल गो-रोग। अब चूँकि गायों में यह रोग फैला तो जाहिर है गाय खाने वालों में भी फैला। क्योंकि आप जो खाते हैं, कालान्तर में वह आपके ही चयापचय को प्रभावित करता है। 'पागल-गो-रोग' की समस्या से ब्रिटेन अभी भी जूझ रहा है। सब 'ब्रिटिश बीफ' खरीदने से कतराने लगे हैं। विस्तार भय से हम यहाँ 'पागल गो-रोग' के लक्षण नहीं लिख रहे हैं। बूचड़खाने की ओर ले जाए जाने वाले हर पशु को यह आभास हो जाता है कि उसके साथ क्या घटित होने जा रहा है। क्रोध और विवशता के परिणामस्वरूप उसके शरीर की ग्रंथियाँ 'एसीटोन' नामक एक तरह का तेजाब छोड़ती हैं, जिस समय उसे मारा जा रहा होता है उस समय वह लगभग बावला हो गया होता है। यही मांस जब बाजार में बिकने आता है, तब जहरीला हो गया होता है। 'मांसाहार-सौ तथ्य' के लेखक नेमिचन्द्र जैन के अनुसार ऐसा मांस खाने वाले मनुष्यों में ऐंठन, तनाव, सन्निपात, मिर्गी एवं आकस्मिक मृत्यु जैसे अनेक रोग घर कर लेते हैं।

बूचड़खाने की ओर जाए जाने वाले हर पशु को यह आभास हो जाता है कि उसके साथ क्या घटित होने जा रहा है। क्रोध और विवशता के परिणामस्वरूप उसके शरीर की ग्रंथियाँ 'एसीटोन' नामक एक तरह का तेजाब छोड़ती हैं, जिस समय उसे मारा जा रहा होता है उस समय वह लगभग बावला हो गया होता है। यही मांस जब बाजार में बिकने आता है, तब जहरीला हो गया होता है। 'मांसाहार-सौ तथ्य' के लेखक नेमिचन्द्र जैन के अनुसार ऐसा मांस खाने वाले मनुष्यों में ऐंठन, तनाव, सन्निपात, मिर्गी एवं आकस्मिक मृत्यु जैसे अनेक रोग घर कर लेते हैं।

इस समय दिल्ली में लाखों लोग मधुमेह के शिकार हैं। मिनिसोट्टा यूनिवर्सिटी के महामारी विज्ञान विशेषज्ञ डॉ० डेविड स्नोडौन का कथन है कि मांसाहार की अनुपस्थिति ने हमारे निष्कर्षों को अधिक पुष्ट किया है। २५०० लोगों पर २१ वर्षों तक किए गए अध्ययन से पता चलता है कि न केवल मधुमेह बल्कि गठिया, मूत्राम्ल और कई अन्य रोगों का उत्स, मांसाहार में छिपा



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है। अमेरिका में प्रतिवर्ष सत्ताइस करोड़ पचास लाख रोगी डॉक्टरों की शरण में जाते हैं, जिनमें से हर ग्यारह में से एक उच्च रक्तचाप से पीड़ित होता है। कारण सिर्फ मांसाहार है। एक औसत अमेरिकी प्रतिवर्ष करीब १२० किलो मांस खाता है, जिसे प्राप्त करने के लिए लगभग एक टन अनाज खर्च होता है। यदि वह सीधे १२० किलो अन्न खाए तो इतने अनाज से वर्ष में आठ व्यक्तियों का काम चल सकता है। प्रोफेसर जार्ज वर्गस्ट्रॉम के अनुसार सिर्फ अमेरिका में पशु जगत जितने वनस्पति-खाद्य का उपभोग करता है, उतने से विश्व की आधी आबादी का पेट भरा जा सकता है।

स्टेट यूनीवर्सिटी ऑफ न्यूयार्क में की गयी खोज से पता चलता है कि अमेरिका में ४७००० से भी अधिक ऐसे बच्चे पैदा होते हैं, जिन्हें माता-पिता के मांसाहारी होने के कारण कई बीमारियाँ जन्म से ही लगी होती हैं।

एक कीट होता है ब्रेनबग। कई मांसाहारियों के शरीर में पहुँचकर इस कीट को अपना प्रभाव दिखाने में दस वर्ष लग जाते हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की बुलेटिन संख्या ६३७ के अनुसार मनुष्य के शरीर में लगभग १६० बीमारियाँ सिर्फ मांस खाने से प्रविष्ट होती हैं। जर्मनी के 'ग्रीन ग्रुप' के एक विशेषज्ञ का कहना है कि पृथ्वी पर प्रदूषण एवं पर्यावरण के अस्वच्छ होते चले जाने के पीछे एक कारण यह भी है कि पिछली दशाब्दियों में लोग तेजी के साथ मांसाहारी हुए हैं।

पहले कभी पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा था, 'धर्म के नाम पर पशुबलि बर्बरता है'। हमारा कहना है धर्म के ही नाम पर क्यों, सुरुचि के नाम पर भी, परिष्कृत अभिरुचिवाला किसी दूसरे का गोश्त खा कैसे सकता है। अपने को सस्पन्द कहने वाले कमजोरों के पक्षधर कवियों, लेखकों, चित्रकारों और बुद्धिजीवियों की शोषण के खिलाफ पहली आवाज यह होनी चाहिए कि सरकारों को यह आज्ञा किसने दी कि हर शहर में हत्याघर खोले जाएँ और बजाए इसके कि पशुओं के लिए चरी भूमि आरक्षित हो, उनकी आँखें फोड़कर उनके पाँव और पसलियाँ तोड़कर उन्हें कूड़े की तरह ठेले में ठसाठस भरकर बूचड़खाने लाया जाए और फिर घोर पिछड़े तौर तरीकों से उनका वध किया जाए।

सन् १९५९ में फोर्ड फाउंडेशन ने इस देश की खाद्य समस्या का निवारण करने के लिए एक सुझाव यह दिया था कि जितने अधिक से अधिक पशु खत्म किए जा सकते हों, कर दिए जाएँ। मगर भारत में पन्द्रह वर्ष रहकर यहाँ की परिस्थितियों का अध्ययन कर जर्मनी के जुगनर लेन्स ने इस सुझाव को आत्मघाती बताया। सन् १९८७ में पशुधन विशेषज्ञ डॉ० पी०एन०भट्ट ने एक बहुत महत्वपूर्ण बात कही थी। 'कृषि का अधिकतर कार्य बैलों से होता है। इनसे मिलने वाली ऊर्जा ४०,००० मेगावाट के बराबर है। इनसे देश को २७००० करोड़ रुपयों का लाभ होता है। इनमें देश की ४० खरब संपत्ति लगी हुई है। इस सबके बावजूद पूरे देश में २८०० प्रमाणित कत्लगाह हैं। बंबई के पास देनार में एशिया का सबसे बड़ा और दुनिया का नंबर दो का हत्याघर है।' शायद इसी विसंगति से तिलमिलाकर तीन वर्ष पूर्व आयोजित पशु संरक्षण गोष्ठी में न्यायमूर्ति कृष्ण अय्यर ने कहा था :

'मैं यह बता देना चाहता हूँ कि पशुओं का जीने का अधिकार उनका जन्मसिद्ध अधिकार है। अविच्छिन्न और प्राकृतिक अधिकार है और इस दृष्टि से पशुओं तथा मनुष्यों के बीच का भेदभाव मनुष्य द्वारा भगवान, अल्लाह, ईश्वर और सभी धर्मों के संतों के आदेशों के विरुद्ध उनके शोषण के लिए किया गया है।' याद रहे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कहा था :

'मेरी राय में गोहत्या तथा नरहत्या एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।'

## स्वप्न में गो दर्शन का फल

स्वप्न में गौ अथवा साँड़ के दर्शन से कल्याण-लाभ एवं व्याधि-नाश होता है। इसी प्रकार स्वप्न में गौ के थन को चूसना भी श्रेष्ठ माना गया है। स्वप्न में गौ का घर में ब्याना, बैल अथवा साँड़ की सवारी करना, तलाब के बीच में घृत-मिश्रित खीर का भोजन भी उत्तम माना गया है। इनमें से घीसहित खीर का भोजन तो राज्य-प्राप्ति का सूचक माना गया है। इसी प्रकार स्वप्न में ताजे दुहे हुए फेनसहित दुग्ध का पान करने वाले को अनेक भोगों की तथा दही के देखने से प्रसन्नता की प्राप्ति होती है। जो बैल अथवा साँड़ से युक्त रथ पर स्वप्न में अकेला सवार होता है और उसी अवस्था में जाग जाता है, उसे शीघ्र धन मिलता है। स्वप्न में दही मिलने से धन की, घी मिलने से यश की और दही खाने से यश की प्राप्ति निश्चित है। इसी प्रकार यात्रा आरम्भ करते समय दही और दूध का दीखना शुभ शकुन माना गया है। स्वप्न में दही-भात का भोजन करने से कार्य, गौ का दर्शन करने से कुटुम्ब की वृद्धि होती है। स्वप्न में सभी काली वस्तुओं का दर्शन निन्द्य माना गया है, केवल कृष्णा गौ का दर्शन शुभ होता है।

(पं० श्री राजेश्वर जी शास्त्री सिद्धान्ती)



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# सर्वाधिक उपयोगी प्राणी —'गाय'

—राधेश्याम खेमका

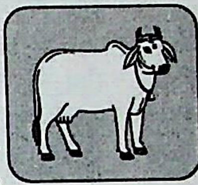

इस संसार में गौ एक अद्भुत प्राणी है, जो वास्तव में सबके लिये महनीय, अमूल्य और कल्याणप्रद है। भारतीय संस्कृति में मानव-जीवन प्राप्त करने का परम उद्देश्य है—अपना कल्याण करना अर्थात् अक्षय सुख की प्राप्ति। इसके लिए अपने शास्त्रों में 'गो-सेवा' से सरल कोई दूसरा साधन नहीं। शुक्ल यजुर्वेद में एक प्रश्न किया गया—'**कस्य मात्रा न विद्यते**'—'किसका परिमाण (उपमा) नहीं है।' (२३।४७)। इसका उत्तर भी दिया गया है—'**गोस्तु मात्रा न विद्यते**'—'गौ का परिमाण (उपमा) नहीं है।'(२३।४८)

गौ और पृथ्वी—ये दोनों गौ के ही स्वरूप (पयार्य) हैं। गौ और पृथ्वी—इन दोनों में अभिन्नता है। ये दोनों ही परस्पर एक दूसरे की सहायिका और सहचरी हैं। मृत्यु लोक की आधारशक्ति 'पृथ्वी' और देवलोक की आधारशक्ति 'गौ' है। पृथ्वी को भूलोक और 'गौ' को गोलोक कहते हैं। भूलोक—अधोलोक (नीचे)—में है और गोलोक—ऊर्ध्वलोक (ऊपर)—में है। यह उत्युत्तम श्रेष्ठ लोक है। जन्म-जन्मान्तर की परम साधना के उपरान्त मानव-जीवन के लक्ष्य को पूर्ण कर लेने वाले प्राणियों को गोलोक की प्राप्ति होती है, जहाँ पहुँचकर प्राणी इस मृत्युलोक में वापस नहीं लौटता, इसी का नाम है जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त होना अथवा स्वयं का कल्याण करना। इस गोलोक में ही गौओं का निवास है।

एक बार देवराज इन्द्र ने ब्रह्माजी से यह प्रश्न किया कि गौएँ देवता और लोकपालोंके लोकों से भी अति उच्चतम गोलोक में क्यों रहती हैं? ब्रह्माजी ने इसका उत्तर देते हुए कहा—'गौओं को यज्ञ का अङ्ग और साक्षात् यज्ञ ही कहा गया है। इनके बिना किसी प्रकार भी यज्ञ नहीं हो सकता। ये अपने दूध और घी से प्रजा का धारण-पोषण करती हैं और इनके पुत्र बैल खेती के काम में आते हैं तथा विविध प्रकार के अन्न एवं बीज पैदा करते हैं। उनसे यज्ञ होते हैं और हव्य-काव्य का कार्य सम्पादान होता है। इन्हीं से दूध, दही और घी मिलता है। ये गौएँ बड़ी ही पवित्र होती हैं और बैल बेचारे भूख-प्यास का कष्ट सहकर भी भाँति-भाँति का बोझ ढोते रहते हैं। इस प्रकार गौएँ अपने कर्म से प्रजाओं का और मुनियों का धारण-पोषण करती रहती हैं। इनके व्यवहार में शठता, कपटता नहीं होती, ये सदा पवित्र कर्म में लगी रहती हैं। इसी से देवराज! ये गौएँ हम सब लोगों के ऊपर (गोलोक में) निवास करती हैं। (महा० अ० ८३।१७-२२)

अभ्युदय और निःश्रेयसकी प्राप्ति के लिये यज्ञ की आवश्यकता है। यज्ञ-दान-तप-रूप कर्म को भगवान् ने अवश्य-कर्तव्य—अनिवार्य बतलाया है। '**यज्ञदानतपः कर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत्।**' यज्ञ की पूर्णाहुति के लिये हवि की आवश्यकता होती है और हवि की प्रदाता गोमाता ही हैं, इसीलिए हमारे शास्त्रों में गौको '**हविर्दुघा**' (हवि देने वाली) कहा गया है। गोघृत देवताओं का परम प्रिय हवि है और यज्ञ के लिये भूमि को जोतकर तैयार करने एवं गेहूँ, चावल, जौ, तिल आदि हविष्यान्न पैदा करने के लिये गोसंतति—बैलों की परम आवश्यकता है। यही नहीं यज्ञभूमि को परिष्कृत एवं शुद्ध करने के लिये उसे गोमूत्र से छिड़का जाता है और गोबर से लीपा जाता है। यज्ञानुष्ठान के पूर्व प्रत्येक यज्ञाग्नि को प्रज्वलित किया जाता है। यज्ञानुष्ठान के पूर्व प्रत्येक यजमान को देहशुद्धि के लिये पञ्चगव्य का प्राशन करना होता है और यह गाय के दूध, दही, गोघृत, गोमूत्र और गाय के ही गोबर से तैयार किया जाता है। इसीलिए इसे 'पञ्चगव्य' कहते हैं। इसके अतिरिक्त गोदुग्ध में पकाये हुए चावल (खीर)—को 'परमान्न' (सर्वश्रेष्ठ भोजन) कहा गया है और गोघृत को 'सर्वश्रेष्ठ रसायन' माना गया है—'**आयुर्वै घृतम्।**' इस प्रकार गोघृत आदि गोमय पदार्थ आरोग्यप्रद, तेजःप्रद, आयुवर्धक और बलवर्धक माने जाते हैं। अतः मनुष्यों और देवताओं—दोनों की तृप्ति के लिये गौ की सर्वोपरि आवश्यकता है।

कहते हैं कि इस मनुष्यलोक में जीवों के कल्याण के लिये



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ही गौ-जैसी पवित्र और मङ्गलमय प्राणी का प्रादुर्भाव हुआ।

शास्त्रों में गौ को सर्वदेवमयी और सर्वतीर्थमयी कहा गया है। अत: गो के दर्शन से समस्त देवताओं के दर्शन तथा समस्त तीर्थों की यात्रा करने का पुण्य प्राप्त होता है। जहाँ गौ का निवास होता है, वहाँ सर्वदा सुख-शान्ति का पूर्ण साम्राज्य उपस्थित रहता है। गोदर्शन, गोस्पर्श, गोपूजन, गोस्मरण, गोगुणानुकीर्तन और गोदान करने से मनुष्य सर्वविध पापों से मुक्त होकर अक्षयलोक का भोग प्राप्त करता है। गौ की परिक्रमा करने से सम्पूर्ण पृथ्वी की परिक्रमा हो जाती है। इस प्रकार गौ भारतवासियों की परम आराध्या है। यह तो हुई हमारी आध्यात्मिक एवं आधिदैविक दृष्टि।

अधिकांश लोग आजकल भौतिक और स्थूलदृष्टि से गौ की आर्थिक उपयोगिता पर भी विचार करते हैं, इस दृष्टि से भी यदि विचार किया जाय तो गाय-जैसा उपयोगी प्राणी नहीं है। किसी भी प्रकार का गोवंश बूढा-अपंग, अनुत्पादक—लूला-लँगड़ा, अँधा—देश और गोपालक पर भारस्वरूप नहीं है। उसे अनुपयोगी कहना ठीक नहीं। स्थूल दृष्टि से भारत में गौ के तीन प्रकार के उपयोग हो सकते हैं—

(१) गाय के दूध का उपयोग,
(२) गोवंश के द्वारा कृषिकार्य तथा
(३) गोबर और गोमूत्र का उपयोग।

आहार के रूप में दूध का सर्वाधिक वैज्ञानिक महत्त्व सर्वत्र स्वीकार किया गया है। जिन उपादानों से शरीर का यन्त्र चालू रह सकता है वे सब दूध में पाये जाते हैं। बच्चों के भोजन के लिये दूध ही प्रकृति की पहली देन है।

भारतीय औषधिविज्ञान के सुप्रसिद्ध संस्थापक चरक ने अपने ग्रन्थ में लिखा है कि 'दूध सामान्य रूप से मनुष्य तथा समस्त चतुष्पद प्राणियों के स्वास्थ्य और विकास के लिये आवश्यक होता है। गाय का दूध सर्वश्रेष्ठ है, यह बच्चों को जीवन, जवानों को स्वास्थ्य तथा बूढ़ों को शक्ति प्रदान करता है।' इसी प्रकार ब्रिटिश मेडिकल रिसर्च कौंसिल ने घोषित किया है—'गाय का विशुद्ध और ताजा दूध सर्वापेक्षा हितकर और विश्वस्त पोषक तत्त्वों से भरा होता है और उसमें लाभदायक जीवाणु तथा दूसरे स्वास्थ्यप्रद उपादान होते हैं।'

गोवंश भारतीय कृषि-विकास की आधारशिला है, जिसका अति प्राचीन काल से महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। प्राचीन काल से बैलों का उपयोग कृषिभूमि को जोतकर तैयार करना, कुओं से पानी खींचना तथा परिवहन-सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति में होता रहा है। आजकल नये वैज्ञानिक अनुसंधान के अनुसार जमीन जोतने में ट्रैक्टरों का उपयोग किया जा रहा है, जिसे कारण भूमि की उर्वरा-शक्ति के क्षीण होने का खतरा उत्पन्न हो गया है। विश्वविख्यात वैज्ञानिक अलबर्ट आइनस्टाइन ने भारत को यह संदेश भेजा था—'भारत ट्रैक्टर के द्वारा यन्त्रीकृत खेती की पद्धति को न अपनाये, क्योंकि इनसे चार सौ वर्ष की खेती में ही अमेरिका के जमीन की उर्वरा शक्ति काफी हदतक समाप्त हो चली है, जबकि भारत का उपजाऊपन दस हजार वर्ष की खेती के बाद भी आज कायम है। अत: देश के किसानों को इस बात पर विशेष ध्यान देना चाहिए कि आने वाली पीढ़ी के लिये देश की भूमि की उर्वरा शक्ति समाप्त न हो, इसके लिये हमारी प्राचीन परम्परा पर आधारित खेती के कार्य में गोवंश का ही अधिकाधिक उपयोग होना चाहिए।'

प्राचीनकाल से गोबर और गोमूत्र का अन्य उपयोगों के साथ-साथ धरती को उर्वरा-शक्ति प्रदान करने के लिए खाद के रूप में मुख्य उपयोग किया जाता रहा है, परन्तु आजकल यान्त्रिक खेती के साथ-साथ रासायनिक खाद और कीटनाशक जहरीली औषधियों का उपयोग अत्यधिक रूप से किया जा रहा है। जिससे स्वास्थ्य पर तो असर पड़ ही रहा है, साथ-साथ भूमि की उर्वरा-शक्ति भी कमजोर होती जा रही है। रासायनिक खाद धरती का प्राकृतिक आहार नहीं है, इससे शुरू में तो उत्पादन बढ़ता है, पर बाद में उत्पादन घटता ही जाता है। कुछ समय बाद धरती पूर्ण बंजर हो जाती है। गोबर की खाद धरती का प्राकृतिक आहार है। इससे धरती की उर्वरा-शक्ति बनी रहती है। गोबर से गैस मुफ्त में प्राप्त होती है, इसकी जानकारी जनसाधारण को हो चुकी है। गैस का उपयोग ईंधनऔर रोशनी के लिये किया जाता है। गाँवों में यदि गोबर-गैस के संयन्त्र लगा दिये जायँ तो ग्रामीण जनता को ईंधन और रोशनी सुविधापूर्वक प्राप्त हो सकती है। गोबर की तरह गोमूत्र भी खेती के लिए बहुत उपयोगी होता है, उसमें धरती को बिना किसी प्रकार हानि पहुँचाये कीटाणुनाशक शक्ति होती है। गोमूत्र का उपयोग मानव की कई बीमारियों में औषधियों के रूप में और पेट में कृमिनासक के रूप में किया जाता है।

गोबर और गोमूत्र समुचित उपयोग करने से जो आय होती है, उससे गाय-बैल के भरण-पोषणका खर्च निकालने के पश्चात् भी बचत ही रहेगी। ऐसी स्थिति में गाय का दूध और कृषि आदि कार्यों में बैल का उपयोग एक प्रकार से बिना किसी खर्च के प्राप्त हो जाता है, जो गोपालकों की समृद्धि का कारण बन सकता है। इसमें एक बात और ध्यान देने की है कि यह सारी समृद्धि भारतीय नस्ल की गायों से ही प्राप्त होती है। आजकल दूध के लोभ में जर्सी आदि विदेशी गायों का पालन जोर से बढ़ रहा है। यहाँ तक कि भारतीय नस्ल की गायों को भी विदेशी साँड़ों से गर्भाधान कराकर वर्णसंकरी गायें उत्पन्न कर रहे हैं। साथ ही कृत्रिम गर्भाधान की प्रक्रिया भी अपनायी जाती है, जिसमें गायों की



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भारतीय नस्लें धीरे-धीरे नष्टप्राय हो रही हैं। यह अत्यन्त गम्भीर और विचारणीय विषय है। शास्त्रीय दृष्टि से विदेशी गायों में गाय के लक्षण घटित नहीं होते। उपयोग की दृष्टि से भी इनका आवास विशेष स्वास्थ्यप्रद नहीं है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि अच्छी नस्ल के देशी साँड़ तैयार किये जायँ, जिससे गायों की भारतीय नस्ल की संतति अधिकाधिक रूप में तैयार हो सके।

उपर्युक्त विवेचन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि गोवंश किसी भी स्थिति में अनुपयोगी है ही नहीं। अतः मांस का निर्यात करने के लिये गाय की हत्या करना कितनी बड़ी अज्ञानता है, यह कहा नहीं जा सकता।

भारतीय संस्कृति और अन्य देशों की संस्कृति में बहुत बड़ा अन्तर है। विदेशों में गाय की आर्थिक उपयोगिता के आधार पर सेवा-शुश्रूषा की जाती है। अनुपयोगी होने पर इसे मारने में वे हिचकते नहीं, जिसका अन्धानुकरण हमारे देश के कर्णधार भी आज धड़ल्ले से कर रहे हैं। यह स्वार्थपरायणता की पराकाष्ठा है। भारत में गौ के भौतिक उपयोग के साथ-साथ गाय का आध्यात्मिक महत्त्व भी है। हम अपनी सर्वोपरि श्रद्धा का केन्द्र माँ के रूप में गौ को सम्बोधित करते हैं और अपने शास्त्र तथा मान्यता के अनुसार लोग गौ माता को लोक-परलोक दोनों का जीवनसाथी समझते हैं। अतः गौ की हत्या या गौ का वध देशवासियों के लिये कभी-भी सह्य नहीं हो सकता। पर दुर्भाग्यवश आजतक यह जघन्य कार्य बंद नहीं हो सका। आशा है, भारत के शासकों को परमात्मा-प्रभु शीघ्र सद्बुद्धि प्रदान करेंगे, जिससे यह देश का कलंक मिट सके। इसके साथ ही गोरक्षण और गोसंवर्धन के लिये, जनता और सरकार के लिये कुछ आवश्यक कर्तव्य हैं, जिनका कार्यान्वयन यथाशीघ्र होना चाहिये। जिससे भारत की गोसम्पदा बचायी जा सके—

(१) सुदृढ़ केन्द्रीय कानून बनाकर गोवंश की हत्या तुरंत बंद की जाय तथा गोमांस का निर्यात करना तत्काल बंद किया जाय।

(२) विभिन्न प्रदेशों की सरकार गौ-पालन के लिये चारागाह के निमित्त गोपालन से सम्बन्धित संस्थाओं को अधिकाधिक भूमि प्रदान कर उनकी सुचारुरूप से व्यवस्था करे तथा चारागाह हेतु छोड़ी गयी जमीन को जो लोग अन्य उपयोग में लायें उन्हें कड़ाई से पुनः चरागाह के उपयोग में लाया जाय।

(३) विभिन्न स्थानों में पशु चिकित्सालय की स्थापना की जाय तथा पशु चिकित्सक तैयार किये जायें।

(४) अच्छी नस्ल के देशी साँड़ तैयार किये जायँ, जो विभिन्न स्थानों के गोसदन और गोशाला में रखे जायँ।

(५) विभिन्न स्थानों में ऐसे गोशाला और गोसदन होने चाहिए जो अपने क्षेत्र के बीमार और कमजोर गोवंश को भरती कर उनके पालन-पोषण की समुचित व्यवस्था करें।

(६) अच्छी नस्ल की देशी गायें तैयार की जायँ, जिनका गोपालन की इच्छुक जनता में वितरण किया जा सके।

(७) गोदुग्ध की गोशाला, गोसदनों के द्वारा अपने क्षेत्र में समुचित वितरण की व्यवस्था की जाय।

(८) कृषि आदि कार्यों में गोवंश का अधिकाधिक उपयोग किया जाय।

यदि उपर्युक्त बातों पर गोशाला, गोसदन, गोभक्त जनता और हमारी सरकार गम्भीरतापूर्वक ध्यान दे और इसे शीघ्र कार्यान्वित किया जाय तो हम आज भी पुनः अपनी समृद्धि को प्राप्त कर सकते हैं।

गाय की महिमा का वाणी के द्वारा वर्णन नहीं हो सकता। शास्त्रों में तो यहाँ तक कहा है कि गाय का स्पर्श कर लेने मात्र से ही वे मनुष्य के समस्त पापों को नष्ट कर देती है और यदि श्रद्धापूर्वक उसकी सेवा की जाय तो अपार सम्पत्ति प्रदान करती है। वे ही गायें दान दिये जाने पर सीधे स्वर्ग ले जाती हैं, ऐसी गौओं के समान संसार में और कोई भी धन नहीं है।

स्पृष्टाश्च गावः शमयन्ति पापं
संसेविताश्चोपनयन्ति वित्तम्।
ता एव दत्तास्त्रिदिवं नयन्ति
गोभिर्न तुल्यं घनमस्ति किंचित्॥

**

## बच्चे कैसे जीयेंगे !

''............गो रक्षा इस देश के नर-नारी, सबके लिये बड़ा भारी कर्त्तव्य है। दूध-घी पर ही भारतवासियों का जीवन निर्भर है। जब से गाय-बैल बड़ी निष्ठुरता से मारे जाने लगे हैं, तब से हमें चिन्ता हुई है कि हमारे बच्चे कैसे जीयेंगे।''

—लाला लाजपतराय



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

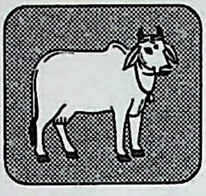

# महापुरुषों की दृष्टि में 'गोवध बंदी'

गोवंश की रक्षा में देश की रक्षा समायी हुई है। *—महामना मालवीय*

गोवंश की रक्षा ईश्वर की सारी मूक सृष्टि की रक्षा करना है। भारत की सुख-समृद्धि गौ के साथ जुड़ी हुई है। *—महात्मा गाँधी*

समस्त गोवंश की हत्या कानूनन बंद होनी चाहिए। *—गोप्राण स्वामी करपात्री जी महाराज*

गो का समस्त जीवन देश-हितार्थ समर्पित है। अत: भारत में गोवध नहीं होना चाहिये। *—गोधामवासिनी माता आनन्दमयी माँ*

मैं हिन्दू और मुसलमान से इस्तदुआ करता हूँ कि यह सबका फर्ज है कि इस हमारी माँ गाय की हिफाजत करें। खुदा बरकत करेगा। *—शेख खुद्दीन शाह*

यही आस पूरन करो तुम हमारी,<br>
मिटे कष्ट गौअन, छुटै केद भारी।

*—गोभक्त गुरुगोविन्दसिंह*

जैसे कोई अपनी माता पर किये गये अत्याचार को सहन नहीं करेगा, उसी प्रकार गोमाता की हत्या को सहन नहीं करेगा। *—गोलोकवासी श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका*

कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था का दारोमदार गोवंश पर निर्भर है। जो लोग यन्त्रीकृत 'फार्मो' के और तथाकथित वैज्ञानिक पद्धतियों के सपने देखते हैं, वे एक अवास्तविक संसार में रहते हैं। हमारे लिये गोहत्या-बंदी अनिवार्य है। *—जयप्रकाश नारायण*

भारत में गोवंश के प्रति करोड़ों लोगों में आस्था है, उसकी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिये। *—भू० पू० प्रधान मन्त्री लालबहादुर शास्त्री*

सम्पूर्ण गोवंश परम उपकारी है। सबका कर्त्तव्य है कि तन-मन-धन लगाकर गोहत्या पूर्णरूप से बंद करावें। *—गोप्रेमी सेठ जुगलकिशोर जी बिड़ला*

गोवंश के तीन बड़े दुश्मनों को दूर भगाओ—१. ट्रैक्टर, २. बछड़े-बछियों को मारकर निकाला गया कॉफ लेदर और ३. गोमांस के व्यापारी को। *—काशीनिवासी श्री अब्दुल रज्जाक*

जब तक भारत की भूमि पर गोरक्त गिरेगा, तबतक देश सुख-शांति और धन-धान्य से वञ्चित रहेगा। *—गोप्राण हनुमानप्रसादजी पोद्दार*

कृषि-प्रधान भारत में किसी भी उम्र के गाय-बैलों की हत्या कानूनन नहीं होनी चाहिए। गोहत्या मातृहत्या है। संविधान में आवश्यक संशोधन कर सम्पूर्ण गोवंश-हत्या-बंदीका केन्द्रीय कानून बने। उसमें कोई अपवाद न हो। एक भी अपवाद न हो। एक भी अपवाद रहा तो पूरा गोवंश कटेगा। गोवंश के मांस का निर्यात पूर्णत: बंद हो। इसके लिये सत्याग्रह करना पड़े तो सत्याग्रह करो। *—संत विनोबाजी*



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# भूमि-मानव-पशु के आपसी रिश्ते

—बसन्त राव बोंबटकर

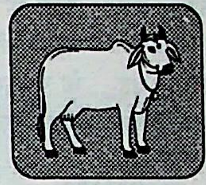

पंचमहाभूतों की मदद से चेतन-शक्ति ने इस सृष्टि का सृजन किया है, जिसमें अनंत कोटि जीव-जन्तु, पेड़-पौधे, प्राणि-पक्षी, मानव-पशु आदि निर्माण किये। लाखों-करोड़ों वर्षों से नदी-नाले, दरिया, पहाड़ों के साथ-साथ चंदा-सूरज की साक्षी में यह सृष्टिक्रम जारी है। नियति ने अपनी एक व्यवस्था नियत की है। पृथ्वी यहाँ एक सचेतन (पर्यावरणीय) संगठन है। जीवन पोषक पर्यावरण के साथ, सजीव के साथ होने वाली क्रिया प्रतिक्रिया के द्वारा करोड़ों वर्षों की अवधि में अगणित जीव-जंतु, वनस्पति और प्राणिजाति यहाँ विकसित हुई। श्री वसंतराव पलूसीकर लिखते हैं : ''खड़क को मुलायम बनाकर मिट्टी को उर्वरा बनने की प्रक्रिया में उस मिट्टी में और उस मिट्टी के सहारे सूक्ष्म जीव-जन्तु, कीटक, विविध वनस्पति और छोटे-बड़े प्राणी इनकी अन्योन्याश्रयी व्यवस्था-श्रृङ्खला बनी है जो कि जो मिट्टी की उर्वरा-शक्ति बनाये रखते हुए जीने के संदर्भ में अन्योन्याश्रय से कार्य करते हैं।''

दूसरे एक भाई लिखते हैं, प्रकृति की एक और विशेषता यह है कि उसकी हर इकाई स्वतंत्र, स्वावलंबी होते हुए भी उसका दूसरे के साथ विशेष प्रकार का अवलंबन है। यह परावलंबन नहीं है। यह है सहजीवन, सहअस्तित्व। हवा पानी को शुद्ध करने में मदद करती है। पानी पौधों को सींचता है। और पौधे हवा को पुनः शुद्ध करते हैं।

वैसे ही भूमि मानव-पशु-वनस्पति को पोषण देती है और इन्हीं से पोषण भी पाती है। इस तरह प्रकृति में एक अलौकिक नैसर्गिक समग्रता और परिपूर्णता भी है।

सृष्टि के इन घटकों में मानव भी एक घटक है। वह अन्यों से अपने को विशेष बुद्धिमान और ऊँचा मानता है। इसलिए निसर्गक्रम को जानना, उसे अक्षुण्ण रखना, उसका सहायक बनना उसका परम कर्तव्य हो जाता है।

गीता में कहा गया है—

**'परस्परं भावयन्तःश्रेयः परमवाप्स्यथ॥'**

*गीता ३.३१*

एक दूसरे की रक्षा करके परस्पर कल्याणकारी बनो।

महाराष्ट्र में जन्मे तुकाराम महाराज अपने अभंग में लिखते हैं:

**'वृक्षवल्लीं आम्हा सोयरी वनचरें।'**

वे मानते हैं कि यह सारे पशु-पक्षी, वृक्ष, लतायें हमारे सखे, समधी हैं। जिनकी समझ में यह बात आती है उनका जीवन बड़ा सरल, सुलभ, शांत, सुन्दर होता है।

**निसर्ग रचना में दखल :** खेत में फसल डोलती है, पकती है तब फल-फूल व अनाज आदमी के लिए, थोड़ा अनाज व चारा कड़ी पुवाल जानवरों के लिए और इन दोनों के द्वारा छोड़ा हुआ काड़ी-कचरा और मल-गोबर, मूत्र खेती के लिए आहार बनता है। आज मानव इस चक्र को तोड़ रहा है। वह अपने लिए भरपूर अनाज-फल-फूल चाहता है, लेकिन जानवरों को भूलता है, और ठिगने कद के अनाज उगा रहा है, जिससे चारे की कमी हो रही है। आदमी और जानवरों से छोड़ा हुआ कूड़ा-कचरा वे भूमि को न देते हुए जला डालते हैं। गाय-बैल पशुओं का गोबर दक्षतापूर्वक इकट्ठा न करके उसको नष्ट होने देते हैं। मानव का मल-मूत्र खेती में न डालकर शहरों में सेप्टिक संडास द्वारा व्यर्थ चला जाता है या नदियों में बहाया जाता है। वह मानने लगा है कि बैल काटकर ट्रैक्टरों से खेती करेगा। गोबर आदि की जगह रासायनिक खाद का इस्तेमाल करेगा। स्थानिक बनौषधियों के बजाय कीटनाशक दवाएँ इस्तेमाल करेगा, अपनी जरूरत के बीज बाहर से लायेगा, और अपनी उपज बाजार में बेचकर अपनी खाद्य-सामग्री बाजार से खरीदेगा। इससे वह सदा के लिए बाजार-व्यवस्था से बँध गया है। और उसका स्वायत्त, जीवन जटिल बन गया है। भूमि, मनुष्य, पशु, पेड़, पक्षी, पहाड़ियाँ, नदी, नाले, साफ-स्वच्छ हवा, स्वच्छ नीला आकाश इनका सहजीवन खतरे में पड़ गया। सृष्टि से सम्बन्ध टूटने से या लगाव कम होने से उसके अंदर की मानवता, जिंदादिली, सहज उदारता, स्नेह, पड़ोसीपन की भावना, शनैः शनैः कम हो रही है। वह सृष्टि व समाज से अलग-अलग पड़ रहा है। बाजार की



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्पर्धा से वह अन्यों का साथी न रहा बल्कि प्रतिस्पर्धी बन रहा है। इस कारण वह अकेला पड़ने से अपने को असुरक्षित महसूस कर रहा है। जीवन में स्नेह रस घटने से उसके जीवन का शुद्ध आनंदस्रोत लुप्त हो रहा है। अपने या अपने परिवार के लिए, पड़ोसी के लिए वह पहले काम करता था। तब अपने उपज के साथ भी अपनापन था। वह यह आग्रह रखता था कि चीजें शुद्ध-स्वच्छ, स्वास्थ्यप्रद बने। अब अपनी उपज बाजार में बेचने और अपनी जरूरत की चीजें बाजारों से खरीदने के कारण उसका कर्म आनंदमय न रहकर उसके जीवन में ऊब, सूनापन छा रहा है। अपनी ऊब मिटाने के लिए वह व्यसनों में फँसता जा रहा है। वह झरने, पहाड़, पौधे, पशु, पक्षी, खुले आसमान से मिलने वाला स्वाभाविक आनंद आदि के छिन जाने से मनोरंजन के कृत्रिम उपाय ढूँढ़ रहा है। उसी में अपनी गाढ़ी कमाई खो रहा है। मानव, भूमि और निसर्ग के साथ लगाव कम होना इस आनेवाले खतरे की घंटी समझना चाहिए। सत्याग्रह मीमांसा मासिक में एलन जार्ज लिखते हैं :

''जब-जब किसान ने वास्तविक खेती करने अर्थात् उसके जरिये अपने और आसपास के समाज की सामान्य जरूरतें पूरी करने के बजाय अपनी उपज दूर-दूर भेज और बेच कर पैसा कमाने की लालच में खेती को व्यापार बनाया और व्यापारी-खेती के चक्कर में पड़ा तब-तब उसने संकट मोल लिया। मिट्टी का शोषण करके हरे-भरे इलाकों को रेगिस्तान में बदल दिया।''

◆◆◆

Exclusive Sarees
☎ 322647, 321417 (O)
361279, 360684 (R)
ASHOK
Sarees (P) Ltd.
CK. 24/1, KUNJGALI
VARANASI - 221001

Krishna Das Brijmohan Das
Dealers in
Artistic Banarasi Sarees
CK. 24/7, Kunjgali, Varanasi - 221001 (U.P.)
Phone : 322546, 3272487, 344379



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

### अभिजात साँड़ में ही गोसंवर्धन विहित

# नंदीशाला प्रकल्प

—जानकी वल्लभ करवा

गो पालन, गोसँवर्धन भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। राजा-महाराजाओं, श्रेष्ठीजनों से लेकर सामान्य गृहस्थों तक में गोपालन हमारी प्राचीन परंपरा रही है। जहाँ राजा अथवा श्रेष्ठीजन गोपालन हेतु अपने 'गोकुल' (एक गोकुल में 80 हजार गाय होती थीं) निर्माण करते थे, वहीं सामान्य नागरिक अपनी सामर्थ्यानुसार एक या अनेक गऊएँ अपने आँगन में पालते थे।

कालांतर में राज्य व्यवस्थाएँ छिन्न भिन्न होने तथा आततायी विदेशी शासकों के प्रभाव के कारण समाज के कमजोर पड़ जाने से हमारी गोपालन संस्कृति को भी क्षति पहुँची तो हमारा गोवंश भी प्रभावित होने लगा। इस दुःखद परिस्थिति के निराकरण हेतु संत, महात्माओं समाज चिंतकों तथा सामर्थ्यवानों के प्रयासों से गोशालाओं एवं पिंजरापोलों की व्यवस्था का प्रारम्भ किया गया। नगर व अपने आस-पास की आवश्यकता को दृष्टिगत् कर गोशालाओं को गोचर भूमि दान में दी। कालांतर में गोरक्षण के साथ ही गोशाला को स्वावलम्बी बनाने के उद्देश्य से कुछ गोशालाओं ने दुग्ध उत्पादन में रुचि ली। अनेक में ५ से १५ मन (१५० से ६०० लीटर) तक प्रतिदिन उत्पादन होने लगा। किन्तु उत्तम बाछी-बछड़े व उनसे साँड़ तैयार कर गोवंश वृद्धि व नस्ल विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने का वैज्ञानिक चिंतन व प्रयास नहीं हो सका। नस्ल सुधार पर ध्यान न देने से गोशालाएँ जो थोड़ा बहुत दुग्ध उत्पादन कर ले रही थीं पिछड़ने लगीं।

भारतीय अर्थव्यवस्था व समग्र विकास की धुरी गाय व गोवंश है। इसकी रक्षा व विकास के लिए राष्ट्रीय स्तर पर अनेकों गो सदन, गोशाला, गोसंवर्धन केन्द्र नंदीशाला की महती आवश्यकता है। सभी प्रकल्पों की चर्चा न कर नंदीशाला की उपयोगिता व उसकी कल्पना प्रस्तुत है। अँग्रेजी में एक सारगर्भित कहावत हैं—

A Good Bull Can Make You.
A Poor Bull Can Break You.

प्राक वैदिक साहित्य में साँड़ पूजित था। हड़प्पाई लिपि माला मे साँड़ के चित्र उपलब्ध होते हैं, सैन्धव घाटी में ककुद साँड़ के चित्रित मोटिव पाये गये, सैन्धवोत्तर काल में वृषभ पूजा चलती रही। साँड़ की मृण्मयी मूर्तियों की प्रधानता बलूचिस्तान के ताम्रपाषाण युगीन स्थली में पायी गई। वृषभ का अँकन पंजमीक, एरण, औदुम्बर, अयोध्या, कौशाम्बी, सामंत देव, जहाँगीर के सिक्कों में मिलता है। अतएव यह सिद्ध है कि पुरातन काल में साँड़ की उपयोगिता और महत्व को लोग भलि-भाँति समझते थे। यही कारण है कि तत्कालीन गाय एवं गोवंश पूर्णतः परिपुष्ट और सक्षम थे तथा देश में घी दूध की नदियाँ बहती थीं।

आज हम अपनी ही भूलों के कारण गौ के इस अमृत से वंचित हैं। देश की बढ़ती हुई आबादी के लिए दुग्ध उत्पादन बढ़ाना आवश्यक है। इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु सर्वप्रथम नस्ल सुधार आवश्यक है, जिसके लिए हमें हर स्थिति में उत्तम साँड़ आवश्यक हैं। अच्छे साँड़ों से गर्भाधान कराकर ही गोवंश की नस्ल सुधार सकते हैं तथा अतीत की भाँति पुनः इस देश में घी दूध की सुलभता ला सकते हैं।

यदि सही एवं सूक्ष्म ढंग से मीमांसा करें तो आभासित होगा कि विगत अनेक दशकों में अभिजात साँड़ (Pedigre Bull) तैयार करने में हमने सरकारी या गैर सरकारी स्तर पर कुछ भी प्रयास नहीं किया है।

स्वदेशी गोधन के संरक्षण एवं संवर्धन पर पर्याप्त ध्यान दिया जाना अपने आप में एक आवश्यकता है, जो पुष्ट साँड़ों द्वारा नस्ल सुधार से ही संभव है, जिसके लिए हमें व्यापक चिंतन और प्रयास करने होंगे जो नंदी शाला के सहयोग से अधिक सरल और सँभव होंगे।

### नंदी शाला स्वरूप

नंदीशाला से आशय है कि स्थानीय जलवायु के अनुकूल स्वदेशी नस्ल का चयन किया जाय और उससे उत्तम साँड़



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उपलब्ध करा के गर्भाधान की सुविधा प्रत्येक गोपालक को सुलभ कराई जाय। एक आदर्श नंदीशाला चलाने के लिए ५ एकड़ भूमि पर्याप्त है, परन्तु शुरू में काम आधा एकड़ से भी चलाया जा सकता है। न्याय पंचायत, ग्राम पंचायत, स्वयंसेवी संस्थाएँ अथवा स्थानीय गोपालकों की सहकारी समिति या अन्य सामाजिक संगठन द्वारा इस कार्यक्रम को चलाया जा सकता है। इसके आसपास की गोशाला अथवा पशु प्रजनन केन्द्र से प्रामाणिक साँड़ प्राप्त कर उसका पालन किया जाये। उसके सार सँभाल के लिए गाँव के ही किसी युवक को नियुक्त किया जाय, उसके लिए दाना पानी की व्यवस्था के साथ ही एक सामान्य टीन की झोपड़ी या घर में यह काम चलाया जा सकता है। एक में साँड़ रखा जाय, दूसरे में उसका भूसा व राशन की व्यवस्था की जाय व तीसरे में संचालक रहे। इस प्रकार की व्यवस्था एक लाख रु० में तथा २५०००/- रु० में कच्ची झोपड़ी की नंदीशाला खड़ी की जा सकती है। इसका वार्षिक खर्च १५०००/- रु० से २५०००/- रु० आयेगा। इस कार्य के लिए अ० भा० कृ० गो सेवा संघ, भारतीय गोवंश संरक्षण संवर्धन परिषद या ऐसी संस्थाएँ, केन्द्र सरकार, राज्य सरकार अथवा अन्य कोई संगठन चलाये तो इस योजना के शुरू करने के ५ वर्ष बाद देश में दूध का उत्पादन कई गुना बढ़ सकता है और गायों की स्थिति सुधर सकती है। ऐसी योजना चलाने से भारतीय नस्लों का स्थान-स्थान पर विकास चलता रहेगा तथा काफी लोगों को रोजगार मिलने के साथ ही श्वेत क्रान्ती को बढ़ावा मिलेगा। नंदीशाला चलाने के लिए भी गोशाला की आवश्यकता रहेगी क्योंकि प्रामाणिक साँड़ों की आपूर्ति का केन्द्र तो गोशाला ही होंगी। नंदी शाला की कल्पना भी गोशाला की तरह वृहद् है जिसमें कम्पोस्ट खाद, गोमूत्र, औषधि, मृत पशु उपयोग केन्द्र जैसे अनेक ग्रामोद्योग खड़े किये जा सकते हैं।

ग्रामोदय तथा श्वेतक्रान्ती के लिए नंदीशाला मील का पत्थर साबित हो सकता है। यह कार्य लोक आधार से खड़ा हो सकता है जिसमें सबका हित है। आजादी की स्वर्ण जयंती वर्ष में गोशाला के एक शताब्दी केअनुभव के आधार पर यह योजना बनाई गई है। युवकों से, समाज सेवियों एवं सरकार से आग्रह है कि इस लोकोपयोगी योजना पर गम्भीरतापूर्वक विचार कर इसे सफल बनायें।

★★★

## कृपया ऐसे साँड़ ना छोड़ें

पूर्व में किसी स्वजन की मृत्यु पर सूरज साँड़ छोड़ने की प्रथा थी। सूरज साँड़ का तात्पर्य प्रत्येक दृष्टि से साँगोपाँग साँड़ है। इस प्रकार के साँड़ छोड़ने का मन्तव्य गोसँवर्धन के लिये उपर्युक्त एवं श्रेष्ठ साँड़ उपलब्ध करवाना था। कालांतर में इस सुप्रथा ने कुप्रथा का स्वरुप धारण कर लिया, साँड़ छोड़ने का धर्मपालन करने के नाम पर सूरज साँड की जगह नकारा साँड़ छोड़े जाने लगे जिन्होंने गोसँवर्धन कार्य के स्थान पर अवाँछनीय गोसंतति पैदा की।

हम धार्मिकजनों से विनम्र अनुरोध करते हैं कि प्रथा के नाम पर इस तरह के साँड़ ना छोड़ें। वैसे भी अब ऐसे छोड़े गये साँड़ों की परवरिश नहीं हो पाती, बेचारे गलियों के कूड़ा-करकट तथा अभोज्य पदार्थों को खाकर कुपोषण और बीमारी के शिकार होते हैं, तथा गोवंश को भी विकृत करते हैं। क्या आप इस पाप के दोषी होना चाहेंगे?



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

## गोरक्षा मूलक स्थानीय उद्योग प्रधान

# लोक शिक्षण के सफल प्रयोग

—आचार्य शरदकुमार साधक

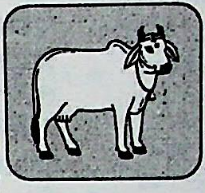

स्वतन्त्र भारत के सभी नागरिकों को रोटी मिले, रोजगार मिले, भूमि मिले, भवन मिले और सामुदायिक जीवन समृद्ध हो इसके लिए आचार्य विनोबा ने भूदान मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति आरम्भ की थी, किन्तु विकास कार्यों के सरकारीकरण से वह क्रान्ति अपेक्षित परिणाम नहीं ला सकी। राष्ट्रीय नव निर्माण की योजनाएं इने-गिने लोगों को लाभ पहुँचाती रहीं, सर्व उपेक्षित हो गया। मानव के साथ मानवेत्तर प्राणी भी असुरक्षित हो गये। पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत स्थापित मुम्बई के देवनार कत्लखाने में प्रति वर्ष 180 करोड़ रुपये मूल्य का पशुधन कटने लगा और पशु पालक गाँव और जमीन से उखड़ गये। एक अध्ययन के अनुसार यदि वहां पशुधन कटना बंद हो जाता है तो 3 लाख 70 हजार टन अनाज, 10 लाख टन चारा, 30 लाख टन खाद, 20 करोड़, 58 लाख 57 हजार टन दूध और 9 लाख 80 हजार लोगों को काम मिल जाता। विनोबा जी के ध्यान में यह बात आते ही उन्होंने कत्ल के लिये जाने वाले पशुधन को रोकने का निर्देश दिया। देश भर में 'रोको भाई रोको' का नारा लगाते हुए कार्यकर्ता रेल मार्ग और राजमार्गों पर डटे। वाराणसी मुगलसराय में यही काम हमने किया तो बोगियों व ट्रकों से उतरा गोधन सत्याग्रहियों के जिम्मे हो गया। पशु व्यापारियों ने मुकदमे चलाये, कसाइयों ने आक्रमण किये, किन्तु उत्तर प्रदेश गोवध अधिनियम की धाराओं के अनुसार सत्याग्रह जायज माना गया और सत्याग्रही अपने लक्ष्य से विचलित नहीं हुए।

रोका गया गोवंश कहाँ रखा जाय? उसे सम्भाले कौन? जरूरतमंद किसानों, गाड़ीवानों, गोपालकों के बीच वितरित करने के बाद बूढ़े बीमार, अपंग गाय बैल बचे, जिन्हें श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला ने संरक्षण दिया और वाराणसी से 16 किमी० दूर स्थित रामेश्वर गोशाला में उनकी समुचित चिकित्सा, अच्छी देखभाल एवं संतुलित दाना-पानी का प्रबंध कर दिया। संरक्षित गोवंश जैसे-जैसे ठीक होता गया, वैसे-वैसे रुका गोवंश आता रहा। लगभग 60 हजार गाय-बैल बेमौत मरने से बचे, यह प्रत्यक्ष लाभ हुआ। तब उन्हें उपयोगी बनाने में सुरभि शोध संस्थान जुड़ा। कृषि गोसेवा संगठन तथा जयजगत सेवा संस्थान के परामर्शानुरूप विविध प्रकल्प आरम्भ किये गये। वरुणा नदी के बाढ़ क्षेत्र में गोचरभूमि होने से सारी मिट्टी बह गयी। गहरे कटाव से बीहड़ बन गया। वहाँ मिट्टी का बहाव रोकने के लिए मेढबन्दी की। सीढ़ीदार खेत बनाये। जिस भूमि में तृण नहीं जमता था, वह भूमि सुधरी और गोबर गैस से निकली स्लरी ने खेतों का कायाकल्प कर दिया। आज 105 एकड़ भूमि से वर्ष में करीब 40 हजार क्विंटल हरा चारा हो रहा है। उत्तम कोटि के नेपियर से बी 21 की अच्छी पैदावार है। खेतों में एक बार गहरी जड़ जमाने वाले बीज डालते हैं। दूसरी बार ऊपरी सतह तक रखने वाले, मेड़ों पर कपास वृक्ष लगे हैं। ईमारती लकड़ी लायक पेड़ लगाये हैं। पौधशाला में करीब एक लाख नीम के पेड़ तैयार हो रहे हैं। स्थानीय जलवायु व मिट्टी के अनुकूल उत्पादन तथा उन्नत कृषि को बल मिला है। कम पानी की उपज एवं सूखी खेती की संभावना भी स्पष्ट हुई है। बिजली न हो की स्थिति में गोबर गैस, बायोगैस और ऊर्जा से परिसर रोशन रहता है।

हरियाणा, हिसार, थारपारकर, शाहीवाल, गंगातीरी नस्ल की गायों की ब्रीडिंग तथा अच्छे साँड़ों की व्यवस्था है। वर्षों से गाभिन न होने वाली उपेक्षित सूखी गायें भी उत्प्रेरित दुग्ध विधि से दूध देने लगती हैं। गो विज्ञान विषयक चर्चा सार्वजनिक होने पर आये गोपालकों को अपेक्षित सहयोग दिया जाता है। कृषि विशषज्ञों एवं पशु चिकित्सकों की देखरेख में प्रशिक्षण शिविर आयोजित होते हैं। प्रशिक्षित तरुण स्वरोजगार के लिए गायें लेते हैं तो उन्हें दूध का उचित मूल्य दिलाने हेतु गोरस भंडार खोले गये हैं। सैकड़ों गाँवों का दूध नगर के दो हजार परिवारों में पहुँचता है और उनसे एक लाख रुपये रोजाना गोपालक पा जाते हैं। गो दुग्ध के अलावा दही, मट्ठा, घी, मक्खन, गोरस पाक आदि उत्पादों की अच्छी खपत है। नपेड पद्धति से बनी कंपोस्ट खाद, केंचुआ पालन, मधुमक्खी पालन भी कमाई के साधन हैं। गोमूत्र से शैम्पू और साबुन बन रहा है। हड्डी से उर्वरक तैयार करने, सींग, सूर से सरेस बनाने, चर्म से जूता चप्पल निर्मित करने एवं मृत्योपरांत देशी गायों में गोलोचन हो तो उसे भी निकालने में लगे लोगों की आमदनी बढ़ी है। कम पूँजी में काम अधिक। अकुशल, कुशल कामगारों के लिए अवसर अधिक हैं।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कई गोशालाओं, गोपालकों, गाड़ीवानों को गाय, बैल, साँड़ दिये गये। गो सेवकों की लड़कियों की शादी में एक-एक अच्छी बछिया देने से वे जिन-जिन गाँवों या घरों में पहुँची वहाँ चार पाँच माह तक सेवा होने पर ब्यायी। घर-घर में दूध हो गया। नगर निवासियों से निवेदन किया गया कि जिनके पास गाय रखने की सुविधा न हो, वे अपनी गाय गोशाला में रखें और उसके रख रखाव हेतु हर घर में गोग्रास पात्र रखें। दुकानों, कार्यालयों में गोलक पेटी रखें तथा गोपालक को प्रोत्साहन देने के लिए गो दुग्ध पीने का संकल्प लें। मठ मन्दिरों में भी गो दुग्ध का उपयोग होने से गोपालन में मदद मिली और गो उत्पादों के साथ गृहोद्योग बढ़े। महिलाएँ अपने खेत में उत्पन्न आलू, मटर, टमाटर का विविध उपयोग करने, फल संरक्षण, पापड़ उद्योग में दिलचस्पी लेने लगीं। गुलकन्द और गुलाब जल तैयार हुआ। इस तरह 'अर्निंग एण्ड लर्निंग थ्रू डूइंग' की उक्ति सार्थक हुई और उनकी संतति को शिक्षित संस्कारित करने वाले गोपालक ग्रामों में तीस सरस्वती शिशु मंदिर, संस्कार केन्द्र, पुस्तकालय, वाचनालय खुले। तरुण लोहा, लकड़ी पर आधारित ग्रामोद्योग बढ़ाने में जुटे, जिससे अब सुधरी बैलगाड़ियाँ, बैल चालित चारा काटने की मशीन, बैल चालित ट्रैक्टर बनाने और गो विज्ञान से आर्थिक स्वावलम्बन साधन की अनुकूलता हुई है। ग्राम भावना, ग्राम संकल्प, ग्राम कोष और सामुदायिक हित की बात जैसे-जैसे ध्यान में आयेगी व्यसनों, झगड़ों, प्रतिस्पर्धाओं और अपराधों में कमी आयेगी। यह समयसाध्य काम है, जो सामाजिक रीति-रिवाजों, राजनैतिक आरोह-अवरोहों, सांस्कृतिक अवधारणाओं की अनुकूलता के बिना भावी प्रभावी नहीं हो सकता। जीवन व जीविका के संसाधनों को शोषण की जगह पोषण में प्रयुक्त करने वाली बुनियादी शिक्षा को मान्यता मिले और एक दूसरे की कमजोरी, बीमारी, लाचारी का फायदा उठाने वाले सेवा-व्यापार अवैध माना लिये जाएँ, तभी वर्तमान दशा व दिशा बदल पायेंगी, गो-उपासना रंग लायेगी। उपभोक्तावादी मानसिकता वाले तब समझेंगे कि भौतिक दुनियाँ में भी शान्तिपूर्वक जीवनयापन करने हेतु गोपाल ग्राम कितने सुखकारक, समाधानकारक हैं।

गोरक्षामूलक स्थानीय उद्योग प्रधान लोग शिक्षण के प्रयोग को नये-नये आयाम देने हेतु हर वर्ष गोपाष्टमी पर गोपालग्राम मेला लगाते हैं। गोपालक एवं गोशाला प्रबंधक शिविर किये जाते हैं। 24 दिसम्बर 1997 से 5 जनवरी 1998 तक गोशाला परिसर में 'गाँधी : वैश्वीकरण बनाम स्वावलम्बन एवं स्थायी विकास' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की गयी। कार्यानुभव से स्पष्ट हुआ कि :

१. गाय, गोशाला, ग्रामोद्योग के समन्वित कार्य से आज जितनी पैदावार है, उससे दोगुना दूध, तीन गुना चारा, पाँच गुना भूसा, सात गुना दाना और आठ गुना रोजगार सुलभ हो सकता है। संयुक्त राष्ट्रसंघ के विकास विभाग के आंकलनानुसार प्रतिदिन गरीबों की जमात में 68 हजार लोग शामिल होते हैं, उन्हें उबारने के लिए यह सार्थक कदम है, वैसे ही लगभग 35 करोड़ भारतीयों को भी गरीबी की रेखा से ऊपर उठाने का प्रयास।

२. सरकारी और गैर सरकारी संगठन मिल कर गोमूत्र का उपयोग करें और सेन्द्रिय खाद तैयार हो तो भारत की आधी आबादी के लायक गैस (ईंधन), ढाई करोड़ टन नाईट्रोजन, पोटाश, फास्फोरस युक्त जैविक खाद तैयार हो सकती है, जिससे भूमि की उर्वरता बढ़ती है और खेती में पानी भी कम लगता है। गोबर गैस, बायोगैस प्लांट लगवाने में बड़े-बड़े बिजली घरों और उर्वरक कारखानों जितनी पूँजी नहीं लगानी होगी और न ही उनकी तरह की समस्यायें ही पैदा होंगी।

३. गोबर, मिट्टी, खरपतवार और कूड़े से बनी सेन्द्रिय खाद रासायनिकों की तुलना में सस्ती होती है एवं उपयोगी भी, जिसका उपयोग कर भारत की 12 करोड़ 5 लाख 80 हैक्टेयर ऊसर भूमि को उपजाऊ बनाया जा सकता है और इण्टरनेशनल फेडरेशन ऑफ आर्गेनिक एग्रीकल्चरल मूवमेंट (INFOAM) के अनुसार रासायनिकों से विभिन्न देशों की 1 करोड़ 90 लाख हेक्टेयर भूमि की घटी उर्वराशक्ति को संवर्धित किया जा सकता है।

४. जल, जंगल, जमीन तथा वंशानुगत साधनों का टिकाऊ ढंग से इस्तेमाल कर दिनों दिन नष्ट होने वाली फसलों एवं मवेशियों को बचाने वाला जैव प्रौद्योगिकी विज्ञान कृषक-पशुपालकों तक पहुँचाया जा सकता है। जीव वैज्ञानिकों के मतानुसार धरती की संसाधन उत्पादन क्षमता 150 अरब टन थी। उसमें से 12% नष्ट हो गयी, 28% मानव उपयोग में आ रही है और 60% जीवधारियों के लिए है, उसमें विकासशील देशों की दखलंदाजी बढ़ने से धरती आक्रांत है और धरती सम्मेलन द्वार आक्रांत सभ्यता को उलटने का उपाय सोचा जा रहा है।

५. करुणा के आधार पर खड़ी गोशाला लोक क्रान्ति का अधिष्ठान बन जाय तो संहार में लगने वाले संसाधन सृजन में लगानें का वातावरण तैयार किया जा सकता है। उससे जनशक्ति, सन्तशक्ति और प्रशासन शक्ति के सहयोग से पर्यावरण सुधरेगा, पारस्परिकता बढ़ेगी एवं किंगडम ऑफ काइण्डनेस (करुणा का राज्य) स्थापित करने का सपना साकार होगा।

'एक्ट लोकली थिंक ग्लोबली' के परिप्रेक्ष्य में समाज की अपेक्षा, राष्ट्र की आवश्यकता, जयजगत की अवधारणा को आकार देने वाले हमारे प्रयोग सबकी सहभागिता, स्वतंत्रता, सफलता की कसौटी हो जायेंगे।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त

( गोवंश की दुर्दशा से व्यथित होकर राष्ट्रकवि के मुँह से बरबस ये पंक्तियाँ फूट पड़ी थीं )

दाँतों तले तृण दाब कर हैं दीन गायें कह रही,
हम पशु तथा तुम हो मनुज, पर योग्य क्या तुमको यही ?

हमने तुम्हें माँ की तरह, है दूध पीने को दिया,
देकर कसाई को हमें, तुमने हमारा वध किया॥

क्या वश हमारा है भला, हम दीन हैं, बल हीन हैं,
मारो कि पालो, कुछ करो तुम हम सदैव आधीन हैं।

प्रभु के यहाँ से भी कदाचित्, आज हम असहाय हैं,
इससे अधिक अब क्या कहें, हा! हम तुम्हारी गाय हैं॥

जारी रहा क्रम यदि यहाँ, यों ही हमारे नाश का,
तो अस्त समझो सूर्य भारत-भाग्य के आकाश का।

## गो-गौरव

(कविसम्राट् पं० श्रीअयोध्यासिंह जी उपाध्याय 'हरिऔध')

भारत-अवनी अन्न बहुत-सा है उपजाती।
इसीलिये है कनक-प्रसविनी मानी जाती।
इसी अन्न से तीस कोटि मानव पलते हैं।
दीन तम-भरे सदन मध्य दीपक बलते हैं।
गोसुत-गात-विभूति से अन्नराशि उद्भूत है।

## वन्दे गोमातरम्

विश्व की जननी विभव-विस्तारिणी गोमातरम्।
शक्ति, सन्तति, सौख्यप्रद दुखदारिणी गोमातरम्॥
ईश की तू देन अनुपम, वन्दनीय विश्व की।
निस्स्वार्थ, निर्मल, लोक की उपकारिणी गोमातरम्॥
विश्व भी बनता नहीं तब, धेनु जो होती नहीं।
कह रहे हैं वेद वसुधा-धारिणी गोमातरम्॥
लोक क्यों परलोक में भी, तू सहायक बन रही।
हैं सिद्धियाँ तेरी सदा अनुसारिणी गोमातरम्॥
चैन से कैसे रहेंगे, जो सताते मा तुझे।
हर्षवर्द्धक भक्त की भयहारिणी गोमातरम्॥
प्रेम से पलती जहाँ, श्री फूलती फलती वहाँ।
निर्बलों में बल अतुल संचारिणी गोमातरम्॥

—शोभाराम धेनुसेवक ( कविरत्न )



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# गोमाता! अभिनन्दन तेरा।

जय-जय जननी, जय जन जीवन
जय गोकुल गरिमा, जय गोधन
जय सुखदा शुचिता शुभ दर्शन
भक्ति सहित वर वन्दन मेरा,
गो माता! अभिनन्दन तेरा।।

तेरे वीर बली वृष-बालक
धौरी धनी धवल कृषि चालक
वाहन वाहक पुर प्रति पालक
मिटा रहे दुर्गत दुख मेरा,
गो माता! अभिनन्दन तेरा।।

घृत नवनीत दूध दधि खाते,
सन तृण तेल अन्न पटपाते,
पूतों फलते दूधों न्हाते
सुखमय तेरा वास बसेरा,
गो माता! अभिनन्दन तेरा।।

घूम-घूम तिनके चरती है
दुख हरती पर हित करती है
जीते जी वैभव भरती है
मर कर भी उपकार घनेरा,
गो माता! अभिनन्दन तेरा।।

गो-पय मूत्र रोग संधारक
विषमारक, शुभ स्वास्थ्य प्रसारक
उपले खाद आदि उपकारक
गुण-गौरव वर्णित बहु तेरा
गो माता! अभिनन्दन तेरा।।

जन-जन की रक्षक गोमाता
भक्षक तोड़ नेह नय नाता
बध करते क्यों हाय विधाता॥
तुमको पुनि पुनि हेरा-टेरा
गो माता! अभिनन्दन तेरा।।

——पण्डित-हरिशंकर शर्मा



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

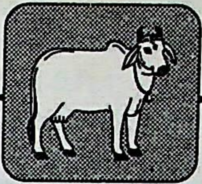

# गौ महिमा

तुम लक्ष्मी, धन-धान्य, बुद्धिबल, अमृत-दुग्ध प्रदाता।
कोटि-कोटि भारतवासी जन तुमको कहते माता॥
धर्म-अर्थ अरु काम-मोक्ष-सुख-चैन तुम्ही से पाते।
सुर-नर-नाग-देव गन्धर्व तुम्हारी महिमा गाते॥
बलशाली सुत सदा तुम्हारे हरित क्रान्ति करते हैं।
सत्य-अहिंसा-बल-पौरुष मानव मन में भरते हैं॥
नाम अधन्या-गौमाता सुरभि-अर्च्या तेरे हैं।
कामधेनु-वसुमती तुम्हारे सभी रुद्र चेरे हैं॥
तेरी कृपा मातु वैतरिणी मानव तर जाते हैं।
अभ्युदय की ज्योति किरण तक तेरे ही नाते हैं॥
इन्द्रादि देवता हव्य माँ तुमसे ही पाते हैं।
तेरी माँ पावन महिमा को वेद स्वयं गाते हैं॥
गो सेवा मानव धरती पर सबसे अधिक धनी हैं।
तुमने खाकर के तिनके माँ अमृत धार जनी है॥
गो पालक बन "द्रोण" धरापर जो भी नाम करेगा।
जो गो माता की पीड़ा को लेकर मान हरेगा॥
उसे पुत्र-सुख-वैभव देगी गो माता कल्याणी।
मिलकर इसका मान बढ़ाओं यही वेद की वाणी॥
देकर आदर मान सदा ही अर्च्या के गुण गाओ।
इसका पावन नाम प्रेम से जन-जन में फैलाओं॥

—— ओम प्रकाश सारस्वत 'द्रोणाचार्य' फिरोजाबाद

## गोविंद की गैया

आठों जाम सेवा में दिलीप-से महीप रहे,
पायो पुचकार-प्यार कुँवर कन्हैया को।
दूध-घृत-अमृत सों पोषत हमारो तनु,
जाको साँड़ बन्यो डाँड़ भारत की नैया को।

गो-धन रखैया ही को साँचो धनवान जानो,
नीको सनमानो धेनु-धनके चरैया को।
गौर करो गायकी गुहारपर दौर परो,
कष्ट हरो भैया! मोरी गोविन्द की गैया को।

— (एक स्वान्तः सुखाय)



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# गौ मेरी माँ है

—श्रीशेख फ़खरुद्दीन शाह उर्फ़ गऊ प्यारा शाह

खुदाने जब दुनिया पैदा की, उस वक्त उसने सब जानदारों के दिल में मुहब्बत भी भर दी। मगर उस मुहब्बत के साथ-साथ इन्सान और हैवान में बेवकूफी और खुदगरजी भी मौजूद थी। यही वजह है कि इन्सान और हैवान आपस में नाइत्तिफाकी करने लगे और एक दूसरे की जान के गाहक बन गये। हैवान की बात तो जाने दीजिये, उसे तो खुदाने कमअक्ल और कूढ़मग्ज बनाया। मगर इन्सान तो आकिल है मगर यह रफ्ता-रफ्ता हैवान से भी बदतर हो रहा है। शेर जब शिकार करता है तो सिर्फ अपनी भूख मिटाने के लिए। खुदा ने उसकी गिजा वैसी ही बना दी है। इसीलिये वह खूँख्वार जानवर अपना पेट पालने के लिये जानवरों का शिकार करता है। मगर इन्सान! खुदा इन पर करम करे, ये तो बिला वजह गूँगे और निहायत सीधे जानवरों को मार डालते हैं। वह भी किसलिये? शौक के लिये। ऐसे लोग सिर्फ खूँख्वार जानवर ही कहला सकते हैं!

एक बात और भी ताज्जुबअंगज है। ये बहादुर इन्सान शेरका सामना नहीं करते, चीतेपर निशाना नहीं लगाते, बल्कि खुदाकी कुदरत के खुशनुमा करिश्मों—खूबसूरत परिंदों या बेजबान हरिनों को वक्त से पहले मिटा डालते हैं। खुदा कभी उन पर रहम नहीं करता, जो उसके बंदों को तकलीफ पहुँचाता है।

मुझे यह देखकर रंज होता है कि मेरे भाई अहलेइस्लाम इस मसलेपर गौर नहीं करते। वे यह खयाल नहीं करते कि गेहूँ, चना, मटर, तरकारी, दूध, दही, घी वगैरह—इतनी न्यामतें खुदा ने बख्शी हैं कि अगर इन्सान सिर्फ एक अनाज एक रोज के हिसाब से खाये तो भी अपनी उम्रभर में खुदा के पैदा किये हुए अनाजों का खातमा न होगा।

मैं जिस मसले पर गौर करने के लिये मजमून बाँध रहा हूँ, अब उसपर सीधे पहुँच जाना चाहिए।

सारा जहाँ अपनी मासे मुहब्बत करता है। वह मुहब्बत कितनी पाक और मजबूत होती है। माँ की इज्जत और जान बचाने के लिये न जाने कितने सुर्खरू बेटों ने अपनी जान कुर्बान कर दी है। मगर यह कुर्बानी क्यों होती है? इसकी वजह सिर्फ यही नहीं है कि मार अपने बच्चे को नौ माह अपने पेट में रखती है। या पैदा होने के बाद उसकी देख-रेख करती है। बल्कि इसलिये कि माँ खून देती है, जिस्म देती है, ताकत देती है। जब कभी कोई नामर्दी का काम करता था तो उसकी माँ गुस्से से बोलती थी, तूने मेरा दूध शर्मा दिया। मगर आज सैकड़ों-लाखों की तादाद में ऐसे नौजवान मिलेंगे, जिन्होंने माँ का दूध तो शर्मा ही दिया है बल्कि उससे भी दो कदम आगे बढ़ गये हैं। वे अपनी माँ का खून पीने पर उतारू हो गये हैं!!

मैं छोटा था, तभी से मेरे अब्बाने मेरे लिये एक गाय ला रक्खी थी; क्योंकि मेरी माँ का इंतकाल हो चुका था। मेरी नयी माँ गाय मुझसे उतना ही प्यार करती थी, जितनी सगी माँ। वह दूध देती थी, मैं पी लेता था। मैं जब कभी उसके पास बैठता, वह मुहब्बत से मेरे हाथ, पैर, कमर और सिर चाटा करती थी। मैं उसे पुचकारा करता था, वह बड़ी प्यारभरी निगाह से मुँह उठाकर मेरी ओर देखा करती थी। मैं दिनभर उसी के पैरों में लोटता था, मगर मजाल कि उसने मुझे कभी तकलीफ दी हो। एकदफा एक मुहल्ले का कुत्ता पागल हो गयाथा। मैं अपनी गाय के साथ बाहर धूप खा रहा था। इतने में शोर हुआ। 'बचो, अब्दुल! पागल कुत्ता आया।' मैं सकपका गया, डर गया और रोने लगा। कुत्ता मेरी ओर झपटा, मगर मेरी माँ गाय ने मुझे बचा लिया. अपने पैने सींगों से उसने उस कुत्ते को अधमरा कर डाला और फिर आकर मुझे चाटने लगी। उस दिन मैंने गाय में माँ का नज्जारा देखा। उस रोज से मेरी गाय मेरी माँ बन गयी। उसके पाँच वर्ष बाद वह गाय बीमार पड़ी। न जाने क्या हो गया था। मैंने बहुत दौड़-धूप की; मगर कुछ न हो सका। मेरी माँ इस दुनिया से कूच कर गयी, मगर आखिरी साँस में भी वह मेरी गोद में सिर रक्खे, मेरी तरफ प्यार और दर्द की निगाह से देखती हुई आखिरी बार मेरे मुँह को चाटकर खत्म हो गयी! मैं उससे लिपट-लिपटकर रोया, खूब रोया! मैंने उस रोज अपनी माँ को खो दिया! हमलोग गौ पालते हैं खुदगर्जी के लिये, दूध के लिये। मगर यही सच्ची मुहब्बत नहीं है। अगर दिल से गाय की मुहब्बत की जाय तो दुनिया भर के ऐशो आराम घर में भर जायँगे।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उस दिन से ही मुझे गाय में एतकाद (श्रद्धा) हो गई और मैं जहाँ जाता हूँ, वहाँ हिन्दू-मुसलमान सबको गाय की मुहब्बत का सबक सिखाता हूँ। हिन्दुस्तान अगर फिर से बाकई सोने की चिड़िया, इस्मोहुनर का खजाना बनना चाहता है तो उसे गायकी हिफाजत करनी ही होगी। ख्वा हिन्दू ख्वा! मुसल्मान, हर एक हिन्दुस्तानी का फर्ज है कि गौ अम्मा से मुहब्बत करे। मैं दावे के साथ कहता हूँ कि जो एक गौकी परवरिश सच्चे दिल से एतकाद के साथ करेगा, उसे खुदा दुनियाभर की नियामत बख्शेंगे।

दुनिया में और भी बहुत से जानवर हैं; मगर जो सिफ्त गाय में हैं, वह किसी में नहीं। विलायती डॉक्टरों ने भी यह फैसला दिया है कि गाय के दूध के बराबर इन्सान की कोई गिजा नहीं है। गाय के दूध से दही, मक्खन और घी तो मिलता ही है; साथ ही दिल और जिगर की बीमारीबालों के लिये गाय का दूध निहायत मुफीद है। हमारे मुल्क हिन्दुस्तान में जबतक गाय की कद्र हुई, तबतक हमारे खेतों में से सोने के बाल पैदा हुए। जब से हमलोगों ने गौ के फबायद को महसूस करना छोड़ा, तभी से हम गौरों के मकरुज (ऋणी) और गरीब हो गये!

मैं फिर जोर के साथ हर हिन्दू और मुसलमान से इस्तद्वा (प्रार्थना)करता हूँ कि खुदा का करम पाने के लिये, खुशोखुर्रम रहने के लिये और आपस में मुहब्बत और दोस्ती रखने के लिए यह सबका फर्ज है कि इस मेरी माँ गाय की हिफाजत करें। खुदा बरकत करेगा।

## गाय नहीं कटने देंगे

गाय ने मानव-जीवन को नव-रूप प्रदान किया है,
इसीलिये ऋषियों ने इसको 'माँ' का नाम दिया है॥

आर्य संस्कृति का गौरव हम नहीं सिमटने देंगे,
शीश भले कट जाये लेकिन गाय नहीं कटने देंगे॥

मेहनत-कश किसान के मन में खुशियाँ यह भर देती,
श्रम के साथी बैलों को भी यही जन्म है देती॥

किसी जाति का नहीं, धर्म का नहीं यह हर घर का है,
गौ-हत्या का प्रश्न समूची मानवता भरका है॥

गौ-हत्या करने वाला सभ्यता उचाट रहा है,
गाय काटने वाला अपनी माँ को काट रहा है।।

माँ के हत्यारों को खुलकर दंड दिलाना होगा,
इसकी रक्षा का घर-घर में अलख जगाना होगा॥

वसुधा के वैभव का दर्शन नहीं चटकने देंगे,
शीश भले कट जाये लेकिन गाय नहीं कटने देंगे॥

जिस आँगन में गाय नहीं अपशकुन माना जाता,
गोदान तो भारत-भूमि पर महादान कहलाता॥

हिन्दू मुस्लिम सिक्ख सभी अब आगे बढ़कर आओ,
भाल भारती से कलंक का ये टीका हटवाओ॥

—श्री अब्दुल गफ्फार



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# गाय और इस्लाम

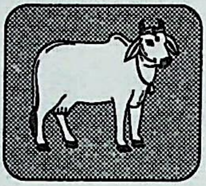

देश में विद्वेषपूर्ण और भ्रामक प्रचार किया जाता रहा है कि इस्लाम गोवध की इजाजत देता है। निम्नलिखित उद्धरणों और तथ्यों से यह स्पष्ट है कि इस्लाम और उसके पैगम्बर तथा प्रतिष्ठित नेता गाय को आदर की दृष्टि से देखते आये हैं।

१. 'गाय का दूध और घी तुम्हारी तंदुरुस्ती के लिये बहुत जरूरी है। उसका गोश्त नुकसानदेह और बीमारी पैदा करता है, जबकि उसका दूध भी दवा है।'—हजरत मुहम्मद (नासिहाते हादौ)

२. 'गाय का दूध बदन की खूबसूरती और तंदुरुस्ती बढ़ाने का बड़ा जरिया है।'—हज़रत मुहम्मद (बेगम हज़रत आयशा से)

३. 'बिला शक़ तुम्हारे लिये चौपायों में भी सीख है। उनके (गाय के) पेट की चीजों में से गोबर और खून के बीच में से साफ दूध, जो पीने वालों के लिये स्वादवाला है, हम तुम्हें पिलाते हैं।'—कुरानशरीफ १६-६६

४. 'अच्छी तरह पली हुई ९०गायें १६ वर्षों में न सिर्फ ४५० गायें और पैदा करती हैं, बल्कि उनसे हजारों रुपये का दूध और खाद भी मिलते हैं। गाय दौलत की रानी है।'—हज़रत मुहम्मद (मौला फारुखीद्वारा संकलित, 'बरकत' और सरक़त में)

### इन राजाओं और बुजुर्गों ने गोहत्या बंद करवायी थी—

५. मुगल बादशाह बहादुरशाह के खास पीर मौलवी कुतुबुद्दीन साहब ने फतवा दिया था कि 'हदीश' में कहा है कि जाबेहउलबकर (गाय की हत्या करने वाला) कभी नहीं बख्शा जाना चाहिए—

**इस फतवे पर इन बुजुर्गवारों के दस्तख़त हैं—**

*मुहम्मद शाह गाजी शाह आलम बादशाह।*
*सैयद उताउल्लाखान फिदवी।*
*पीर मौलवी कुतुबुद्दीन।*
*काजी मियाँ असगर हुसैन दस्तखत*
*खास वल्द मुन्शी इलाही खान।*

—दरोगा आतिशखान हुजूरपुरनूर।

६. बाबर, हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ, मुहम्मदशाह आलम-जैसे शासकों के अलावा अब्दुलमुल्क इब्ने मरदान सूबेदार ईराक, वाली हुकुमत अफगानिस्तान ने सौ से ज्यादा उलेमा अहले सुन्नत के फतवा के मुताबिक गाय की कुर्बानी बंद करायी।

७. ब्रिटिश-काल में जिन मुसलमान शासकों ने अपनी इन रियासतों में गोहत्या को बंद कराया था, वे थे—नवाब रामपुर, नवाब मंगरौल, नवाब दुजाना (करनाल), नवाब गुड़गाँव और नवाब मुर्शिदाबाद।

८. मौलाना फरुखी लिखित 'खैर व बरकत' से पता चलता है कि शरीफ मक्काने भी गोहत्यापर पाबंदी लगवायी थी।

९. लखनऊ के छह उलमाएँ सुन्नतने गोहत्या बंदी का फतवा दिया था।

१०. इमाम जाफर साहब ने इरशाद फरमाया था, 'गाय का दूध दवा है, इसके मक्खन में शिफा (तंदुरुस्ती) है और मांस में बीमारी।'

११. 'मुसलमान को गाय नहीं मारना चाहिए। ऐसा करना हदीस के खिलाफ है।' (मौलाना हयात साहब खानखाना हाली समद साहब)

१२. 'गाय की बुजुर्गी इहतराम किया करो, क्योंकि वह तमाम चौपायों की सरदार है।' (तफसीर दर मन्सूर)

### आधुनिक इस्लामी नेताओं की दृष्टि में गाय

१३. भारतीय स्वातन्त्र्य संग्राम के प्रसिद्ध सेनानी हकीम अजमलखान का कहना है, 'न तो कुरान और न अरब की प्रथा ही गाय की कुर्बानी की इजाजत देती है।'

१४. जब १९२२ में मौलाना अब्दुलबारी साहब मरहूम फिरंगी महली ने जब गाय की कुर्बानी को बंद करने के लिये फतवा शाया किया था तो महात्मा गाँधी ने उनका शुक्रिया अदा किया था।

आज यूरोपीय विज्ञानवेत्ता भी मानते हैं कि गोबर में प्लेग, हैजे के कीटाणुओं को नष्ट करने की अद्भुत शक्ति है।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# वर्जीनिया में गोपालकों का उत्सव

**—सदाशिव**

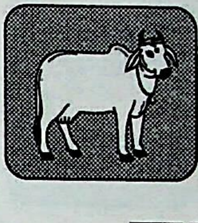

*यहाँ हमलोग प्रतिवर्ष गोरक्षा-सप्ताह सफलता के साथ मनाते हैं। ऐसे उत्सवों में जब समाज की सब श्रेणियों और विचारधाराओं के लोग योगदान करते हैं, तब बड़ा ही भव्य और मधुर रूप प्राप्त होता है। अमेरिका में होने वाले ऐसे ही एक वार्षिकोत्सव का वर्णन हम यहाँ संक्षेप से करना चाहते हैं :*

अमेरिका में 'वर्जीनिया' नामक एक राज्य है, इसका उत्तरी भाग गोरक्षा, गोसंवर्द्धन, गोपालन तथा गो-दुग्ध-व्यवसाय की दृष्टि से बड़ा महत्त्व रखता है। हमारे यहाँ के उत्सवों का समय जैसा उत्साहपूर्ण होता है, वैसा ही वर्जीनियावालों के लिये इस उत्सव का समय होता है परन्तु ये लोग इस उत्सव की ओर भी आर्थिक दृष्टि से ही देखते हैं। अत: इसका स्वरूप भी कुछ दूसरा ही होता है। इस अवसर पर आपसी व्यवहार, गोधन का पालन-पोषण, व्यवहार की कठिनाइयाँ, तथा सर्वत्र प्रकाशित होने वाले विज्ञापनों की सच्चाई आदि बातें अच्छी तरह देखी और समझी जा सकती हैं।

ऐसे उत्सवों को आकर्षक बनाने के लिये कुछ विशेष आयोजन करना पड़ता है। इस उत्सव में कुल ग्यारह जिलों के लोग सम्मिलित होते हैं। इनमें से किसी गोपसुन्दरी को इस उत्सव की रानी बनाकर उसे राजसिंहासन पर बिठाया जाता है। रानी का चुनाव सुन्दर-सुन्दर युवतियों में सौन्दर्य ही होड़ लगाकर किया जाता है। ५० हजार जनसमूह के सामने वर्जीनिया के गर्वनर इस रानी को राज्य का समुचित प्रबन्ध करने की शपथ दिलाते हैं। अनन्तर उसके मस्तक पर अपने हाथ से राजमुकुट रख उसके हाथ में राजदण्ड दिया जाता है। समस्त जनता रानी के नाम का जय-जयकार करती है।

रानी के सिंहासन पर आरूढ़ होने पर एक सहस्र विद्यार्थियों ने उसके सामने 'गोपाल-जीवन-क्रम' का एक नाटक खेलकर दिखाया। इसमें गोपालकों के जीवन के प्रत्येक अंगपर प्रकाश डाला गया था। प्रात:काल उठने पर ग्वाला किस प्रकार गाय का दूध बोतलों में भर अपने सब ग्राहकों के पास भेजता है। यह बड़े ही अच्छे ढंग से दिखाया गया था। नाटक में नाच-गाने की भरमार थी और नाटक बहुत मनोरंजक बनाया गया था। इसके पश्चात् नवयुवतियों ने हालैंड, इटली, हवाई, रूस, स्पेन, फ्रांस और स्काटलैंड की ग्वालिनों की विभिन्न वेष-भूषाओं का प्रदर्शन किया। यह कार्यक्रम इतना सफल हुआ कि सभी प्रेक्षकों ने इसकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की।

तीसरे पहर जुलूस का आयोजन था। यह विशाल जुलूस लगभग दो मील लंबा था। इसका नाम 'क्षीर-मार्ग' रक्खा गया था। इसमें नाना प्रकार के वाहनों, बैंड-बाजों, पताकाओं और फलकों का समावेश किया गया था। जनसमूह भी उमड़ पड़ा था। जुलूस वास्तव में प्रेक्षणीय था। सन्ध्या को यह जुलूस एक पाठशाला के विशाल प्रागंण में पहुँचकर समाप्त हुआ। इसके पश्चात् पाठशाला के सभागृह में नयी रानी के सम्मानार्थ नृत्य का आयोजन किया गया, इस प्रकार यह चिरस्मरणीय उत्सव समाप्त हुआ।

पर प्रश्न यह होता है कि ऐसे उत्सवों से लाभ क्या? उत्तर यह है कि इस उत्सव के कारण ग्यारह जिलों के समस्त गोदुग्ध-व्यवसायी एक स्थान पर एकत्र हुए। उन्हें परस्पर विचारों का आदान-प्रदान करने का अवसर मिला। किनमें क्या कमी है और किनमें क्या विशेषता है, यह प्रत्यक्ष दिखाई पड़ा। कौन कहाँ गलती कर रहा है और कैसे उसका सुधार होगा इसका उसे ज्ञान हुआ। साथ ही वर्जीनिया के दुग्ध-व्यवसायी देश होने का विज्ञापन भी हो गया। इतना ही क्या कम है? और वास्तव में वर्जीनिया की गोशालाओं-जैसी गोशालाएँ अन्यत्र कहीं भी नहीं दिखाई पड़तीं। इसी प्रकार यहाँ के उत्साही गोपालक, दुधारू गायें और हरे-हरे गोचरक्षेत्र कहीं भी देखने को नहीं मिलेंगें।

सारे संसार में अपने ढंग का यह एक ही उत्सव है। यदि इसमें होने वाले विलास-सम्बन्धी प्रसंगों को निकालकर और उनकी जगह शुद्ध मनोरंजन सदाचार-प्रवर्तक प्रसंगों को रखकर इस तरह के उत्सवों का प्रचार अन्यत्र भी किया जाय तो वह बहुत लाभदायक होगा। जहाँ बहुत-सी दुधारू गायें हों और जहाँ के गोपालक अपने व्यवसाय की उन्नति किस प्रकार होगी, यह जानने के इच्छुक हों, वहाँ ऐसे उत्सवों से बड़ा लाभ हो सकता है।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# बिना ताज की महारानी

"

महाकवि होमर ने युद्ध, बरजिल ने आयुध, होरेस ने प्रेम, दान्ते ने नरक और मिल्टन ने स्वर्ग का गीत गाया।

परन्तु मुझमें यदि इन सब सिद्ध कवियों की सम्मिलित प्रतिभा होती और मेरे हाथ में हजार तारों का तानपूरा होता और सारा संसार श्रोता बनकर सुनता तो मैं अपना हृदय खोलकर गौ का गीत गाता, उसके गुण बखानता और उसकी महिमा का गान यावच्चन्द्रदिवाकर अमर कर देता।

यदि मैं मूर्तिकार होता और संगमरमर पत्थर में टाँकी से अपने विचार मूर्तिमान कर सकता तो संसार की पत्थर की सब खाने छानकर विमलतम, शुभ्रतम, संगमरमर की पटिया ढूँढ़ लाता और चन्द्रज्योत्स्नासे पुलकित, निरभ्र नील आकाश से मण्डित, किसी मनोहर वन में निर्मल जल के समीप, पक्षियों के मधुर गुञ्जारव के बीच बैठकर अपने प्रेम-धर्म के पवित्र कर्म में लग जाता। उस शीतल शुभ्र संगमरमर का सारा खुरदुरापन अपनी छेनी से छीलकर उसे इतना कोमल बना लेता कि उसमें से मेरे हृदय की गौ की मूरत निकल आती। उसके विशाल, करुणामय नेत्र होते, वह अपने उभरे स्तनों में भरा हुआ पुष्टिकर पेय पान देने की प्रतीक्षा में और प्रेम से उस अमृत के लेने वालों को सुख, आरोग्य एवं बलका आशीर्वाद देती हुई दिखाई पड़ती।

गौ बिना ताज की महारानी है, उसका राज्य सारी समुद्रवसना पृथ्वी है, सेवा उसका विरद है और जो कुछ वह लेती है उसे सौगुना करके देती है।

यदि आज संसार की सब गौएँ मर जायँ या ठाठ हो जायँ तो कल ही मानव-जातिपर भयानक संकट आ पड़े। रेल और सड़कें, बैंक, कपास की फसल, इन सबके बिना हम मजे में अपना काम चला सकते हैं; पर गौ के बिना मानव-जाति रोग, और अन्त में विनाश को प्राप्त होगी। गौ का हम वह सम्मान और स्तवन करें जिसके वह योग्य है। मुझे आशा है कि ज्यों-ज्यों हमलोग ज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ेंगे, क्रूरता और स्वार्थपरता छोड़ेंगे, त्यों-त्यों उन गौओं की हत्या करना और उनका खाना भी त्याग देंगे, जो हमें बल देती हैं, सुख पहुँचाती हैं और हमारे बच्चों के प्राण बचाती हैं।

—श्री मालकम० आर० पेटर्सन०
अमेरिकी टेनेसी प्रान्त के भूतपूर्व गवर्नर "



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# गाय अमेरिकन चिंतकों की दृष्टि में

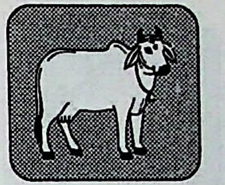

## गो माता

मैं गौ की प्रशंसा करूँगा; किन्तु यों ही साधारण दृष्टि से नहीं, वरन् इसलिए कि वह इसकी अधिकारिणी है, ऐसा करना हमारा कर्त्तव्य है। मैं गाय को भगवत्-सृष्टि के चर प्राणी-समाज में एक ऊँचे आदरणीय स्थान पर खड़ी देखना चाहूँगा। गाय से बढ़कर अन्य कोई भी पशु मनुष्य का मित्र नहीं है और न गाय जैसा कोई मधुर स्वभाव वाला है। अपने दीप्त, शान्त और ध्यानमग्न नेत्रों से संसार को देखने वाली गाय के सौम्य रूप में सचमुच देवत्व भरा है। उसमें महानता और भव्यता है, जो ग्रामदेवता के उपयुक्त है। उसमें शत-प्रतिशत मातृत्व है और उसका मनुष्य-जाति से यही माता का सम्बन्ध है।

मैं यह नहीं मानता कि गाय एक उदास, अबोध और व्यक्तित्वशून्य प्राणी है; किन्तु ऐसा न मानने वाले किसी संशययुक्त मनुष्य को यह मनाना भी मेरे लिये कठिन है। जबतक मनुष्य अपने पशु-मित्रों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार न करेगा, तबतक वह उनकी अत्यन्त प्रिय तथा मनोरम विशेषताओं के विषय में सदा अँधेरे में ही रहेगा।

—श्री वाल्टर ए० डामर ('अवर डम्ब एनिमल्स', अमेरिका)

## गौ देवी है

'गाय हमारे दुग्ध-भुवन की देवी है। वह भूखों को खिलाती है, नंगों को पहनाती है और बीमारों को अच्छा करती है। उसकी ज्योति चिरन्तन है।'

—सम्पादक 'होर्ड्स डेरीमैन', अमेरिका

## प्रगतिमान् कैसे हुए ?

जिन लोगों ने कुछ नाम कमाया है, जो अत्यन्त बली और वीर हुए हैं, जिनके समाज में बालमृत्यु की संख्या बहुत घट गयी है, जिन्होंने संसार में व्यापार-धंधे पर अधिकार किया है, जो साहित्य-संगीत-कला का आदर करते हैं तथा जो विज्ञान और मानव-बुद्धि की प्रत्येक दिशा में प्रगतिमान् हैं, वे ऐसे लोग हैं जिन्होंने गाय के दूध और दूध के बने पदार्थों का स्वच्छन्दता से उपयोग किया है।

—डॉ० ई० बी० मैक्कालम, अमेरिका



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# मानव-उन्नति गोरक्षा पर निर्भर है

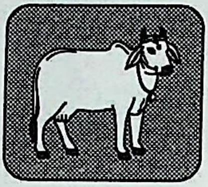

"गाय ही सभ्य मानव-समाज की धाय है। किसी भी देश की सभ्यता की उन्नति का अनुमान करने के कई साधन बताये जाते हैं। कहीं लोग पुस्तकों पर से ही मानव-सभ्यता की कल्पना करते हैं। कहीं धर्म-मन्दिरों को ही प्रधानता दी जाती है तो कहीं बैलों की वृद्धि ही इसका मूल आधार बताया जाता है। किन्तु गाय द्वारा ही संस्कृति का अनुमान लगाया जा सकता है। हमारी सभ्यता तो गो-प्रधान सभ्यता ही है (Ours is the cow-milking civilization)। जहाँ गोवंश उन्नत ना हो वहाँ श्वेतजाति का गुजर नहीं हो सकता।

हम चाहते हैं कि रूस में यान्त्रिक हल और गाय का विशेष रूप से प्रचार हो। यदि इन दो विषयों की उन्नति करने में रूस यश लाभ करे तो रूस को एक स्थायी संस्कृति के प्रवर्त्तक का पद-गौरव प्राप्त हुए बिना नहीं रह सकता।

दुग्ध-व्यवसाय (Dairy Industry) की उन्नति के द्वारा हम आनन्द, मेधा-शक्ति और समृद्धि प्राप्त कर सकते हैं। मानव-जीवन और सभ्यता का दूध के साथ एक विशेष प्रकार का सम्बन्ध है।

यूरोप में दुग्ध-व्यवसाय में अग्रणी देश डेनमार्क, हालैंड और स्विटजरलैंड हैं। इनमें से एक देश राष्ट्रसंघ का केन्द्र बना है और दूसरा सब राष्ट्रों के न्यायालय का मुख्य स्थान है। गो-वंश संस्कृति का निर्माता है या संस्कृति ही गो-वंश का निर्माण करती है, यह विचार का एक विषय हो सकता है, पर मेरे विचार में दोनों एक साथ ही रहेंगे। ('गोरक्षा')

—श्रीमिलो हेस्टिंग्स"



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# गो सेवा में काशीवासियों का कीर्तिमान

**—श्रीमती प्रभा जैन**

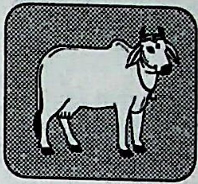

काशी निवासी सुरादेव के पास साठ हजार गाय-बैल, जैन गाथापति महाशतक और चुल्लनी पिता के पास अस्सी हजार गाय-बैल थे। इन तीनों कृषि-गौ सेवकों की चर्चा जैनधर्म के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर ने उपासक दशांग में की है। इससे ज्ञात होता है कि पच्चीस सौ वर्ष पूर्व काशी में गो सेवा का कीर्तिमान स्थापित हुआ था, जिसकी जानकारी बहुत कम लोगों को है।

चार करोड़ स्वर्ण मुद्राएँ भूमि-भवन में लगाकर, चार करोड़ व्यापार में और चार करोड़ जरूरतमंदों को कर्ज पर देकर एक उद्योगपति महावीर के पास पहुँचा और बोला—भगवान्! मैं कोई ऐसा काम करना चाहता हूँ, जिससे कुछ नया क्षेत्र खुले। 'इच्छा हु भागास समा अर्णता'— इच्छाएँ आकाश के समान अनंत हैं, इनके पीछे मत भागो। इन पर नियंत्रण करना सीखो। यही तो कठिन है, कहा उद्योगपति ने तो मुस्कराते हुए महावीर पूछ बैठे—बताओ, तुम्हारे पास हलों में जुतने वाली कितनी बैल जोड़ियाँ है और कितनी दुधारू गायें है ? उद्योगपति इस बुनियादी प्रश्न का उत्तर दिये बिना चुपचाप लौटा और दुबारा जब महावीर की सेवा में उपस्थित हुआ तो महावीर ने उसे 'व्रज का स्वामी' कह संबोधित किया। पाँच सौ जोड़ी बैल और एक हजार गाय रखने वाले को 'व्रज का स्वामी' मानकर उस उद्योगपति को श्रमणसंघ की उपासना का राज बताया कि श्रम के साथ शम (शान्ति) और सम (समता) की संगति बिठाकर समाज में अशान्ति और असमानता का निराकरण करने से ही, सिद्धि मिलती है।

साधन, साधना और सिद्धि समझ कर जिन लोगों ने गोपालन, गोसंवर्धन एवं गो उपासना की उनमें चर्चित रहे :

१. पोलासपुर का शकडाल, जिसके पास एक व्रज था।

२. वाणिज्य ग्राम के आनन्द और श्रावस्ती के सालिहिपिता व नन्दिनी पिता के पास चार चार व्रज थे।

३. चम्पानगरी के कामदेव, भाभालिका के चुल्लशतक, कम्पिल पुर के कुण्डकौशिक और वाराणसी के सुरादेव के पास छः-छः व्रज थे।

४. वाराणसी के ही महाशतकऔर चुल्लनी पिता के पास आठ-आठ व्रज थे।

गोधन रखने की कला में पारंगत आनन्द के आचार विचार की शुद्धता देखकर महावीर ने आनन्द को एक लाख उनसठ हजार श्रवणोपासकों का मुखिया बनाया, जिस की अगुवाई में काशी-वासी भारत को सोने की चिड़िया बनाने का कीर्तिमान स्थापित कर पाये।

✿✿✿

## प्लास्टिक थैलियों में पशु खाद्य सामग्री कभी ना फेंके

आधुनिक विज्ञान का चमत्कारी उत्पादन प्लास्टिक प्रारम्भ में एक वरदान सरीखा लगता था लोग उसे चमत्कृत भाव से देखते व अपनाते थे। परन्तु यही प्लास्टिक अब हमारे लिए श्राप सिद्ध हो रहा है। अपने कभी नष्ट न हो सकने वाले स्वरूप के कारण यह धरती पर कचरे का पहाड़ बनता जा रहा है तथा पर्यावरण नष्ट करने में भी प्लास्टिक की भूमिका प्रमुख है।

हमारे घरों में महिलाएँ प्रायः भोजन की जूठन फल व सब्जी के छिलके अथवा अन्य खाद्य पदार्थ प्लास्टिक थैली में डाल कूड़े में फेंक देती है। गाय तथा अन्य पशु उसे थैली सहित उदरस्थ कर लेते है, चूँकि प्लास्टिक कभी विनष्ट न होने वाला पदार्थ है अतः वह गाय या पशु के पेट में ही जमता रहता है जो उसकी अनेक बीमारियों तथा कई बार मृत्यु का भी कारण बन जाता है और हम अनजाने में ही एक पाप के भागी बन जाते हैं। कृपया ऐसे पाप के दोषी न बनें। प्लास्टिक थैलियों में भरकर कूड़े में ऐसा कुछ भी ना फेंके जो पशु खाते हों। इस प्रकार की व्यर्थ सामग्री सदैव कागज के पूड़ों में ही फेकें।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# कलियुग की कामधेनु

—योगीराज बलिराज सिंह

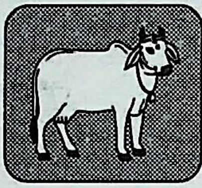

प्रभु की लीला और उसके चमत्कारों के रहस्य समझ पाना सर्वथा असंभव है, खासतौर पर जब भगवान अपनी ही बनाई महान् शक्ति-प्रकृति के नियमों से परे कुछ विलक्षण अद्भुत और अविश्वसनीय सृजन कर देता है, तो हम चमत्कृत हो जाते हैं।

गो माता की महिमा एवं महत्व की चर्चा युगों से होती आ रही है। सनातन काल से हमारे ऋषियों के आश्रम, गुरुकुल तथा राजा महाराजाओं के प्रासादों से लेकर सामान्य सद्गृहस्थों की झोपड़ियाँ तक गो माता के बिना सूनी मानी जाती रही हैं। गो माता भी हमें सदैव अपनी सेवा का प्रतिदान हमारी पालक शक्ति बन कर चुकाती रही हैं। वशिष्ठ मुनि के आश्रम में विश्वामित्र को अपने शताधिक सेवकों सैनिकों सहित पहुँचने पर गोमाता के प्रभाव से खान-पान की व्यवस्था चट-पट हो जाने से विश्वामित्र चकित हो गये। विदा की बेला में लोभवश उन्होंने वशिष्ठ जी से उसी गाय को देने का आग्रह किया तो वह तैयार नहीं हुए। उन्होंने विश्वामित्र को हर तरह से समझाया कि यह परमपूज्य गाय इस आश्रम से स्वयं ही नहीं जाना चाहेगी तो विश्वामित्र कुपित हो उठे तथा शक्तिमद में चूर वह हठी गाय को जबर्दस्ती हाँक कर ले जाने का प्रयास करने लगे तभी गाय ने विकराल रूप धारण कर उनके समस्त सेवकों सैनिकों को मार कर हँका दिया।

राजधानी दिल्ली में स्वामी करपात्री जी द्वारा स्थापित श्री धर्म संघ संस्था के प्रांगण में कुछ वर्ष पूर्व तक एक गाय बिना ब्याहे ही नियमित दूध दिया करती थी। उसका दूध पर्याप्त मधुर पौष्टिक तथा मात्रा में पर्याप्त होता था, उसका खान पान भी सामान्य ही था लेकिन रख रखाव की व्यवस्था बड़ी पवित्र थी। लोग उसके दर्शनों हेतु ही काफी संख्या में वहाँ आते थे।

गँगापुर सिटी (राजस्थान) स्थित रेलवे आवास नं० ५०४ एल ३, निवासी ठाकुर गजराज सिंह (मूल निवासी ग्राम खलुआ जि० मिर्जापुर) के पास भी एक ऐसी गाय है जो प्रकृति का चमत्कार ही कही जायेगी। सामान्य से कद-काठी वाली यह गाय इतनी सीधी है कि छोटे बच्चे उसके कान, सींग, गर्दन, पीठ को सहलाते और खिलवाड़ करते हैं तो वह प्रफुल्लित होती है। सीधा होना ही गाय का प्रथम गुण माना गया है, इसीलिए हम बहुधा सीधे सादे लोगों को गाय की उपमा देते हैं।

सामान्य रूप से गाय अधिक से अधिक एक साल दूध देती है किन्तु ठाकुर गजराज सिंह की इस गाय ने विगत सात वर्षों से बगैर ब्याहे दोनों वक्त दो दो लीटर दूध देकर लोगों को चमत्कृत कर दिया है। प्रायः गाय दुहने के लिए नाना प्रकार के प्रबंध करने होते है। सहलाना मक्खी हाँकना आदि, किन्तु इस गाय के लिए दुहते वक्त कुछ भी नहीं करना पड़ता। यदि यह बँधी नहीं रहती तो आवाज देकर बुलाने पर इंसान की भाँति समझ कर तुरन्त पास आकर खड़ी हो जाती है। ताजा ब्याही गाय की भाँति थन में हाथ लगाते ही थन में दूध उतर आता है और प्रायः २ लीटर दूध दुहने के बाद उसे छोड़ दिया जाता है तथा वह इच्छित स्थान पर चली जाती है। आरम्भ में साल पूरा हो जाने पर भी जब वह नियमित दूध देती रही तो लोगों को थोड़ा आश्चर्य हुआ लेकिन जैसे-जैसे समय व्यतीत होता गया लोगों का आश्चर्य श्रद्धा में बदलता गया और इसे चमत्कार मान लोग दूर-दूर से उस गाय का दर्शन करने आते हैं; तथा उसे कलियुग की कामधेनु के रूप में देखते हैं।

OO

**• हम किसी से कम नहीं •**

*यह धारणा सही नहीं है कि स्वदेशी प्रजाति की गायें दूध कम देती हैं। कुछ वर्ष पूर्व स्वदेशी प्रजाति की भारतीय नस्ल की करीब ५०० बछिया इजराइल भेजी गयी थीं। वहाँ उनका अच्छा विकास किया गया। ये सभी गायें विदेशी गायों की अपेक्षा अधिक दूध देती हैं। भारतीय नस्ल की एक गाय ने दुग्ध-उत्पादन में विश्व का रिकार्ड तोड़ दिया है, वह प्रतिदिन ६० लीटर दूध देती है, एक और ने तो कमाल ही कर दिया हैं जो २४ घंटे में चार बार दुही जाती है और चारों बार में १२० लीटर दूध का उत्पादन होता है। यह गाय 'गिनीज बुक ऑफ रिकार्ड' में दर्ज की गयी है।*



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# पशु-सम्पदा का यह कत्लेआम क्यों?

**—डॉ० वन्दना शिवा**

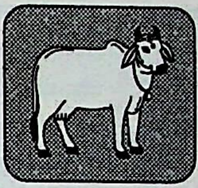

जिन बातों के कारण मुझे अपने भारतीय होने पर गर्व होता है, उनमें से एक यह भी है कि हमें विरासत में एक ऐसी पुरातन संरक्षणवादी-संस्कृति मिली है, जो बड़े सूक्ष्म और जटिल ढंग से हमेशा से यह सुनिश्चित करती रही है कि अपनी समस्त विविधता के साथ जीवन की रक्षा को प्रजातियों को विनष्ट कर नेस्तनाबूद करने के स्थान पर कहीं ज्यादा महत्व दिया जाए। पूजनीय गौ, कुंजवनों तथा उपास्य वृक्षों के माध्यम से हमारी संस्कृति का अंग बनाकर हमने इन संसाधनों के लाखों भारतीयों की आजीविका और अर्थव्यवस्था का आधार होते हुए भी अपनी धरती की जैव-विविधता बनाए रखने का रास्ता खुला रखा।

भारतीय समाज में जीवित गाय का मूल्य मृत गाय की अपेक्षा कहीं ज्यादा रहा है। इस चीज को सुनिश्चित करने के वास्ते ही उसे पूज्य बना दिया गया। ग्रामीण जीवन के लिए एक सहायक प्रणाली निर्मित करने में पशुपालन की भूमिका का महत्व ही गाय को पवित्र मानने के विचार को सार्थक बनाता है।

परिस्थितियों के लिहाज से भी गाय भारतीय सभ्यता के केन्द्र में रही है। भारत में खेती-किसानी की दुनिया ने गाय की अक्षुण्णता को बनाए रखकर ही खुद को भौतिक और वैचारिक दोनों ढंग से टिकाऊ बनाया है। इसीलिंए किसान गाय को समूची खाद्य-प्रणाली की जननी मानते हुए अवध्य और उपासनीय मानता है। हमारे देश में टिकाऊ कृषि प्रणाली का रहस्य ही यह है कि उसमें खेती और पशुपालन को एक-दूसरे से जोड़कर रखा गया है। जैव पदार्थों को एक ऐसे रूप में बदलने, जिसका इस्तेमाल पौधे आसानी से कर लें, में पशुओं की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है। स्वतंत्रता के पश्चात् भारत के पहले कृषि मंत्री के० एम० मुंशी के अनुसार ''गौ माता और नंदी की पूजा कोई यों ही नहीं की जाती। ये दोनों जीव वास्तव में प्रकृति के सबसे बड़े भूमि उपचारक हैं। वे मिट्टी को उर्वर बनाने वाले अभिकर्ता हैं। वे गोबर के रूप में वह जैव-सामग्री उपलब्ध कराते हैं, जो तनिक से परिष्कार के बाद बहुमूल्य पोषक तत्व में तब्दील हो जाते हैं। भारत में परम्परा, धार्मिक भावना और आर्थिक जरूरतों ने मिलकर मवेशियों की इतनी बड़ी आबादी खड़ी की है कि वह जीवन-चक्र को हमेशा गतिशील रखने में सक्षम हैं, बशर्ते हम इस तथ्य को जान जाएं!''

कृषि में समृद्धि के एक साधन के रूप में गाय की पवित्रता के विचार को फसल-उत्पादन के वास्ते ही उसके संरक्षण की आवश्यकता के साथ जोड़ा गया था। फसल-कचरे तथा बिना जोती हुई भूमि का उपयोग करने वाले देसी नस्ल के मवेशी मनुष्य के खाद्य में हिस्सा नहीं बटाते, बल्कि वे वह जैव-खाद प्रदान करते हैं, जो खाद्यान्न पैदावार बढ़ाने में सहायक होता है। यानी गौ को पवित्र मानने के पीछे परिस्थितिकीय तर्क और संरक्षणजनित बाध्याताएं दोनों थीं। गोबर की ऊर्जा, पोषण (दूध) तथा चमड़ा देने वाली गाय के काम को स्त्रियों द्वारा किए जाने वाले कामों यानी गाय को दाना-पानी देने, गोबर एकत्र करने तथा दूध दुहने के साथ जोड़ा गया। इसीलिए भारतीय संस्कृति में स्त्रियां पशुपालन और खाद्य-प्रसंस्करण दोनों की विशेषज्ञ मानी जाती हैं। परम्परागत दुग्ध-उत्पादन उद्योग में दही जमाने, मक्खन निकालने, उससे छांछ तथा घी बनाने आदि की जिम्मेदारी उन्हीं को सौंपी हुई थी। मवेशियों के साथ इन कामों के जरिए ही स्त्रियों ने भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान किया।

हमारा पशु-धन केवल मांस और दुग्धोपादों ही नहीं, ऊर्जा और खाद का भी महत्वपूर्ण स्रोत है। भारत की मवेशी नस्लें केवल दुग्ध-उत्पादन के लिए ही नहीं, बल्कि उनकी वहन-क्षमता को भी ध्यान में रखते हुए विकसित की गई हैं। भारत में जो 8.3 करोड़ बोझ ढोने-खींचने वाले पशु हैं, उनमें से 7.2 करोड़ तो बैल ही हैं। यह उल्लेखनीय है कि गांवों की दो-तिहाई खींचने-ढोंने संबंधी आवश्यकताएं जिन 8 करोड़ भारवाहक मवेशियों द्वारा पूरी हो रही हैं, उनमें से 7 करोड़ तो उन्हीं की नर-संतानें हैं, जिन्हें पाश्चात्य पुरुषप्रधान नजरिया ''बेकार, कम दूध देने वाली गायें'' कहकर तिरस्कृत करता है। हिसाब लगाया गया है कि यदि हम कृषि-क्षेत्र से पशु-बल को हटाना चाहें तो भारत को प्रति वर्ष पेट्रोल पर कोई 32 हजार करोड़ रुपए खर्च करने होंगे। भारत के मवेशी सालाना खाद के रूप में सात करोड़ टन



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उपयोग किया जा सकने योग्य गोबर उत्सर्जित करते हैं। इसमें से आधी मात्रा का उपयोग ईंधन के रूप में होता है और जो ताप उससे निर्मित होता है, वह 2.7 करोड़ टन केरोसीन, 3.5 करोड़ कोयले या 6.8 करोड़ टन लकड़ी के बराबर होगा। ये सभी भारत के दुर्लभ संसाधन हैं। शेष गोबर का उपयोग उर्वरक के रूप में होता है। जहाँ तक अन्य मवेशी-उत्पादों का सवाल है, केवल इतना कहना ही काफी होगा कि अस्थियों, चमड़े आदि के निर्यात से प्रति वर्ष देश को 450 करोड़ रुपए से भी ज्यादा की आमदनी होती है। सीमित संसाधनों की पृष्ठभूमि में हमारे देसी मवेशी विभिन्न प्रकार से उपयोगी साबित होते हैं।

भारत में मवेशी उन्हें उपलब्ध किए जाने वाले जैव-पदार्थों के 29 प्रतिशत का, ऊर्जा के 22 प्रतिशत तथा 3 प्रतिशत प्रोटीन का उपयोग करते हैं। इसके विपरीत अमेरिका में वहां के गहन मवेशी-उद्योग में मूक-प्राणी इनको क्रमश: 9, 7 और 5 प्रतिशत का उपयोग करते हैं। भारत में जहाँ मवेशी उनके द्वारा खाए गए दाने-चारे से कहीं ज्यादा खाद्य पदार्थ प्रदान करते हैं, वहीं अमेरिका में मवेशियों से जितना खाद्य प्राप्त होता है, उससे छह गुना ज्यादा उन्हें खिला दिया जाता है।

नई आर्थिक नीतियों के चलते न केवल मवेशियों की विविध प्रजातियां लुप्त हो रही हैं, बल्कि उनकी आबादी भी घट जाने का अंदेशा है। हर तरफ वधशालाएं खड़ी हो रही हैं और सरकार टिकाऊ कृषि के लिए पशु सम्पदा का संवर्धन और संरक्षण करने के बजाय मांस के निर्यात को प्रोत्साहन दे रही है। हम जिन्दगी की अर्थव्यवस्था को त्याग मौत की अर्थव्यवस्था को अपना रहे हैं। जहाँ प्रतिदिन हजारों गायों-बैलों को वध-शालाओं का रास्ता दिखलाया जा रहा है, वहीं सरकारी आंकड़े गौ-मांस को पाड़े के मांस के रूप में दर्ज कर इस क्रूर असलियत को छुपा रहे हैं। सन् 1991 में नई आर्थिक नीति लागू होने के बाद से मांस तथा मांस-उत्पादों के निर्यात में लगभग 25 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

मौत की यह अर्थव्यवस्था केवल मांस के निर्यात में ही उपस्थित नहीं है। बल्कि पशुवध तथा मांस-निर्यात को बढ़ावा देने के उद्देश्य से जैव-विविधता संरक्षण के काम में भी विकृतियां लाई जा रही हैं। सरकार ने विश्व बैंक को जैव-विविधता संरक्षण की 28 करोड़ रुपए लागत वाली जो परियोजना भेजी है, उसमें आरक्षित वनों के आसपास मांस-उद्योग स्थापित करना भी शामिल है। इस परियोजना के मसविदे में ''फर के लिए खरगोश पालन'', ''मांस-बाजार हेतु शूकर-पालन'' तथा ''अण्डों और मांस के लिए कुक्कुट पालन'' जैसे सुझाव भी दिए गए हैं।

पशुवध पर आधारित अर्थव्यवस्था न केवल जैव-विविधता संरक्षण के उद्देश्यों के खिलाफ जाती है, बल्कि अब यह तथ्य भी सर्वविदित है कि गहन-मवेशी-उद्योग तथा उससे संबंधित मांस का व्यापार ही प्रदूषण और पर्यावरण-विनाश का एक बहुत बड़ा कारण है।

सच बात तो यह है कि यदि हम अपनी जैव-विविधता-सम्पदा की रक्षा करना चाहते हैं तो हम अपने मवेशियों को मुर्दा-मांस में बदले की हिमाकत नहीं कर सकते। जैव-उर्वरकों तथा पुनर्उपयोग योग्य ऊर्जा के वास्ते हमें जिंदा पशुओं की जरूरत है। बिना पशु-धन के भारतीय कृषि को टिकाऊ बनाया ही नहीं जा सकता। उनके परिस्थितिकीय कार्यों से परे प्राणियों की जिंदगी का भी अपना मोल हैं, यही हमारी संस्कृति हमें सिखलाती है। मांस का निर्यात तथा मांस उद्योग और उसके व्यापार को जो बढ़ावा दिया जा रहा है वह हमारे गम्भीर सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों का सरासर उल्लंघन तो है ही, वह जैव-विविधता पर आधारित जीवन्त अर्थव्यवस्था की बुनियाद को भी ध्वस्त कर देगा।

पशु कल्याण बोर्ड ने मांस और मांस-उत्पादों के निर्यात पर बंदिश लगाने के उद्देश्य से एक प्रस्ताव पारित किया है। इसी संकल्प को पशु कल्याण पर दिल्ली के विज्ञान भवन में 30.11.94 तथा 1.12.94 को आयोजित सेमीनारों में भी दुहराया गया था।

मूक-प्राणियों के अधिकारों तथा हमारे कृषि आधार के संरक्षण के लिए पहले तो हमें मांस के निर्यात पर रोक लगानी होगी और मांस के व्यापार के लिए मवेशियों के कारखानों में पालन-संवर्धन हेतु सरकारी सब्सीडियां देने की व्यवस्था भी खत्म करनी होगी। भारत का हर वह नागरिक जो जीवदया में विश्वास करता है, जिसे टिकाऊ कृषि से सरोकार है तथा जो भारतीय संस्कृति से लगाव रखता है, उसके द्वारा वध और हत्या पर आधारित इस अर्थव्यवस्था का पुरजोर विरोध किया जाना चाहिए। स्वतंत्र व्यापार के इस युग में, जबकि हर चीज का मूल्य डॉलर में आंका जाता है, तथा किसी चीज का कोई वक्त और मूल्य नहीं रह गया है, यह हम सभी का पुनीत कर्त्तव्य बनता है कि मातातुल्य गाय की हम मौत के तिजारतियों से रक्षा करें।

---

**आज भारत का मुख्य प्रश्न है पर्याप्त परिमाण में दूध का मिलना और गो-वंश को सुधारना।—कर्नल मैक-कैरिसन**



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# गाय आध्यात्मिक व भौतिक जगत का सर्वोत्कृष्ट जीव

—नंदिता बागची

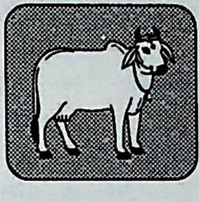

गाय आध्यात्मिक व भौतिक जगत के सर्वोत्कृष्ट जीवन के रूप में इस धरातल पर अवतरित हुई है। संसार के समस्त देवताओं का वास कलिकाल में इस जीव में है। इसलिए समस्त आध्यात्मिक कार्य यथा पूजा-पाठ, यज्ञ, महोत्सवों आदि में इसका स्थान सर्वोपरि माना गया है। शास्त्रकारों ने गाय की महिमा को व्यक्त करते हुए कहा है—

गाओ ममाग्रतो संतो गाओ में संतु देवता,
गाओ में हहये संतु गवाम् मध्ये वसाम्यहम्।
यज्ञ साधन भूताय: विश्वास्या यौध नाशिनी
विश्वरुप धरु देव: प्रियताम अनयागव:॥

अर्थात् समस्त यज्ञ आदि के साधन के रूप में गाय का विशिष्ट महत्व शास्त्रों में बताया गया है। भौतिक परिप्रेक्ष्य में गाय का व्यापक महत्व है। वैज्ञानिकों के अनुसार गाय का गोबर, गोमूत्र अनेक रोगों के निदान में औषधि के रूप में अति लाभकारी है। दूध का भी अत्यंत वैज्ञानिक व प्रामाणिक महत्व है। अनादि काल से गाय मानव के पोषण में माता की भूमिका का निर्वाह करती आ रही है। माता की परिभाषा उस शाब्दिक रूप से है जो बालक को दूध पिलाती है। इसी परिप्रेक्ष्य में गाय को माता की श्रेणी में रख हम उसे पूजनीय व आदरणीय स्थान देकर उसके प्रति आदर व्यक्त करते हैं। गाय के दूध के संबंध में अनेक अनुसंधान व शोध कार्य हो रहे हैं। शोध के द्वारा यह रहस्य सत्य में तब्दील हो रहा है कि गाय जिस स्थान, जिस वातावरण में रहती है मानव स्वास्थ्य की दृष्टि से भी वह जगह लाभदायक होती है। जिस प्रकार नीम के वृक्ष के रहने से दूषित वायु शुद्ध होती है उसी प्रकार गाय के रहने पर अनेक आकस्मिक बाधाओं व प्राकृतिक आपदाओं का शमन होता है। अत: इस परिप्रेक्ष्य में गाय अत्यंत ही महत्वपूर्ण व पूज्यनीय पशु है। इसकी उपयोगिता आज के समय में बहुत ही अधिक है। अत: गाय के संवर्धन, पोषण व संरक्षण के लिए उसकी रक्षा करना मानव का प्रथम धर्म है। एतदर्थ वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारत के प्रत्येक नागरिक का यह आवश्यक कर्तव्य होता है कि वह इस महत्वपूर्ण जीव के संवर्धन व पोषण के लिए निष्ठा व समर्पण के साथ आगे आये व इसके कल्याण के लिये जहाँ तक संभव हो सके प्रयास करे।

पूर्वजों तथा पुराणों द्वारा इसे प्रतिपादित करने के लिए यह एक महोत्सव के रूप में हमारे सामने दृष्टिगोचर होता है जिसे हम् गोपाष्टमी महोत्सव के रूप में जानते हैं। इस दिन गाय की पूजा आदि का अत्यंत ही व्यापक महत्व शास्त्रों में बताया गया है। किन्तु मेरी दृष्टि में पूजा का अर्थ गाय की रक्षा और विकास के रूप में लेना समीचीन होगा। अत: भारतीय वाङ्मय में गाय का अत्यंत ही महत्वपूर्ण स्थान माना गया है।

❀❀❀

## गृहणिया ध्यान दें

आप गृहलक्ष्मी और धर्म की प्रतिपालक हैं, गौग्रास की सनातन परम्परा का निर्वहन करें। गोग्रास हेतु अपने रसोईघर में गोग्रास गोलक अवश्य रखें तथा रसोई ग्रहण से पूर्व गो का ध्यान कर गोलक में यथासाध्य धन नियमित अर्पित करें।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



५ करोड़ टन दूध प्रतिदिन गोमाता भारत को देती है। करोड़ों गैलन गोमूत्र रूपी हानिरहित कीटनाशक प्राप्त होता है। राष्ट्र की कुल बिजली शक्ति का ७० प्रतिशत भाग पशु शक्ति से पैदा हो सकता है।

# विचार तुला

## गो रक्षा

१. हमें एक साथ हजारों बच्चों को दूध मिलने की संभावना बढ़ती है। दूध के दाम कम होंगे।
२. दूध, दही की नदियाँ बहेंगी।
३. देश एवं देशवासी खुशहाल होंगे।
४. कृषि प्रधान देश की कृषि योग्य भूमि का सही पोषण होगा।
५. देश की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होगी एवं सुधरती जायेगी।
६. गोबर से श्रेष्ठ खाद मिलेगी।
७. अन्न की पौष्टिक शक्ति बढ़ेगी।
८. प्रदूषण दूर होगा।
९. बेरोजगारी कम होगी।
१०. गांवों से शहर की तरफ पलायन घटेगा।
११. दूध, मक्खन, गोबर, रासायनिक खाद का आयात एवं विदेशों पर निर्भरता घटेगी।
१२. गोबर से करोड़ों टन तेल के बराबर उर्जा प्राप्त हो सकती है।
१३. गोमूत्र से लाभदायक कीटनाशक मिलेगा।
१४. कैमिकल खाद आयात में खर्च होने वाली विदेशी मुद्रा की बचत होगी।
१५. भूकम्प, अनावृष्टि, अतिवृष्टि, अकाल आदि महामारी की संभावना नहीं होगी।
१६. जल की उपलब्धता बढ़ेगी—भूमि के अन्दर का स्तर ऊँचा रहेगा, भूजल शुद्ध रहेगा।
१७. बीमारियाँ दूर होंगी—लोग स्वस्थ होंगे।
१८. देश के संविधान, अनेक कानूनों, सर्वोच्च न्यायालय के आदेश, स्वतंत्रता के समय जनता को दिये गये वादों का सम्मान होगा।
१९. कृषि एवं यातायात बैल से होगा। सस्ता पड़ेगा। अन्न दाल, सब्जी के दाम कम होंगे। निर्यात बढ़ेगा। अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होगी।
२०. भारत के बहुसंख्यक हिन्दुओं की धार्मिक भावना को जो मर्मान्तक आघात पहुँचता आ रहा है वह शान्त होगा। सब खुश होंगे। कोई दुखी नहीं होगा।

## गोहत्या

१. हमें एवं हमारे बच्चों को दूध नहीं मिलेगा। दूध के भाव बढ़ते जायेंगे।
२. खून की नदियाँ बहेंगी।
३. देश व देशवासी दुखी होंगे।
४. कृषि प्रधान इस देश की भूमि बंजर होती चली जायेगी।
५. देश की अर्थव्यवस्था गिरती जायेगी बिगड़ती जायेगी।
६. श्रेष्ठ खाद से वंचित रहना होगा।
७. अन्न की पौष्टिक शक्ति घटेगी।
८. प्रदूषण (हर तरह का) बढ़ेगा।
९. बेरोजगारी बढ़ेगी।
१०. गावों से शहर की तरफ पलायन बढ़ेगा।
११. दूध पाउडर, मक्खन, गोबर, रासायनिक खाद, का आयात एवं विदेशों पर निर्भरता बढ़ेगी।
१२. उर्जा का यह स्रोत नष्ट होता जायेगा।
१३. जहरीला कैमिकल कीटनाशक-कीड़ों के साथ-साथ हमारा भी सफाया कर रहा है।
१४. खाद आयात में विदेशी मुद्रा का व्यय एवं विदेशों पर निर्भरता बढ़ती जायेगी।
१५. अकाल, अनावृष्टि, भूकम्प आदि महामारियों की संभावना बढ़ेगी।
१६. भूमि के अन्दर का जल स्तर घटेगा। वह जल प्रदूषित होता जा रहा है एवं जल की उपलब्धता कम हो रही है।
१७. बीमारियाँ बढ़ती जायेंगी। प्रत्येक घर में लोग अस्वस्थ होंगे। पापबुद्धि, दुष्टबुद्धि बढ़ेगी।
१८. देश के संविधान, सर्वोच्च न्यायालय के आदेश, अनेक कानूनों एवं स्वतंत्रता के समय जनता को दिये गये वादों का असम्मान होगा।
१९. कृषि एवं यातायात ट्रैक्टरों से करना होगा। कृषि उत्पादों के दाम बढ़ते जायेंगे। प्रदूषण बढ़ेगा। पेट्रोल, डीजल का आयात बढ़ेगा। अर्थव्यवस्था चरमरा जायेगी।
२०. कोई भी धर्म गाय जैसे सीधे साधे सर्वहितकारी पशु की हत्या का निर्देश नहीं देता। हिन्दू उसे ''माँ'' मानते है। उनकी पीड़ा बढ़ती जायेगी। गो हत्यारे भी दुष्कर्म के कंटकदायक फल पाकर दुखी ही होंगे।

गाय के घी से यज्ञ करने पर वायुमण्डल शुद्ध होता है। १ तोला घी से १ टन आक्सीजन। गोबर से लीपे मकान में रेडियो धर्मी किरणें प्रवेश नहीं कर सकतीं। गोबर गोमूत्र में हैजा, क्षय, अतिसार आदि १०८ बीमारियां दूर करने की शक्ति है।

१ गाय १ वर्ष में ३६०० रू० का चारा खाती है। एवं २०००० रु० की खाद देती है।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# सेंद्रिय (कम्पोस्ट) खाद और रासायनिक खाद

## विचार तुला

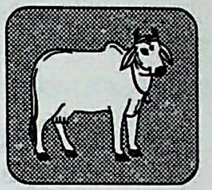

### सेंद्रिय (कम्पोस्ट) खाद

१. जमीन और फसल की खुराक है।

२. नत्र स्फुरद, पलाश के साथ-साथ इनमें फसल को आवश्यक सोलह प्रकार के सूक्ष्म द्रव्य मिलते हैं।

३. जमीन का पोत टेक्चर अच्छा होता है। उसकी उर्वरा-शक्ति बढ़ती है।

४. जमीन की उर्वराशक्ति बढ़ाने वाले, उसे सच्छिद्र बनाने वाले केंचुए एवं अन्य जीवाणु बढ़ते हैं। जमीन भुरभुरी बनने से हवा, पानी, प्रकाश का मुक्त संचार उस में होता रहता है जिससे जमीन का तापमान, आर्द्रता का संतुलन बना रहता है। और रोग-जंतु पर नियंत्रण आता है।

५. कम बारिश के समय पानी पकड़ कर रखती है, अधिक बारिश होने पर पानी की निकासी करती है। कड़ी धूप में ठंडक और कड़ी ठंड के सनय गरमी पहुँचाती है।

६. आहिस्ता-आहिस्ता पोषण देती है। जिससे पौधे को आवश्यकतानुसार सम्पूर्ण जीवनकाल में पोषण मिलता रहता है और खाद पर किये खर्च का अधिकाधिक लाभ मिलता है।

७. मल, मूत्र, कूड़ा कर्कट का इस्तेमाल कंपोस्ट में होने से वातावरण सुन्दर, स्वास्थ्यप्रद बनता है।

८. इस खाद की उपज स्वास्थ्यप्रद सुरुचिपूर्ण और दीर्घकाल तक टिकती है।

### रासायनिक खाद

१. यह रसायन है।

२. सूक्ष्म द्रव्यों का इनमें सर्वथा अभाव है।

३. जमीन का टेक्चर बिगाड़ता है। आये दिन उसकी मात्रा बढ़ाते जाना आवश्यक होने से जमीन दिन-ब-दिन कमजोर और अंततः बंजर हो जाती है। मात्रा बढ़ाते जाने से खर्च भी बढ़ता है।

४. जमीन को बनाने वाले, उर्वरता बढ़ाने वाले जीवाणु इसके इस्तेमाल से मर जाते हैं। जमीन अधिकाधिक कड़ी बनती है। जोत का खर्च बढ़ता है। बैलशक्ति के बजाय ट्रैक्टर, अधिक शक्तिशाली ट्रैक्टर की शरण लेनी पड़ती है।

५. धारणाशक्ति कम होने से बारम्बार सिंचाई की आवश्यकता होती है, भारत के कई हिस्सों में पानी का अभाव है कड़ी धूप और कड़ी ठंडक से बचाव नहीं करती।

६. यह तुरन्त घुल जाती है इसलिए अधिक वर्षा हुई तो पानी के साथ जमीन के अंदर चली जाती है या पानी के साथ बह जाती है। कम बारिश में फसल को सुखाती है। कम अवधि में इसकी शक्ति समाप्त होने से इस पर किये गये खर्च का पूरा लाभ नहीं मिल सकता है।

७. हवा, जमीन, पानी, वनस्पति में प्रदूषण बढ़ाते हैं।

८. इससे उपजायी चीजें बेस्वाद, हानिकर और तुरन्त सड़ने गलने लगती है।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

९. यह खाद हम अपने ही गाँव में, अपने ही खेत में और अपने ही परिवार के लोग और अपने ही पशुओं की मदद से बना सकते हैं।

९. कारखानों से या विदेशों से आती है। जिससे हमारा पैसा परिवार, गाँव और देश के बाहर जाता है।

१०. गोबर, मिट्टी, कूड़ा-कर्कट, श्रम पानी जिनके सहयोग से यह खाद बनती है, वे चीजें आसानी से प्राप्त होती हैं और चिरंतन हैं।

१०. खनिज पेट्रोल आदि चीजें सीमित मात्रा में उपलब्ध हैं। चंद वर्षों में यह समाप्त होंगे तब रासायनिक खाद का अकाल पड़ेगा और रासायनिक खाद के भरोसे होने वाली खेती मूकी रहने से फसलें नहीं उगा सकेंगी।

११. गाँव में या अपने ही खेत पर यह खाद बनती है इसलिए मनुष्य शक्ति और पशुशक्ति से आसानी से इसकी ढुलाई हम कर सकते हैं।

११. इसके ढुलाई में जहाज, रेल, ट्रक, ट्रैक्टर इनका बड़े पैमाने पर इस्तेमाल होने से हमारे सीमित आवागमन के साधनों पर अनावश्यक बोझ पड़ता है। इनको चलाने वाली ऊर्जा महँगी है, विदेशों से आती है और सीमित भी है। विदेशों से पेट्रोल खरीदने के लिए अरब राष्ट्रों को उसके बदले में मांस देना पड़ता है। जिससे हमारे देश के एक करोड़ उपयुक्त गाय-बैल और मासूम बछड़े काटे जा रहे हैं। १९७२ में हम २ हजार टन मांस बाहर भेजते थे। अब एक लाख टन का सरकार ने लक्ष्य रखा है।

१२. इससे हम स्वावलंबी बनते हैं।

१२. किसान की गर्दन उद्योगपति, व्यापारी और विदेशियों के हाथों में जाती है। शोषण भी होता है।

१३. करीब पैंतालिस हजार करोड़ रुपयों की खाद गाँवों में बनेगी। नगरों में भी पाँच हजार करोड़ रुपयों की खाद बनेगी। गाँव गरीबी भुखमरी और बेरोजगारी से मुक्त होंगे। गरीबी रेखा मिटेगी। और एक लाख करोड़ रुपयों का अतिरिक्त उत्पादन बढ़ेगा।

१३. देश को कर्जे में ले डुबोयेगी। आगे चलकर उत्पादन भी ठप्प होगा।

१४. गोबर से यह खाद बनती है इसलिए बूढ़े जानवर भी उपयुक्त साबित होंगे। गोवंश हत्या थमेगी। हमारी भारतीय संस्कृति अक्षुण्ण रहेगी।

१४. यह यांत्रिक प्रणाली की पक्षधर होने से अंततोगत्वा पशुओं को विशेषकर बैलों को खा जायेगी। आज ही हमारे देश में बैलों की कमी है और आवश्यक संख्या में ट्रैक्टर उपलब्ध नहीं हैं और न होंगे। हुए भी तो उतना डीजल नहीं मिलेगा। ट्रैक्टर न घास खायेगा, न दूध देगा, न बैल देगा, न खाद देगा बल्कि हवा में प्रदूषण भी बढ़ायेगा।

**कुल मिलाकर सेंद्रिय खाद मानव-जाति के लिए वरदान है और रासायनिक खाद अभिशाप है।**

## गोमाता—विटामिनों का जीवित कारखाना

एक विज्ञान-शास्त्री ने कहा है कि गौ का पेट क्या है विटामिनों का कारखाना है। अमेरिका के पेंसीवेनिया कालेज के वैज्ञानिकों ने अनुसन्धान किया है कि विटामिन 'बी' गौ के पेट में सतत बनता ही रहता है। गोमूत्र में भी इस विटामिन का तत्त्व रहता है। अतएव गौ का दूध तथा गोमूत्र सभी गव्य पदार्थ उपकारी हैं।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

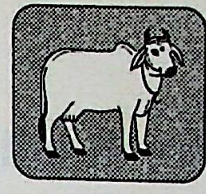

# गो-पालन के बाईस सूत्र

१. नये अच्छे नन्दी (साँड़) बनाओ और साँड़ का ही दान करो।
२. गोदान की जगह पहले चारे-दाने का दान करो।
३. गोचरभूमि अधिक-से-अधिक छुड़वाओ, खरीदकर गाँवों को कृष्णार्पण कर दो। यह बड़े पुण्य का कार्य है।
४. मारी हुई गाय के चमड़े की कोई चीज व्यवहार न करने की प्रतिज्ञा कर लो। मरी हुई गाय के चमड़े का सामान व्यवहार करो।
५. नये-नये ढंग का चारा बर्तना आरम्भ करो।
६. दाबघास (साइलेज) बनाओ, चारा कुटाई तथा चारा काटने के लिये यँत्रो से काम लो।
७. गायों की खूब सेवा करो। उन्हें रोज मालिश करो, धोओ, नहलाओ, और बीच-बीच में डुबकी लगवाकर नहलवाते रहो।
८. गाय और उसके परिवार की जन्मपत्री और उनकी उन्नति का हिसाब रक्खो।
९. गाय के दूध-घी की पैदायश को देखकर उसी अनुपात से चारा-दाना दो।
१०, गोबर को जलाना छोड़ दो। उसके बदले में लकड़ी पैदा करो और उसे जलाओ।
११. गोबर-गोमूत्र, कूड़े-कचरे और घास-चारे की बची रद्दी से वैज्ञानिक ढंग पर खाद बनाओ।
१२. मिश्रित खेती करो।
१३. पिंजरापोलों के विविध अंगों का विकास करके उन्हें आदर्श गोलोक बना लो।
१४. गोपरीक्षण और निरीक्षण के लिये संघ कायम करो।
१५. सहकारी-पद्धति से दुग्ध-व्यवसाय और उसकी रक्षा का कार्य करो।
१६. दुग्धालय की सहकारिता और बुद्धिमत्ता के साथ वैज्ञानिक ढंग से व्यवस्था करो।
१७. पूँजी की सुव्यवस्था करो।
१८. तेलहन को कभी विदेश जाने न दो। तेल भले ही जाय। इससे व्यापर की तो उन्नति होगी ही, खास करके खली से पशुओं की और पृथ्वी की बड़ी पुष्टि होगी।
१९. गायों को रोगग्रस्त मत होने दो। सफाई, चिकित्सा तथा अन्य उपायों से उन्हें सदा निरोगी रक्खो।
२०. बछड़ों को बधिया करने की क्रूर चाल बंद कर दो। जिनको बधिया करना हो, उन्हें पहले ही वर्ष डॉक्टर बोर्डीजो के निकाले हुए चिमटे से करा लो। इसमें उन्हें कोई कष्ट नहीं होगा।
२१. बैलों के प्रति भार ढोने और हल जोतने में जुल्म न हो, इसका पूरा-पूरा ख्याल रक्खो।
२२. भगवान् की कृपा-शक्ति पर विश्वास रखकर विज्ञान, विवेक और श्रद्धा के साथ गोवंश की उन्नति के इन कामों को शुरू करो। इनको चलाते रहो।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# गाय ही क्यों?

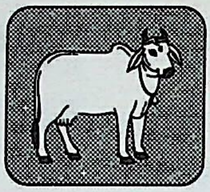

**अद्भुत जीव गोमाता :**

अमेरिका के कृषि विभाग द्वारा प्रकाशित पुस्तक (The cow is wonderful Laboratory) (गोमाता एक आश्चर्यजनक रसायनशाला है) समस्त दुग्धधारी चतुष्पाद जीवों में गोमाता ही एक ऐसा जीव है, जिसकी आंत 180 फुट लम्बी होती है। इसकी विशेषता यह है कि जो ग्रहण करती है, उससे जो दूध में कौटोरीन नामक पदार्थ बनता है, वह भैंस के दूध से दस गुना अधिक होता है।

एक जर्मन वैज्ञानिक डॉक्टर जोसिस वेल्ज लिखित किताब में वर्णित है कि 'भारत में गाय क्यों पूजी जाती है?' वे लगभग तीन महीने भारत के गाँवों में रहे और भ्रमण किया तब उन्होंने जो पुस्तक लिखी है उसमें उन्होंने बहुत आंकड़े दिये हैं। उससे यह सिद्ध होता है कि भारतीय गायें जो दुर्बल दिखाई देती हैं, देश के लिए बहुत आर्थिक योगदान कर रही हैं। एक महत्वपूर्ण बात उन्होंने अपनी पुस्तक में लिखी है कि जब यह पशुधन गाँव में नहीं रहेगा तो कम से कम 10 करोड़ से 20 करोड़ आदमी गाँवों से शहरों की ओर पलायन करेंगे।

**भारतीय नस्ल की गायें :**

भारतीय नस्ल की गायों के दूध, घी, मूत्र और गोबर में जो गुण हैं, वह विदेशी प्रजाति जैसे आस्ट्रियन, जर्सी, फ्रिजीयन अथवा इन नस्लों के साथ वर्णसंकर हुई भारतीय प्रजाति की गायों में ये गुण उस मात्रा में नहीं पाये जाते।

**भारतीय नस्ल की गाय :**

गुजरात में अनेक स्थानों पर 40 लीटर दूध देने वाली भारतीय गायें सुलभ हैं। भारतीय गायों पर विदेशों में भी शोध विस्तृत रूप से प्रगति पर है। **इसराईल ने गीर-नस्ल की गाय से 120 लीटर दूध प्रतिदिन उत्पादन करके दुनिया को बता दिया कि ''भारतीय गाय'' आज भी दूध की सर्वश्रेष्ठ गाय है।** यह गाय ''गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड'' में हैं।

सरकार समर्थ गौशालाओं को गीर, साहीवाल, थारपारकर, राठी, हरियाणवी जैसी स्वदेशी दुधारू नस्ल के सांड तथा गायें उपलब्ध करके सांड उत्पादन केन्द्र के लिए अनुदान दें तो गोशालायें अपनी ओर से भारतीय गायों में ही नस्ल सुधार सकती हैं। इससे 4-5 साल बाद सूखे चारे व खली-बिनौले-दाने से 4-5 लीटर प्रतिदिन दूध देने वाली नई नस्ल की गायों से किसान का जीवन स्तर सुधारा जा सकता है। हरी घास व उत्तम पोषण आहार मिलने पर यही गायें 10 से 25 लीटर दूध प्रतिदिन दे सकती हैं। हरियाणा, गुजरात व इसराईल में इसके असंख्य उदाहरण हैं।

**गोपालक श्रीकृष्ण की बंशी :**

गोदोहन-बेला के पूर्व प्रात:काल बंशी की ध्वनि में राग ललित, रागविभास, भैरवी, आसावरी के स्वर निकालने पर अल्प समय में अतिशीघ्र दूध निकल आता है। गरुड़ पुराण में मृत्यु के बाद वैतरणी पार करने का माध्यम गाय को ही माना है।

पशु किसी कार्य को करने के लिए जितनी शक्ति का प्रयोग करता है उसको ''भारवाहक पशु शक्ति'' कहा जाता है। भारत में इस प्रकार की शक्ति की कोई कमी नहीं है। भारत में करीबन आठ करोड़ कार्य योग्य पशु हैं। यद्यपि कोई वैज्ञानिक आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, तथापि विश्वास से कहा जा सकता है कि प्रत्येक पशु से 0.5 अश्वशक्ति या 30 अरब वाट ऊर्जा प्राप्त होती है। इतनी क्षमता के ऊर्जा शक्ति केन्द्र स्थापित करने के लिए 30 अरब रुपयों से भी अधिक लागत आयेगी।

**भारत में गाय को पशु माना ही नहीं गया क्योंकि पशु का पालन मानव को करना पड़ता है, किन्तु गाय मानव का पालन करती है। गाय प्रकृति द्वारा प्रदत्त दूध का भण्डार, जैविक खाद, कीटनाशक दवाओं का प्राकृतिक कारखाना एवं बिना पूंजी का चलता-फिरता बिजलीघर है। गाय अखूट आयुर्वेदिक औषधियों का जीवन्त भण्डार है और मात्र इसी लोक में ही नहीं, परलोक में भी वैतरणी पार कराने वाली नैया है।**

सच पूछा जाये तो गाय का कोई विकल्प है ही नहीं, न दूध की गुणवत्ता के मामले में, न जैविक खाद के मामले में, न बैलों द्वारा प्रदत्त लाभदायक ऊर्जा के मामले में और न ही अनेको उपयोग में आने वाले अमृत तुल्य गौमूत्र के मामले में। इन सब उपयोगों दो देखकर ही गौ की पूजा की जाती है। गौपालन को धार्मिक आधार दिया गया और गौ के प्राणों को मानव के प्राण से भी अधिक महत्व दिया गया। भारतीय वांग्मय ऐसी कथाओं से भरा हुआ है।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# गोपालन में हरा चारा का महत्व

—भवानीशंकर सिंह

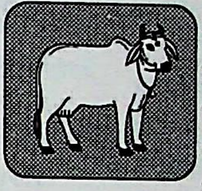

श्री गोस्वामी तुलसीदास जी ने गोपालन का मार्मिक दृष्टांत प्रस्तुत किया है जिसमें आध्यात्मिकता के साथ व्यावहारिक उपादेयता भी निहित है।

मानस की संदर्भित कुछ चौपाइयां यहाँ उद्धृत हैं—

सात्विक शद्धा धेनु सुहाई। जौ हरिकृपा हृदय बस आई॥
जप तप व्रत जम नियम अपारा। जे श्रुति कह सुम धर्म अचारा॥
तेइ वृन हरित चरै जब गाई। भाव बच्छ सिसु पाई पेन्हाई॥
नोई निवृत्ति पात्र विस्वासा। निर्मल मन अहीर निज दासा॥
परम धर्ममय पत्र दुहि भाई। अवटै अनल अकाम बनाई॥

उपर्युक्त चौपाइयों में गोपालन के कतिपय महत्वपूर्ण पक्षों पर प्रकाश डाला गया है जिसमें सर्वप्रथम गोपोषण में हरा चारा का महत्व बताया गया है।

गोपालन में भक्ति एवं ज्ञान दोनों आवश्यक हैं अर्थात् श्रद्धा और विश्वास दोनों ही अपेक्षित हैं। गो सेवा के प्रति निष्ठा या श्रद्धा ही गोभक्ति है। गोपालन के विभिन्न पक्षों की वैज्ञानिक जानकारी अर्थात् ज्ञान भी आवश्यक है।

पहले हरा चारा के सबसे बड़े श्रोत नाना प्रकार की पौष्टिक एवं स्वादिष्ट घासों से लहलहाते विस्तृत गोचर क्षेत्र या चरागाह होते थे। जो कालान्तर में जनसंख्या के दबाव, अविवेकपूर्ण भूमि के उपयोग एवं त्रुटिपूर्ण शासकीय नीतियों के कारण बराबर संकुचित होते गये। वर्तमान समय में अनेक क्षेत्रों में चरागाह नाममात्र को रह गये हैं। जिन क्षेत्रों में कुछ चरागाह हैं, वे अनियंत्रित चराई के कारण तथा प्रबन्ध के अभाव में परती, ऊसर, बीहड़ और बंजर में बदलते जा रहे हैं। चूंकि हरा चारा गोपोषण हेतु महत्वपूर्ण है, इसलिए विकल्प के रूप में हरा चारा की फसलें उगाना आवश्यक हो गया है।

**१. ज्वारचरी—**

ज्वार हरा चारा की बहुप्रचलित फसल है। इसकी बोआई साधारण तथा वर्षा ऋतु के प्रारम्भ में जून-जुलाई के महीने में की जाती है। यदि सिंचाई का साधन हो तो पलेवा करके मई में भी बो सकते हैं। इसे अच्छी बरसात हो जाने पर ही पशुओं को खिलाना चाहिए क्योंकि गर्मी के सूखे मौसम में ज्वार में एक विषैला पदार्थ उत्पन्न हो जाता है जो पशुओं के लिये घातक हो सकता है। चारे के लिए ज्वार की किस्मों में मीठी ज्वार (रिमो), पी०सी० 6, पी० सी० 1, यू०पी० चरी 1 व 2 तथा पन्त चरी-3 प्रमुख हैं।

चारे हेतु ज्वार 70 दिन में तैयार हो जाती है। अधिक पौष्टिकता हेतु फूल आने पर कटायी करनी चाहिए। किस्मों के अनुसार हरे चारे की उपज 300 से 400 कुन्तल प्रति हेक्टर प्राप्त हो जाती है।

**२. मीठी सूडान—**

एक से अधिक कटायी के लिए यह हरा चारा की अच्छी किस्म है। ज्वार में पाया जाने वाला विषैला पदार्थ (हाइड्रोसायनिक अम्ल) मीठी सूडान में अल्प मात्रा में ही होता है। अतः इसे वर्षा से पहले भी पशुओं को खिलाया जा सकता है। यदि सिंचाई का साधन हो तो इसे मार्च-अप्रैल में बोकर सितम्बर तक 3 कटाइयां की जा सकती हैं। जून-जुलाई में बोने पर एक या दो कटाई ही मिल सकती है।

पहली कटाई बोने के 60 दिन बाद तथा बाद की कटाई 30 से 35 दिन के अंतर पर की जा सकती है। हरे चारे की उपज 500 से 700 कुन्तल प्रति हेक्टर प्राप्त हो जाती है।

**३. मक्का—**

इसका चारा मुलायम होता है तथा पशु चाव से खाते हैं। संकर मक्का के उत्पादित बीज हरा चारा हेतु बोआई के लिए सस्ता और उपयुक्त होता है। यदि सिंचाई का साधन उपलब्ध हो तो मक्का की बोआई मैदानी क्षेत्र में सूखे मौसम में भी की जा सकती है। वैसे हरा चारा हेतु मका की बोआई के लिये फरवरी से जून तक तथा सितम्बर से नवम्बर तक का समय अधिक उपयुक्त रहता है।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बोआई के 60 से 75 दिन के बाद कटाई की जा सकती है। मंजरी निकलने की अवस्था ठीक होती है। हरे चारे की औसत उपज 250 से 350 कुन्तल प्रति हेक्टर हो जाती है।

**४. बरसीम—**

यह एक पौष्टिक हरा चारा है। विशेष रूप से दुधारू पशुओं के लिए अधिक उपयोगी है। बरसीम बोने का उपयुक्त समय अक्टूबर का महीना है। बरसीम से दिसम्बर से अप्रैल तक हरा चारा प्राप्त होता है। बरदान, जे०बी०-1 तथा बी०एल० 10 प्रमुख प्रजातियाँ हैं। बरसीम की पहली कटाई बोने के 45 से 50 दिन बाद, दूसरी तथा तीसरी कटाई 25 से 30 दिन के अन्तर पर तथा बाद की कटाइयां 20 दिन के अन्तर पर करनी चाहिए। कटाई जमीन के 8 से 10 से०मी० ऊपर से करना चाहिए। यदि बीज उत्पादन करना हो तो फरवरी के बाद कटाई नहीं करनी चाहिए और अन्तिम कटाई के बाद 15 दिन तक सिंचाई रोक देना चाहिए।

पांच-छः कटाइयों में बरसीम से प्रति हेक्टर 7 सौ से 8 सौ कुन्तल हरा चारा हो जाता है। बीज की उपज 2 से 3 कुन्तल प्रति हेक्टर हो जाती है।

**५. लोबिया—**

इसका चारा अत्यन्त पौष्टिक होता है। सिंचाई की सुविधा होने पर इसकी बोआई फरवरी से जून तक तथा असिंचित दशा में वर्षा ऋतु के प्रारम्भ में की जा सकती है। रशियन जायन्ट, यू०पी०सी० ५२८६ तथा यन०पी०-3 अच्छी किस्में हैं। एक हेक्टर की बोआई के लिये 40 किलोग्राम बीज लगता है। यदि बोआई छिटकवां की जाय तो बीज की मात्रा सवागुनी कर देना चाहिए। बीज की बोआई कूंड में करना अच्छा होता है। कतार से कतार की दूरी 30 से०मी० रखना चाहिए।

लोबिया के हरा चारा की कटाई बोआई के 2 से $2\frac{1}{2}$ माह बाद फली बनने की अवस्था में की जाती है। प्रति हेक्टर 250 से 300 कुन्तल हरा चारा प्राप्त हो जाता है।

**६. ग्वार—**

ग्वार के लिए अच्छी जल निकासी वाली बलुई दोमट भूमि उपयुक्त होती है। असिंचित क्षेत्रों में वर्षा ऋतु में अकेले अथवा ज्वार बाजरे के साथ मिला कर बो सकते हैं। यदि सिंचाई की सुविधा हो तो इसकी बोआई अप्रैल से जून तक भी कर सकते हैं। ग्वार की उन्नत किस्मों में टाइप-2, एफ०एस० 277, एच० एफ०जी०119 तथा एच० एफ० जी०156 प्रमुख हैं।

**७. नेपियर—**

यह हरा चारा की एक बहुवर्षीय फसल है। इससे अप्रैल से लेकर अक्टूबर तक हरा चारा प्राप्त होता है। जाड़े में इसकी बढ़वार बहुत कम होती है। इसे दोमट उपजाऊ भूमि में जहाँ सिंचाई की सुविधा हो उगाया जा सकता है। नेपियर के जड़पुंज एक मीटर के अन्तर पर मार्च या जुलाई में लगाने चाहिए। एक हेक्टर के लिए दस हजार जड़पुंज की आवश्यकता होती है। पूसा जायंट और हाईब्रिड अच्छी उपज देने वाली किस्में हैं।

वर्ष में 5 से 6 अन्तर से 300 से 500 कुन्तल प्रति हेक्टर हरा चारा प्राप्त हो सकता है। तीन वर्ष के बाद नेपियर का खेत बदल देना चाहिए।

दुकान : ३२०१६२
निवास : ३१२३५६, ३१२७१८

**श्री नारायण प्रसाद विष्णु प्रसाद**

मेवा, मसाला, किराना के व्यापारी

चौक, वाराणसी-221001



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला
## वाराणसी

**पन्द्रह वर्षों के शासक-मण्डल तथा प्रबन्धकारिणी समिति के सदस्यों की नामावली**

| | शासक मंडल | | प्रबन्धकारिणी समिति | |
|---|---|---|---|---|
| वि. सं. | अध्यक्ष | मंत्री | अध्यक्ष | मंत्री |
| २०४०-४१ | श्री काशी प्रसाद अग्रवाल | श्री काशीनाथ चौधरी | श्री बृजपालदास | श्री पुरुषोत्तमदास मोदी |
| २०४१-४२ | " | श्री मुरारीलाल केडिया | " | " |
| २०४२-४३ | " | " | " | श्री दीनानाथ झुनझुनवाला |
| २०४३-४४ | " | " | " | श्री रघुनाथ प्रसाद अग्रवाल |
| २०४४-४५ | " | श्री राजकुमार जैन | " | " |
| २०४५-४६ | " | " | " | " |
| २०४६-४७ | " | " | " | श्री अशोक कुमार सराफ |
| २०४७-४८ | " | " | " | " |
| २०४८-४९ | " | " | " | " |
| २०४९-५० | " | " | " | " |
| २०५०-५१ | श्री पुरुषोत्तमदास मोदी | " | " | " |
| २०५१-५२ | " | " | श्री राधेश्याम खेमका | " |
| २०५२-५३ | " | " | श्री ब्रजमोहन मूँदड़ा | श्री अरुण आशर |
| २०५३-५४ | " | " | " | श्री देवेन्द्र कुमार बजाज |
| २०५४-५५ | श्री राधेश्याम खेमका | श्री ब्रजमोहन मूँदड़ा | श्री श्रीगोपाल गोयल | श्री भरत लडिया |
| २०५५-५६ | " | " | " | " |

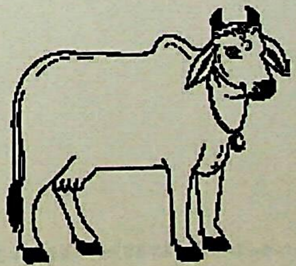



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संख्या————

# सोसाइटी के नवीकरण का प्रमाण-पत्र

नवीकरण संख्या———— 1996

फाइल संख्या I— 1210 —

एतद्द्वारा प्रमाणित किया जाता है कि दि काशी जीवदया विस्तारिणी गौशाला एवं पशुशाला ———— को दिये गये रजिस्ट्रीकरण प्रमाण-पत्र संख्या 70/1934-35 दिनांक 26.2.1935 को दिनांक 10-10-95 से पांच वर्ष की अवधि के लिए नवीकृत किया गया है।

100/- रुपये की नवीकरण फीस सम्यक रूप से प्राप्त हो गयी है।

दिनांक 23.5. 1996

सोसाइटी के रजिस्ट्रार,
उत्तर प्रदेश।

पी०एस०यू०पी०—ए०पी० 5 फार्म्स निबंधक—6-2-82 (2757)—1992—1,50,000 (हि०)।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भारत सरकार
कार्यालय आयकर आयुक्त,
इलाहाबाद ।

सी०सं०58-59 ।182/78-79/तक०/96-97 दिनांक 27.3.97

सेवा में,
प्रधान मंत्री
मे० श्री काशी जीव दया विस्तारिणी गौशाला एवं पशुशाला
के० 50/25 दुल्हिनजी रोड (गोलघर) वाराणसी

विषय:-आयकर अधिनियम की धारा 80जी0 के अधीन मान्यता प्रदान करने के लिए अनुरोध -

============

उपरोक्त विषय पर दिनांक.............को आपको नवीनीकरण ।याचिका।पेटिशन। के संदर्भ में आपको सूचित किया जाता है कि...........................................
...मे. काशी जीव दया विस्तारिणी गौशाला एवं पशुशाला
...........के. 50/25 दुल्हिनजी रोड (गोलघर) वाराणसी
को दिया गया संदाय आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80जी0 के अन्तर्गत दानदाता के पक्ष में करमुक्त होगा । बशर्ते उसकी रकम प्राविधानहित सीमा से अधिक न हो ।

यह कर मुक्ति तारीख 1-4-96 से तक 31-3-99 तक वैध है ।

ह०/—
।राज किशोर श्रीवास्तव।
आयकर आयुक्त, इलाहाबाद ।

सी०सं० 58-59 ।182/78-79/तक०/96 दिनांक....27-3-97....



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

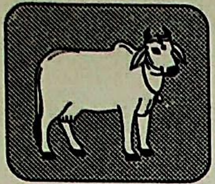

# पशुओं के प्रमुख रोगों के लक्षण व उपचार

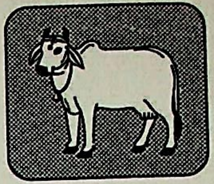

| प्रमुख रोग | लक्षण | उपचार | रोकथाम |
|---|---|---|---|
| गलाघोंटू (H.S.) | यह छूत की बीमारी बुखार (104-107 F) गर्दन, गले तथा जबड़े में सूजन, साँस लेने में कठिनाई के कारण घुर्र-घुर्र की आवाज, मुँह-नाक एवं मलाशय की झिल्लियों में सूजन तथा स्राव का आना, तीव्र प्रकोप में जानवर की शीघ्र मृत्यु। | 1. स्ट्रेपटो माइसीन तथा क्लोरमफेनिकाल<br>2. सल्फामीजाशीन (33-1/3%)—नस में अथवा खाल में 50 ml.<br>3. आक्सीटेट्रासाइक्लिन 20-80 ml. नस में अथवा माँस में एवं पेडनीसोलॉन (10 ml.)अथवा बीटामेथासोन—(2.5 ml.)माँस में<br>4. आक्सीटेट्रसाईक्लिन अथवा सल्फामीजाथीन को खिलाया जा सकता है।<br>5. सूजन के स्थान पर गर्म सेंक करें। | वर्षा ऋतु से पूर्व गला घोंटू गा टीका लगवायें। |
| पोंका पोकनी (R.P.) | छूत की बीमारी, तेज बुखार, मुँह में छाले, पतले, बदबूदार एवं रक्त मिश्रित दस्त, कमजोरी के साथ 3-6 दिन में पशु की मृत्यु। | 1. सेकेन्ड्री इन्फेक्शन की रोकथाम के लिए<br>2. सल्फामीजाशीन (33-1/3%)50 से 100 ml. नस में अथवा खाल में।<br>3. आक्सीटेट्रासाइक्लिन 20-80 ml. नस अथवा माँस में।<br>4. मुँह को फिटकरी, पोटास अथवा बोरिक एसिड के पानी से धोवें।<br>5. दस्त अवरोधक चूर्ण व टेट्रासाइक्लिन अथवा सल्फामीजाथीन खिलायें। | अक्टूबर-नवम्बर में प्रतिवर्ष पोंकनो का टीका लगवायें। |
| खुर एवं मुँह पका (F.M.D.) | छूत की बीमारी, तेज बुखार, मुँह तथा खुर के बीच में छाले पड़ना, जानवर का लंगड़ाना तथा मुँह से पानी गिराना, विदेशी व संकर जाति में जानवरों की अधिक मृत्यु होती है। | 1. मुँह के छालों को पोटाश या फिटकरी के पानी से धोना चाहिए।<br>2. खुरों को तूतिया या फिनाइल के पानी से धोना चाहिए।<br>3. पेन्सिलीन का टीका 10 से 40 लाँख यूनिट माँस में | प्रतिवर्ष ऋतु से पूर्व F. M. D. का टीका लगवायें। |
| लंगड़ा-लगड़िया (B.Q.) | जवान जानवरों में छूत की बीमारी, काफी तेज़ बुखार कन्धे अथवा पुट्ठों में सूजन, सूजन को दबाने पर गैस जैसी आवाज, सूजन में छेद करने पर काला खून, प्रारम्भ में लंगड़ाहट तथा बाद में जानवर उठ नहीं पाता है। | 1. पेन्सलीन, आक्सीटेट्रासाइक्लिन तथा फ्लोरमफेनिकाल | वचाव के लिए B. Q. के टीके लगवायें। |
| एन्थैक्स-विसहरी | छूत की बीमारी, तेज बुखार के साथ अचानक मृत्यु, मुँह, नाक, मलाशय से रक्त का निकलना। | 1. आक्सीटेट्रासाइक्लिन तथा क्लोरमफेनिकाल<br>2. स्ट्रेप्टो पेन्सिलिन 2.5 gm. से 5 gm. तक माँस में | इनडमिक क्षेत्र में प्रति वर्ष एन्थ्रेक्स स्पोर वैक्सीन का टीका लगवायें। |
| सर्रा | रुक-रुक कर बुखार, जानवर का बेचैनी तथा चक्कर काटना, अक्सर खड़ा रहना, आँखों का अभरना, आँख की झिल्लियों का लाल होना, जंजीर का खींचना। | 1. 4-4 डाइ एमीडीनोडाईएजो एमीनो बेंजीन डाई एसीटुरेट टेट्राहाइड्रेट 3-6 gm. माँस में (बेरेमिल)<br>2. क्वीन पायरामीन सल्फेट -1gm. खाल में<br>3. एण्टीमनी पोटेशियम टारट्रेट 1gm. + 20 ml. D.W. के साथ नस में<br>4. टूपन ब्लू 1gm. + 30 ml. D.W. के साथ नस में<br>5. एन्ट्रासाइड प्रोसाल्ट) | |

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# गोशालाओं में हरे चारे की सतत आपूर्ति कैसे?

—डॉ० एस० एन० सिंह

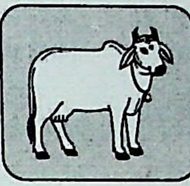

भारतीय संस्कृति में गाय का महत्व सर्वविदित है। अत: उसके भोजन, रखरखाव, सुश्रुषा के विषय में पर्याप्त साहित्य उपलब्ध है।

वैदिक काल में जब आर्यावर्त जम्बू द्वीप में जनसंख्या कम थी पशुपालन चराई के द्वारा होता था। पशुओं को पर्याप्त भोजन हरे चारे के रूप में उपलब्ध हो जाता था। परन्तु कालान्तर में जैसे-जैसे जनसंख्या में वृद्धि हुई धरती का अधिकांश हिस्सा अनाज पैदा करने में उपयोग होने लगा। प्राय: चारागाह सुप्त हो गए। अनेक जानवर बाँधकर नाद पर खिलाए जाने लगे। यहीं से पशुओं को संतुलित आहार देना अनिवार्य हुआ।

जानवरों के संतुलित चारे की कल्पना हरे चारे के अभाव में की ही नहीं जा सकती।

वर्तमान में हरे चारे की कुल आवश्यकता की लगभग तिहाई मात्रा ही उपलब्ध है, हरे चारे के उत्पादन के लिए अतिरिक्त भूमि की उपलब्धता असम्भव है। अत: हमारे सामने केवल एक ही विकल्प है कि वैज्ञानिक विधियों का भरपूर उपयोग करके उपलब्ध भूमि में अधिक हरा चारा पैदा करें और उत्पादित चारा आवश्यकता से अधिक हो तो भविष्य के लिए उसे इस प्रकार संरक्षित करें कि उसकी पौष्टिकता बनी रहे साथ ही साथ वह हरा भी रहे।

गोशालाओं पर अधिकतर उसरिली उबड़-खाबड़ भूमि उपलब्ध है जो असमतल है और वहाँ पर कमजोर परित्यक्त कट्टू गायें है। इस प्रकार बेकार भूमि एवं बेकार गायों को कारगर बनाना आज की समस्या है।

अतीत काल में गोशालाओं को पर्याप्त दान उपलब्ध हो जाता था जिससे गायों की सेवा भली प्रकार की जाती थी। समय के परिवर्तन के साथ-साथ शनै: शनै: धार्मिक आस्था कम होने के कारण गोशालाओं की आय में कमी हो रही है अत: समय की मांग है कि उपलब्ध संसाधनों का अधिकतम उपयोग करके गोशालाओं को आत्म निर्भर बनाया जाय इस दिशा ने रामेश्वर गोशाला में अभिनव प्रयोग किया है। बेकार भूमि, बेकार गाय को कैसे उपयोगी बनाया जाय यह प्रयोग यहाँ देखा जा सकता है। प्रजनन, प्रबन्ध एवं संतुलित आहार देकर गायों को इस प्रकार बनया गया है कि उसमें अधिकांश दुधारू हो गयीं हैं।

हरे चारे के अन्तर्गत पशुओं के सभी आवश्यक भोज्य तत्व जैसे-जल, वसा, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खनिज एवं विटामिन उपलब्ध होते हैं यह हरा चारा गोशाला की भूमि पर सरलता से पैदा किया जा सकता है। उत्तर प्रदेश में खरीफ के अन्तर्गत जर, मक्का, बाजरा, मूँग, गर लोबिया प्रमुख रूप से उगाया जाता है। इसी प्रकार रवी में जई, वरसीम, लूसन पैदा किया जाता है। दो फसलों के अन्तराल में सामान्यतया हरे चारे की कमी होती है। अगर इसके लिए पहले से योजना बना ली जाये तो इस कठिनाई का समाधान सरलता से निकल आयेगा। उदाहरणार्थ 15 सितम्बर या अधिक से अधिक 30 सितम्बर तक खरीफ चारे की फसलें समाप्त हो जाती हैं। चारे की फसलें दिसम्बर के पूर्व उपलब्ध नहीं होतीं अस्तु अक्टूबर एवं नवम्बर माह में चारे का अकाल पड़ जाता है इसी प्रकार रवी चारा 15 मार्च या कभी-कभी 31 मार्च तक सुगमतापूर्वक उपलब्ध होता है। खरीफ चारा जून के पहले उपलब्ध नहीं होता। इस सन्धिकाल अर्थात् अप्रैल एवं मई में हरे चारे की उपलब्धता न्यून हो जाती है। गोशाला प्रबन्धकों को सुनियोजित प्रबन्ध करके अक्टूबर-नवम्बर एवं अप्रैल मई में चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिए।

चारे की फसलों का यदि हम अध्ययन करें तो लगभग सभी फसलें बोने के 50 या 60 दिन बाद पशुओं के खिलाने लायक हो जाती हैं। अत: अक्टूबर नवम्बर में चारे की फसलें बोनी होंगी अगस्त में बाजरा एवं सितम्बर में मक्का उगाया जा सकता है।

इसी प्रकार अप्रैल एवं मई में हरे चारे की उपलब्धता के लिए फरवरी एवं मार्च में चारे की फसल बोने की तैयारी करनी होगी 15 फरवरी के बाद 31 मार्च तक संकर मक्का आसानी से बोया जा सकता है। जो अप्रैल एवं मई में चारे की कमी को पूरा कर सकता है।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इसके लिए आवश्यक है कि फसल नियोजन इस प्रकार किया जाय कि अगस्त एवं सितम्बर तथा फरवरी एवं मार्च में चारा बोने के लिए खाली खेत उपलब्ध हों यदि किसी कारणवश खेत खाली न मिले तो जो खेत बोये गये हों और जिसमें कमजोर चारे की फसल हो तो उसे उखाड़ कर जोतकर नई फसल बो दें।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि खाली खेत होने एवं पूरी तैयारी करने के बाद भी हम चारे की फसल नहीं बो पाते क्योंकि सतत् वर्षा के कारण भूमि जोतने लायक नहीं रहती उसमें पानी लगा रहता है इसलिए आवश्यक है कि जब आप फसल नियोजन करें तो कम से कम पूरे क्षेत्र का दसवाँ हिस्सा बहुवार्षिक चारे की फसलों के अन्तर्गत रखे। जहाँ पानी लगता हो वहाँ चारा घास सरलता से लगायी जा सकती है।

ऊँची भूमि जहाँ पानी न लगता हो और सिंचाई उपलब्ध हो नेपियर N. B.-21, अन्जना अथवा सुबबूल बोया जा सकता है। केवल दिसम्बर से फरवरी तक इनसे चारा नहीं मिल सकता बाकी सभी-महीनों में 30 दिन के अन्तराल पर इनकी कटाई की जा सकती है। नेपियर और सुबबूल अथवा अन्जना की सह ठोती भी 5 फिट के अन्तराल पर की जा सकती है पहले सुबबूल की पत्तियों में माइमोसीन नामक एक पदार्थ मिलता था जिसके खाने से पशुओं के बाल गिर जाते थे और कभी-कभी गर्भपात भी हो जाता था परन्तु आनन्द (गुजरात) एवं भरारी (झाँसी) के वैज्ञानिकों ने संकरण करके सुबबूल की ऐसी प्रजाति विकसित की है जिसमें मामोलीन नहीं है। इन बहुवार्षिक हरे चारे से अक्टूबर-नवम्बर एवं अप्रैल-मई में हरे चारे की कमी दूर की जा सकती है।

रामेश्वर प्रक्षेत्र पर नेपियर एवं सुबबूल से उसर सुधार का कार्य सरलता से और कम पैसे में उपलब्ध संसाधनों से किया गया। इसके लिए 5 फिट की कतार में 3 फिट की दूरी पर एक फिट व्यास के गढ्ढे खोद लिए गये उसमें अच्छी मिट्टी, गोबर की खाद आधा-आधा भराई की गयी तत्पश्चात् वर्षा ऋतु में सुबबूल मेपियर की रोपाई की गयी। कालान्तर में खाली जमीन में भली प्रकार निकाई गुड़ाई करके गोबर की खाद भर दी गयी इस प्रकार नेपियर एवं सुबबूल के साथ मिट्टी का P. H. भी कम होता गया।

कभी-कभी खरीफ अथवा रवी में हरा चारा आवश्यकता से अधिक हो जाता है उसका संचय कर लेना चाहिए और जब हरे चारे की कमी हो इस संचित हरे चारे को खिलाना चाहिए।

इस संचय की विधि को साइलेज बनाना कहते हैं। ऐसे क्षेत्रों में जहाँ जल स्तर ऊपर हो साइलेज द्वीप में बनाना चाहिए अन्यथा इसे गेर में बनावे। सुविधानुसार गढ़ा या द्वीप कच्चा या पक्का हो सकता है। वढ़िया साइलेज तैयार करने के लिए गढ़े या कृंषि को न्यूनतम समय में भरना चाहिए, उसकी हवा बाहर निकल जाये। भराई से यदि मिट्टी का प्रयोग करते हैं तो इसी दिन उसमें दरारें पड़ी दिखाई देती है। दरारों को तत्काल भर देना चाहिए। इस संरक्षित चारे का सुविधानुसार प्रयोग करें।

OO



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# गाभिन गाय की देखभाल क्यों और कैसे

( डॉ० के०के० वैश्य )
पशुचिकित्सा अधिकारी

गर्भावस्था में गाय का शारीरिक भार बढ़ जाता है। इस भार के बढ़ने के दो कारण होते हैं। एक कारण यह कि गाय का स्वयं शारीरिक भार बढ़ता है तथा दूसरा गर्भस्थ शिशु का भार बढ़ता है। ऐसी अवस्था में गाभिन गायों की देखभाल करने की जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। जैसे :

खानपान—रख-रखाव—बीमारी से बचाव

**खानपान**

शक्तिदायक पदार्थों एवं प्रोटीन-खनिज लवण-विटामिन के अभाव में पशुओं में समयानुसार शारीरिक बढ़वार नहीं होती। तरुणाई प्राप्त होने पर उपरोक्त तत्वों के अभाव में गाय गर्भित नहीं होती। विटामिन ए की कमी के कारण नियमित रूप से गर्भित नहीं होती अगर गर्भवती हो भी जाती है तो भ्रूण मर जाता है। कभी-कभी मरा बच्चा उत्पन्न होता है। और गाय अनियमित रूप से गर्भित होती है।

अत: गर्भित गाय के पालन पोषण में प्रमुख बिन्दु यह है कि गाय को जीवन निर्वाह के अतिरिक्त बच्चे की बढ़वार के लिये भी पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। गर्भ अवस्था के अन्तिम पाँच या छ: माह के बाद बच्चे में सब से अधिक बढ़वार होती है। इस अवस्था में गाभिन गाय को अधिक पोषक आहार देने की आवश्यकता है। अच्छा चारा एवं दाना जिसमें उचित मात्रा में प्रोटीन, कैल्शियम-फास्फोरस, विटामिन देना चाहिए जैसे—

| | | |
|---|---|---|
| 1. | मूँगफली की खली | 14 भाग |
| | गेहूँ का चोकर | 44 भाग |
| | अरहर या चने की चुनी | 40 भाग |
| | मिनरल मिक्स्चर | 1 भाग |
| | नमक | 1 भाग |
| 2. | सरसों की खली | 20 भाग |
| | गेहूँ का चोकर | 44 भाग |
| | मूँग-अरहर चने की चुनी | 34 भाग |
| | संतुलित मिश्रण | 1 भाग |
| | नमक | 1 भाग |
| 3. | सरसों की खली | 20 भाग |
| | जौ | 20 भाग |
| | चने का छिलका | 18 भाग |
| | गेहूँ का चोकर | 40 भाग |
| | मिनरल मिक्स्चर | 1 भाग |
| | नमक | 1 भाग |

गर्भाधान के अन्तिम दो-तीन माह में $1\frac{1}{2}$ - 2 कि० संतुलित दाना मिश्रण खिलाने से आवश्यकतानुसार पूर्ति हो जाती है। पशु को विटामिन ए के लिए हरा-चारा तथा कैलशियम एवं फास्फोरस के लिये संतुलित खनिज मिश्रण दाने में मिला कर खिलाना चाहिए।

**कैल्शियम तथा फास्फोरस**—इन दोनों खनिज का एक दूसरे से बड़ा ही आन्तरिक घनिष्ट सम्बन्ध है। इनकी कमी से बच्चे में तथा उसके उत्पन्न होने में कमी और कष्ट दोनों ही पैदा हो जाते हैं। इनकी कमी से दूध उत्पादन में कमी आ जाती है बच्चा कमजोर होता है। भण्डारा दिखाना, पुरैन फेंकना तथा खेड़ी का फंस जाना या न गिरना इन्हीं के कारण होता है। खनिज लवण जो बाजार में मिनरल मिक्स्चर के अनेक नामों से बिकते हैं उनको खिलाने से इनकी कमी को पूरा किया जा सकता है। कैल्शियम को चूने के पानी के रूप में देने से भी कैल्शियम की कमी पूरी की जा सकती है।

**आयोडिन**—इसका भी शरीर में रहना अत्यन्त आवश्यक है। यह थाइरोक्सीन हारमोन बनाने के काम आता है। इसकी कमी में गाय अविकसित बच्चों को जन्म देती है। बच्चा कमजोर हो सकता है अथवा मरा हुआ भी हो सकता है। इसकी पूर्ति अच्छे सन्तुलित मिनरल मिक्स्चर द्वारा की जा सकती है।

**कोवाल्ट और कापर**—शरीर में रक्त बनाने के लिए इसका शरीक होना अति आवश्यक है। इसका मुख्य प्रभाव गायों को गर्भ धारण के समय पड़ता है अगर इसकी कमी अभी से शरीर में हो गई तो इसका प्रभाव भविष्य में अधिक पड़ता है।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

**विटामिन्स**—विटामिन ए०डी०ई० की शरीर में आवश्यकता अधिक पड़ती है। विटामिन ए० हरे चारे में प्रचुर मात्रा में मिलते हैं जहाँ हरा चारा नहीं मिलता वहाँ इसको इन्जेक्शन, पाउडर तथा मिक्स्चर के रूप में अवश्य देना चाहिए। इसकी कमी से गाय नियमित रूप से गर्भित नहीं हो पाती और गर्भित होती भी है तो ठहर नही पाती है और यदि गाभिन हो भी जाती है तो आने वाला बच्चा अंधा पैदा होता है। खड़े होने की शक्ति नहीं होती या मरा हुआ पैदा होता है। इसकी कमी से गायों की आँखों से पानी बहता रहता है। आँख से कीचड़ आता रहता है। खेड़ी फंस जाती है और दूध देने में कमी आ जाती है। इसको देने से माँ तथा बच्चे दोनों की देखभाल हो जाती है।

गर्भित गायों के खानपान के साथ यह भी ध्यान रखना चाहिए कि आहार संतुलित हो एवं गाय के गर्भस्थ बच्चे की और यदि दूध दे रही है तो दूध उत्पादन की आवश्यकताएँ पूरी हो ताकि बच्चा देने के बाद दूध एवं फिर दुबारा गाभिन होने तक कि प्रक्रिया में कोई कमी न आये यह तब ही सम्भव है जबकि गाभिन जानवर की पूर्ण रूप से देख रेख की जाय।

## रख-रखाव

गर्भित गाय को केवल संतुलित आहार देना ही आवश्यक नहीं है बल्कि अच्छी देखभाल की भी आवश्यकता है। गाभिन जानवर को ऐसे वातावरण में रखना चाहिए जहाँ अधिक गर्म और अधिक ठण्डा न हो। जहाँ तक हो सके अन्य पशुओं की भीड़-भाड़ से बचाना चाहिये। अगर पशु चरने जाता है तो ऐसी जगह न भेजें जहाँ अधिक ऊँचे नीचे गड्ढ़े हों, नाले हों, रेलवे लाइन हो उबड़-खाबड़ जगह, ऐसी जगहों पर जानवर को कूदना-फांदना-चढ़ना उतरना पड़ता है। कभी-कभी ऐसा करने पर बच्चेदानी पलट जाती है, तो बच्चा देते बड़ा कष्ट होता है। यह बड़ी ही खतरनाक स्थिति होती है। कभी-कभी जानवर बच्चा भी फेंक देता है।

**अन्य**—अलग पशुओं से अलग रखना इसलिए उचित है कि कभी-कभी जानवर आपस में लड़ जाता है। जिसके परिणाम अच्छे नहीं होते हैं। समय पर नहलाना एवं व्यायाम कराना चाहिए जो जानवर के चरने से पूरा हो जाता है। एडवांस प्रेगनेन्सी होने पर भी पशु दूध देते रहते हैं ऐसे जानवरों का दूध धीरे-धीरे सुखा देना चाहिए। कम से कम 72 दिन का समय होना चाहिए।

## बीमारी से बचाव

प्रसूत रोग, मिल्क फीवर-भण्डार-पुरैन खेड़ी का फंसना, कमजोर बच्चा, अन्धा अथवा मृतक बच्चा, आँख पानी कीचड़ आदि से बचने के लिए उपयुक्त मात्रा में संतुलित, खनिज मिश्रण के रूप में, चूने का पानी, खड़िया मिट्टी मिनरल मिक्स्चर-विटामिन ए का प्रयोग करना चाहिए एवं समय-समय पर पशु चिकित्सक से सलाह भी लेना उचित है।

गाभिन गाय की डिर्वयिंग (पेट से कीड़े निकालने की दवा) करना आवश्यक है। ताकि बच्चे के पेट में मां के द्वारा केंचुए न आयें अधिकतर बच्चे पैर फैला कर सिर पटक कर एवं पोंक कर मर जाते हैं।

दूध को सुखाते समय हर थन में एक एक कीटाणुनाशक ट्यूब चढ़ा देना चाहिए ताकि आगे भविष्य में थनैली रोग न हो यह बचाव का सबसे अच्छा तरीका है।

गाभिन गाय से दूध जबरन लेना अच्छा नहीं है। कुछ लोग लालचवश दूध लेने के वास्ते सुई का प्रयोग करते हैं जो गाय के स्वास्थ्य एवं बच्चें के स्वास्थ्य के लिये दोनों को हानिकारक तो हैं ही साथ-साथ कभी-कभी गाय बच्चा भी फेंक देती है। इससे दोनों का क्या तीनों का नुकसान होता है पशुपालक के सहित।

**कार्यालय उपनिदेशक पशुपालन विभाग**
**वाराणसी**



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला

## गोवंश का विवरण-१९९७-९८

४५५८-५५

### बावनबीघा

| गाय | बैल | साँड़ | बाछा | बाछी | योग |
|---|---|---|---|---|---|
| १७३ | ८ | ६ | ६७ | ६४ | ३१८ |

### सदर

| गाय | बैल | बाछा | बाछी | साँड़ | योग |
|---|---|---|---|---|---|
| ३६ | — | ८ | २५ | ३ | ७२ |

### रामेश्वर

| क्रम संख्या | गोशाला का नाम | गाय | बैल | साँड़ | बाछा | बाछी | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १. | श्री रामेश्वर गोशाला | ३९ | ६ | ३ | २० | ४८ | ११९ |
| २. | श्री मधुबन गोशाला | १५२ | १२५ | ११ | २५ | ८३ | ३९६ |
| ३. | श्री वृन्दावन गोशाला | १२८ | ५ | ७ | — | ३ | १४३ |
| ४. | श्री पंचशिवाला गोशाला | ०१ | — | ३ | ४० | १४ | ५८ |
| | सर्वयोग | ३२० | १३६ | २४ | ८५ | १४८ | ७१३ |

### चारा एवं दुग्ध उत्पादन - १९९७-९८

| | | |
|---|---|---|
| दुग्ध बावन बीघा | — | ४७९७७-००० लीटर |
| हरा चारा बावन बीघा | — | ७८४०-९० कुन्तल |
| दुग्ध सदर | — | १००७०८-५०० लीटर |
| दुग्ध रामेश्वर | — | २०८५४८-०० लीटर |
| हरा चारा | — | २४५९०-४२ कुन्तल |



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# वाराणसी में कार्यरत अधिकारी व कर्मचारियों की सूची

## वर्ष 1998 दिनांक 18-10-98

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. | डॉ० डी० एस० सिंह | उप निदेशक | भैसोंड़ा फार्म, नौगढ़ | 316093 घर |
| 2. | डॉ० आर० पी० सिंह | कार्यवाहक उ० प्र० वाराणसी मण्डल | काशी विद्यापीठ रोड | 220881 आफिस |
| 3. | ,, | मु० प० चि० अ०, वाराणसी | विकास भवन | 340786 आफिस |
| 4. | डॉ० सुरेशचन्द्र राम | कृत्रिम गर्भाधान अधिकारी | विकास भवन | 340786 आफिस |
| 5. | डॉ० के० के० वैश्य | प० चि० अ० (भेंड) मुख्यालय | काशी विद्यापीठ रोड | 354707 घर<br>220881 आफिस |
| 6. | डॉ० पी० के सिंह | मुख्य तकनीकी | काशी विद्यापीठ रोड | 510475 घर |
| 7. | डॉ० मोहन सिंह | अधिकारी (मुख्यालय)<br>प० चि० अ० (सचल) | काशी विद्यापीठ रोड | 220881 आफिस<br>220585 घर |
| 8. | डॉ० एच० एन०सिन्हा | मुख्यालय प० चि० अ० | वीर्य संग्रहीत रामनगर | 220881 आफिस<br>341234 घर |
| 9. | डॉ० एल० वी ० सिंह | प० चि० अ० | पशु चिकित्सालय हरहुआ | 383619 घर |
| 10. | डॉ० रामविजय सिंह | प० चि० अ० | ग्राम समूह खण्ड बी०एच०यू० | 384095 घर |
| 11. | डॉ० ए० के० सिंह | प० चि० अ० | पशु चिकित्सालय लढ़िया | 317612 घर |
| 12. | डॉ० के० एस० सिंह | प० चि० अ० | पशु चिकित्सालय बड़ागाँव | 386974 घर |
| 13. | डॉ० एस० एस० यादव | प० चि० अ० | पशु चिकित्सालय सिंधोंरा | 343260 घर |
| 14. | डॉ० कृष्णमोहन | प० चि० अ० | पशुचिकित्सालय चोलापुर | |
| 15. | डॉ० वीर बहादुर सिंह | प० चि० अ० | ग्राम समूह खण्ड अराजी लाइन्स | 510261 |
| 16. | डॉ० परमाकर शुक्ला | प० चि० अ० | पशु चिकित्सालय जारखिरी | |
| 17. | डॉ० आर० पी० सिंह | प० चि० अ० | पशु चिकित्सालय विद्यापीठ | 372657 |
| 18. | डॉ० यू० पी० सिंह | प० चि० अ० | पशु चिकित्सालय रामनगर | |
| 19. | डॉ० एस० यन० सिंह | प० चि० अ० | पशु चिकित्सालय चौबेपुर | |
| 20. | डॉ० मुरारी लाल श्रीवास्तव | प० चि० अ० | पशु चिकित्सालय मोतीझील | |
| 21. | डॉ० देवेन्द्रकुमार गुप्ता | प० चि० अ० | पशु चिकित्सालय सेवापुरी | |
| 22. | डॉ० गिरेन्द्र कुमार सिंह | प० चि० अ० | पशु चिकित्सालय राजातालाब | |
| 23. | डॉ० श्रीमती रचना दीक्षित | प० चि० अ० | पशु चिकित्सालय पिण्ड्रा | |
| 24. | डॉ० जे० पी० सिंह | प० चि० अ० | | 372269 |
| 25. | डॉ० ए० पी० सिंह | प० चि० अ० | नगर महापालिका सेनपुर | 221709 |
| 26. | डॉ० पी० सी० श्रीवास्तव | मुख्य तकनीकी अधिकारी (भेंड़) | मकबूल आलमरोड | 311956 घर |
| 27. | श्री परमानन्द सिंह | पशुधन प्रसार अधिकारी | ग्राम समूह खण्ड बी०एच०यू० | |



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# भारतीय गोशालाएँ

गोसँरक्षण एवं गोसँवर्धन क्षेत्र में देशभर में फैली हजारों गोशालाओं ने काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत में गोशाला एक सँस्था नहीं वरन् एक सँस्कृति है जिसे अब एक आन्दोलन का स्वरूप बनना चाहिये। देश की अनेक गोशालाओं ने अपने योग्य प्रवँधकों अथवा सँसाधनों के बल पर अच्छी प्रगति कर काफी सराहनीय कार्य किये हैं, जिनकी जानकारी अन्य गोशालाओं के लिए अनुकरणीय हो सकती है।

गोसेवा एवं गोवंश उन्नयन हेतु हम सामूहिक चिंतन और प्रयास करें तो निश्चय ही अधिक सार्थक परिणाम निकलेंगे, इन्ही उद्देश्यों के साथ हम देशभर में फैली गौशालाओं की एक सूची प्रकाशित कर रहें हैं। यद्यपि यह एक अपूर्ण प्रयास है फिर भी गोशालाओं की जानकारी देने वाला यह देश में प्रथम प्रयास है। प्रस्तुत सूची में हम केवल उन्ही गोशालाओं के नाम पते प्रकाशित कर पा रहे हैं जो हमें उपलब्ध हो सके हैं। भविष्य में यह सूची अधिक से अधिक पूर्ण हो सके इसके लिए हम आप सभी से सहयोग की कामना के साथ विनम्र अनुरोध करते हैं कि इस सूची के अतिरिक्त अन्य अप्रकाशित गोशालाओं की जानकारी जो भी आपके सँज्ञान में हो हनें अवश्य प्रेषित करें, हम आपके आभारी होंगे। इस प्रकार देशभर की गोशालाओं की एक परिचायिका (Directory) प्रस्तुत करना हमारा लक्ष्य है, ताकि हम एक दूसरे को जाने समझें तथा विचार विमर्श एवं सहयोग का व्यापक दायरा बना सकें।

बृजमोहन मूँदड़ा (मंत्री ट्रस्ट बोर्ड)
काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला, गोलघर, वाराणसी २२१००१

## उत्तर प्रदेश

गोरक्षिणी सभा गौशाला
टोकाघाट, फर्रुखाबाद

अर्जुन गौशाला
कन्नौज, फर्रुखाबाद

गोपाल गौशाला सोसाईटी
होमगंज, ईटावा

गोपाल गौशाला सोसाईटी
मारम्थाना, ईटावा

पंचमुखी हनुमान गौशाला
पनकी कटरा, कानपुर

गोपाल गौशाला
पंचकुआँ, नई बस्ती, झाँसी

नरसिंह गौशाला
पैलानी, बांदा

जिला जालौन गौशाला समिती
कालपी, जालौन

श्री जनपति गंगा गौशाला गोसदन
ब्रिजघाट, गाजियाबाद

भगवती गौशाला
कायमगंज, फर्रुखाबाद

गौशाला सिकंदरापुर
चिवारामऊ, फर्रुखाबाद

गोपाल गौशाला
औरइया, इटावा

कानपुर गौशाला सोसाईटी
जेनरलगंज, कानपुर

कृष्णा गौशाला
पुखराया, कानपुर

गोपाल गौशाला
रसिन बाबा, बाँदा

महिपत गौशाला
नन्दौली जी, जालौन

पिन्जरापोल गौशाला
पडरौना, देवरिया

कृष्णा गौशाला
पहाड़पुर, आजमगढ़

काशी जीव दया विस्तारिणि गौशाला
मैदागिन, वाराणसी

लोकमान्यतिलक गौशाला
बलिया

लक्ष्मी गौशाला
सैदपुर, गाजीपुर

गोपाल कृष्ण गौशाला
अहरौरा, मिरजापुर

गोपाल गौशाला
मड़ियाहू, जौनपुर

प्रयाग गोरक्षिनी सभा गौशाला
कीटगंज, इलाहाबाद

भारतीय गौसेवा संस्थान
बौनपुर, इलाहाबाद

कृष्णा गौशाला
साहबगंज, तमकोहीरोड

गोपाल गौशाला
मऊनाथ भन्जन, आजमगढ़

काशीराज गौशाला
रामनगर, वाराणसी

गोपाल कृष्णा गौशाला
गाजीपुर

गोवरधन गौशाला
मिरजापुर



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पिन्जरापोल पशु अनाथालय
जौनपुर

कृष्णनदी गोरक्षिनी सभा गौशाला
साहगंज, जौनपुर

गोवरधन गौशाला
मारवाड़ी, इलाहाबाद

नन्द गौशाला
बिन्दकी, फतेहपुर

सरजु गौशाला
नबाबगंज, गोन्डा

गोपाल गौशाला
कर्नलगंज, गोन्डा

जंगलीनाथ गौशाला
नानपारा, बहराईच

कृष्ण गौशाला
चिलबीला, प्रतापगढ़

लोकसेवा संस्थान गौशाला
काकराखोर, गोरखपुर

वागापार गौशाला
सदर, गोरखपुर

राधाकृष्ण गौशाला
मेहदावली बस्ती

पिन्जरापोले गौशाला
देवरिया, देवरिया

देवी पतेश्वरी गौशाला
तुलसीपुर, गोन्डा

राज लक्ष्मी गौशाला
निमदीपुर, बहराईच

गंगा गौशाला
कालाकंकर, प्रतापगढ़

कृष्ण गौशाला
रीसावा बाजार, गोरखपुर

पिजरापोल गौशाला
चौरीचौरा, गोरखपुर

कृष्ण गौशाला
पान्डेय बाजार, बंसी रोड, बस्ती

गौशाला
मनरी काला (रूपाली), बस्ती

ब्रज गौशाला
बीराकोहर बाजार, बस्ती

पिन्जरापोल गौशाला
महराज, देवरिया

आर्या गुरुकुल ट्रस्ट गौशाला
ऐटा

गोयल गौशाला
हरदोई

राधाकृष्ण गौशाला
शाहाबाद, हरदोई

धर्माथ गौशाला
गोरखनाथ, लखीमपुर

पराशर नाग गौशाला
मैकनगंज, लखीमपुर

हनुमंत मंशाराम गौशाला
बिरावा, सीतापुर

साकेत गौशाला
अयोध्या, फैजाबाद

नरसिंह गौशाला
बीकापुर, फैजाबाद

बलरामपुर गौशाला सोसाईटी
नीलबाग, गोन्डा

अवध गौशाला
लखनऊ

कृष्ण गौशाला
माधोगंज, हरदोई

गोरक्षिनी सभा गौशाला
लाखिमपुर, लाखिमपुर

हिन्दुस्तान सूगर मिल्स गौशाला
गोला, लखिमपुर

पिन्जरापोल गौशाला
सीतापुर

नैमिषारण्य गौशाला
मिशरीत, सीतापुर

मानवात गौशाला
चूहिया, टान्डा, फैजाबाद

हनुमान गौशाला
भगवतीगंज, बलरामपुर, गोन्डा

गायत्री तपोभूमि गौशाला
बड़गाँव, गोन्डा

हासानन्द गोचर भूमि ट्रस्ट गौशाला
मथुरा

कृष्ण गौशाला
कोसीकला, मथुरा

पंचाईती गौशाला
वृन्दावन रोड, मथुरा

श्याम गौशाला
वृन्दावन रोड, मथुरा

किशन गौशाला
हाथरस रोड, अलीगढ़

शंकरानंद गौशाला
मैकुगी, अलीगढ़

श्री गौशाला
शीकोहाबाद, मैनपुरी

सरवोदय गौशाला
ऐटा

गौशाला कमेटी
कासगंज, ऐटा

किशन गौशाला
मथुरा, मथुरा

मदवल्लभ गौशाला
गोकुल, मथुरा

ब्रिजमुकुटमनी गौशाला
उधोकुण्ड, मथुरा

पंचाईती गौशाला
दिल्ली दरवाजा, अलीगढ़

स्वामी गौशाला
सिकन्दरारव, अलीगढ़

गोपाल आदर्श गौशाला
मैनपुरी



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीकृष्ण गौशाला
बुद्धबकाएन (मांगव), मैनपुरी

गोपाल गौशाला
जी० टी० मार्ग, ऐटा

गोरक्षिनी और विद्या प्रचारिणी गौशाला
गंज हुडवारा, ऐटा

उमा माहेश्वर गौशाला
गिजावतउरा गंज, बिजनौर

बरेली गौशाला सोसाईटी
बरेली

कामधेनु गौशाला
जोगीपुरा, बदायूँ

सर्व हितकारी गौशाला
वीलार्सी, बदायूँ

श्रीराम गौशाला
विलासपुर, पीलीभीत

गोपाल गौशाला
रामबाग, शाहजहाँपुर

महर्षि वशिष्ट-गौशाला
जलाहाबाद, शाहजहाँपुर

गोविंद गोरक्षिनी सभा गौशाला
अचनेरा, आगरा

गाँधी गौशाला
रविदास मन्दिर, बालाबर्ली,बिजनोर

कृष्ण गौशाला
नगीना, बिजनोर

गौशाला
आमला, बरेली

धमार्थ कामधेनू गौशाला
उझियानी, बदायूँ

पिन्जरापोलें गौशाला
पुरानागंज, पीलीभीत

वृन्दावन गौशाला
विशालपुर, पीलीभीत

तिलहर गौशाला
तिलहर, शाहजहाँपुर

श्री गौशाला सोसाईटी
आगरा, आगरा

गोजीव गोरक्षिनी सभा
फिरोजाबाद, आगरा

पूज्य गाँधी गौशाला
कनथना, मुज्जफरनगर

सहारनपुर पिन्जरापोलें सोसाईटी गौशाला
सहारनपुर

गुरुकुल कांगड़ी गौशाला
हरिद्वार

किशन गौशाला
देवान्द, सहारनपुर

पंचाईती गौशाला
हापुड़, गाजियाबाद

पंचाईती गौशाला
पिलखुआ, गाजियाबाद

गोरक्षिनी सभा
खुरजा, बुलन्दशहर

गोपाल गौशाला
बाहाजोही, मुरादाबाद

श्री गोशाला
बेगमाबाद, रामपुर

अरविन्द निकेतन गोशाला
चारथावल, मुजजफरपुर

राम कृष्ण मिशन गोशाला
कनखल, हरिद्वार

गोशाला सभा
राराकी, सहारनपुर

कृष्ण गौशाला
गाजियाबाद

भागरथी कृष्ण गोशाला
गढ़मुक्तेश्वर, गाजियाबाद

द्रोण गोशाला
डकर, बुलन्दशहर

रामगंगा गोशाला
मुरादाबाद, मुरादाबाद

गोशाला प्रबन्धक समिति
वासुदेव तीर्थ, अमरोहा, मुरादाबाद

दरियाव गोशाला
गंज दारानगर, बिजनोर

ऊँकालेश्वर टेम्पिल गोशाला
पौरी, गढ़वाल

अनुसूईया मन्दिर गोशाला
मल्लानागपुर, वैरागन चमोली

विश्वनाथ गोशाला
हरिद्वार, ऋषिकेष, देहरादून

बाबा कमली वाला गोशाला
ऋषिकेष, देहरादून

पंचाईती गोशाला
लक्ष्मन झूला रोड,ऋषिकेष, देहरादून

नैनीताल आचार्य कृपलानी ट्रस्ट
नैनीताल

हस्तीनापुर पिन्जरापोल गोशाला
मवन कला, मेरठ

नई मण्डी गोशाला
मुजफ्फरनगर

गोशाला सभा
करना, मुज्जफरनगर

सुसदेवानन्द ट्रस्ट परमार्थ निकेतन गोशाला
स्वर्गाश्रम, पौरी गढ़वाल

उत्तराखण्ड गोवंश विकास गौशाला
मेथापरा, चमोली

पंजाब सिंध क्षेत्र गौशाला
ऋषिकेष, देहरादून

सनातन धर्म महावीर दल गौशाला
हरिपुर कला, देहरादून

रानी भवानी गौशाला
काशीपुर, नैनीताल

धमार्थ पंचाईती गौशाला
खेकड़ा, मेरठ

गौशाला सभा समिति
शामली रोड, मुज्जफरनगर



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गौशाला
शामली, मुज्जफरनगर

## महाराष्ट्र

गुरुनानक गोशाला ट्रस्ट
कावरनगर, जलगाँव 425001

श्री पिन्जरापोल संस्थान करन्जा
आ0 एन0 ई0 - 22 अकोला
करन्जा लाद प्लान, अकोला

गोरक्षन संस्थान वासिम
वासिम, अकोला

गोरक्षन संस्थान शेगाँव
शेगोव, बिलथाना

विवेकानन्द आश्रम
विवेकानन्द नगर (गोशाला)
मेहाकर बुलढाना

गौशाला देवलगाँव राजा
देवलगाँव राजा, बुलढाना,

श्री गोरक्षन संस्थान दिगरास
दिगरास, यावतमल

गोरक्षन संस्थान पनधरकावदा
पनधरकावदा, यवतमाल

श्री रामकृष्ण संस्थान
जामनेर रोड, भूसावल, जलगाँव

श्री गाडगे महाराज गोरक्षण संस्थान
मुर्तिजापुर, अकोला

श्री गोरक्षण संस्थान रीसूद
अकोला, अकोला

बुलथाना गोरक्षण संस्थान
मेन रोड, बुलढाना

श्री गोपाल कृष्ण संस्थान
जलगाँव (जामोद)
ई - 42 बुलढाना

श्री वर्धमान गोरक्षन संस्थान
लोनर, बुलढाना

श्री गोरक्षन संस्थान यावतमल
लोखन्दी, पुलाजवल, यवतमाल

गोरक्षन संस्थान पूसद
दीपक टाकिज जवल पूसद,
अरेगोंव यवतमाल

गोरक्षन संस्थान वानी
वानी, यवतमाल

आदर्श दुग्ध मलाड
गोमुर मार्वे रोड, मलाड,

श्री गोग्रास गो जीवनदास मंण्डल
252/58, जवेरी बाजार,
गणेशवदीन्का वजू भाईवाडी, 2 माला

गोरखा लिंग
गुफा रोड, गोशाला
जोगेश्वरी ईस्ट, मुम्बई-61

श्री घाटकोपर सार्वजनिक जीवदया खाता
जीवदया लेन अगा रोड, घाटकोपर वेस्ट,
घाटकोपर, मुम्बई-86

श्री पिन्जरापोल गोरक्षण संस्थान
पिन्जरापोल रास्ता, पानवेल-410206

श्री नासिक पंचवटी पिन्जरापोल
नासिक-3

श्री गोशाला पन्जरापोल संस्थान माले
कामधेनु मार्केट, शिवाजी पूतल्याजवल,
मालेगाँव, नासिक

श्री धूले पिन्जरापोल और प्राणिरक्षक सं0
परीका रोड, धूले-424001

श्री गोरक्षण संस्थान
हीरापुर रोड, चालिस गाँव
(रामजी पीर मन्दिर) जलगाँव

मुम्बई पिन्जरपोल गोशाला
माधवबाग, पोसत्यय मार्ग, भूलेश्वर

श्री लक्ष्मीनरायन मन्दिर
माधवबाग चैरिटी ट्रस्ट
सी0 पी0 टैन्क, मुम्बई-400004

महाराष्ट्र गोपालन समिति
83 ए0 मुम्बा देवी रोड, मुम्बई-3

बोबे गो ग्रस भिक्षा सोसाईटी
लोकमान्य गोशाला, गोग्रास चडी,
डोबीवली (ई0) थाने

भारत वर्षिय गोपालन गोरक्षन मण्डल
57 बड़ा मन्दिर (3) भूउईवडा,
भूलेश्वर, मुम्बई-2

गोशल पन्जरपोले ऐवेला
मेसर्स नवलमल पूनमचन्द श्रीमल
नासिक

श्री गोपाल गोशाला चन्द्रापुर
बगल नगर, बाबू पेठ, चन्द्रापुर

श्री जैन श्वेताम्बर मण्डल
(पारसनाथ गोशाला)
भदरावती चन्द्रापुर

मुम्बई गोरक्षण मण्डली कान्डीवली
गोशाला अरकुली रोड,
कान्डीवली, (ई0)

खानदेश गोशाला संस्था
मालेगाँव रोड, धूले

श्री नदूरबर पिन्जरपोल संस्था
नन्दूबर, धूले

श्री पन्जरपोले संस्था
जलगाँव, जलगाँव

गोरक्षन संस्था
मोरशी, अमरावती

ग्रामसेवा मण्डल गोपुरी
गोपुरी, वर्धा

गोरक्षन संस्था हिन्गनघाट
हिन्गनघाट, वर्धा

गोरक्षन संस्था
काटोल, नागपुर

गोरक्षन सभा नागपुर
वर्धा रोड, धनटोली, नागपुर

श्री कृष्ण गोशाला
तुमसर, भन्डारा

श्री कृष्ण गोरक्षन सभा गोन्डिया
गोन्डिया, भन्डारा

श्री महारोगों सेवा समिर्ता बरोरा
आन्लदवन, चरदरापुर-442914



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री राधेश्याम गोशाला
उल्लास नगर नं0-5 रायेगढ़

श्री गुरुगणेश गोरक्षन संस्था
नदगाँव, खण्डेश्वर, अमरावती

गोरक्षन मण्डली वर्धा
गोरक्षन संस्था वर्द, वर्धा

गोरक्षन संस्था अर्वी
अर्वी, वर्धा

श्री नागपुर व्यापारी गोरक्षन संघ
भद्रा, उमरेद रोड, नागपुर

गोरक्षन संस्था भण्डारा
चदानी चौकाजवल, भण्डारा

गोरक्षन संस्था तीरोडा
तीरोडा, भण्डारा

पिन्जरापोल गोरक्षण संस्था
अरगाँव रोड, अहमद नगर

पुणे पिन्जरापोल संस्था
461/3 सदाशिव पेट तिक रोड,
पतनचा गोट अलका टाकिज, पुणे

भारतीय कृषि उद्योग फाउन्डेशन
उर्ली कन्चन, हवेली, पूने

गोपाल कृष्ण गोरक्षन संस्था
मनावत, परमानी

पिन्जरापोल संस्था
गणेश मन्दिर जवल, सान्गली

मुम्बई गो ग्रास भिक्षा संस्था
अपटे इन्डसट्रियल एस्टेट 1 माला
1076 डा0 ई0 मागेस रोड

गोरक्षन संस्था धमनगाँव रेलवे
धमनगाँव रेलवे, (चान्दपुर रेलवे)
अमरावती

श्री राम गोरक्षन संस्था
अचलमूर शहर, अचलमूर, अमरावती

गोरक्षन संस्था बनोसा
दयापुर, अमरावती

खानदेश गो सेवा श्रमघाट गोशाला
मालेगाँव रोड, धूले

सोलापुर पिन्जरापोल संस्था
सोलापुर

गोरक्षन संस्था
नानदेद, मराटवाड़ा

जलगाँव पिन्जरापोल
विटुल पेट, जलगाँव

धर्मार्थ गोरक्षन संस्था पंढरपुर
स्टेशन रोड, पंढरपुर, सोलापुर

श्री गोरक्षन संस्था अमरावती
अमरावती (अम्बा देवी) अमरावती

श्री गुरुदेव कृपि गो सेवा मन्दिर
(मोझरी) तीवासा, अमरावती

गोपाल गोरक्षन संस्था
आजनगाँव, सूरी, अमरावती

विदर्भ महारोगी सेवा मण्डल अमरावती
अमरावती

गोरक्षन लिग लिगेश्वरी गोशाला
गुफारोड, जोगेश्वरी (ई0) मुम्बई - 61

गोपाल कृष्ण गोशाला
सदालकर वड़ी,
खण्डगले समल, कोलहापुर

गोरक्षन संस्था
मर्षी, अमरावती

बगेश्वर गोशाला
बाई, सतारा

संस्था महावीर जैन गोशाला
चिकथाना, औरंगाबाद

गोरक्षन संस्था
अकोला, बिदर्भ

चान्दगोद्दार पिन्जरापोल
चान्दगोद्दार, कच्छ, रापुर

पन्सवा पिन्जरापोल
पन्सवा, रापुर, भुज

बलीमोरा पिन्जरापोल
बलीमोरा, वलसाद, 366329

समी गोशाला पिन्जरापोल
समी, हारिज, मेहाग्ना, 384245

गोरक्षन संस्था
पीपलगाँव, कलं, अमरावती

गोरक्षन संस्था
उदगीर, उसमानाबाद

गोरक्षन संस्था
गंगाखेड, परमानी

गोरक्षन मण्डली
फलवड़ी, मुम्बई-400002

गोरक्षन संस्था
द्वारा मेसर्स बिट्ठलदास देवचंद, वानी

अहमद नगर गोकृष्ण पिन्जरापोल
अरगाँव रोड, अहमदनगर

पिन्जरापोल गोशाला (गोरक्षन पन्जरा)
मौलाना आजाद रोड, जलना अकोला

गोरक्षन संस्था
मुर्तीजापुर, अकोला

गोरक्षन संस्था
वरोला, चन्दा

गोरक्षन संस्था
हीगोली, पारमावी

गोरक्षन संस्था
यावतमल, विदर्भ

गोरक्षन कमीटी
जौहरीवड़ा, औरंगाबाद, मराठवाड़ा

पिन्जरापोल संस्था
साहापुरी, कोलहापुर-416003

डंगी गो सेवा संघ
राजपुर, अकोला, अहमदनगर

पंच कमीटी गोरक्षन संस्था
धर्माबाद, नानदेद

घाटकोपर सार्वजनिक जीवदया खट्ट
जीवदया लेंन, आर0 बी0 कादम मार्ग
आगा रोड, घाटकोपर, मुम्बई-86



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रामकृष्ण गोरक्षन संस्था
भूशावल, खांनदेश

गोरक्षन संस्था
हीगपुर रोड, रामजी पीर मन्दिर,
चालिसगाँव, जलगाँव

भारतवर्षीय गोपाल गोरक्षन सभा
पाडा मन्दिर तीसरा भोईवड़ा
भूलेश्वर

गोपालक संघ सोलापुर
मानिक चन्द मोहनलाल लोनावत
लोनावत भवन 655 गे 9 पेठ
सोलापुर 413002

व्यापारी संघ गोशाला
उमारेड गेड, नागपुर

पिन्जरापोल गोशाला
मौलाना अर्शद रोड, जलना,
अकोला

डा० डी० पी० परसाई
कतल ब्रिडींग सेन्टर
हिंगनी कम्पोर्ट, माहेश्वर

पिन्जरापोल संस्था
बौराबाद, वया, साहापुरी,
कंगला, कोलहापुर

गोरक्षन पिन्जरापोल
पानवेल, कोलाबा

राधेश्याम गोशाला ट्रस्ट
उल्लासनगर, थाना

गोवर्धन संस्था
श्री गोजीवन चौंदे महाराज स्माग्क मण्डी
1341 सुखरावर पेट, नाटूबाग पुणे

साकाहरी संस्था गोरक्षन सभा
परभनी, मराठवाड़ा

सौंगामानेग मर्चेट एमोसिएशन गोशल
सौंगामानेर, अहमदनगर

गोशाला पिन्जरापोल संस्था
गोपीया, पुणे

अनाथ गो कृष्ण संस्था
नदरगाँव, संदेशवर, अमरावती

मैंचुर गोशाला अनी पिन्जरापोल
मैंचुर, जुन्नार, पूना

बारसी गोकृष्ण मण्डली
2541 स्टेशन रोड, बारसी, सोलापुर

पिन्जरापोल संस्था सांगली
गणपती मन्दिर, मीराज,
सांगली 416416

धूले पिन्जरापोल संस्था
पैरोल रोड, धूले, महाराष्ट्र

बौवना पिन्जरापोल
बौवना, ठोलका, अहमदाबाद-382220

गठादा (स्वामीना) पिन्जगपोल
गठादा (स्वामीना), बोतद, भावनगर

श्री गोरक्षन संस्था
नैनी शाक मार्केट के सामने
पलीताता, भावनगर, सौराष्ट्र-364270

श्री माथवबाग गोशाला
माथवबाग ट्रस्ट,
सी० पी० टैन्क, मुम्बई-4

मुम्बई पिन्जरापोल
माथवबाग, सी० पी० टैन्क, मुम्बई-4

नन्दूरबर पिन्जरापोल संस्था
नन्दूरबर, धूले

नासिक पंचवटी पिन्जरापोल
पंचवटी, नासिक-3

बुलधारा गोकृष्ण ट्रस्ट
बुलधारा, बिदर्भ

गोवर्धन संस्था
चोपाड़ा, जलगाँव

## गुजरात

पलीतना पिन्जरापोल
पलीतना, भावनगर, 364270

वनकानेर पिन्जरापोल
वनकानेर, राजकोट

जेतपोर (कथी) पिन्जरापोल
जेतपोर, (कथी), राजकोट 360370

वासो पिन्जरापोल
वासो, खेड़ा, 387380

कारजन पिन्जरापोल
कारजन, वडोडरा 371240

सगावा पिन्जरापोल
सगावा, रापूर, भुज

अधोई पिन्जरापोल
अधोई, कच्छ 360125

मण्डल पिन्जरापोल
मण्डल, वया विरागम,
अहमेदाबाद 382130

सादरा पिन्जरापोल
सादरा, विया देहगाम, 382328

महुवा पिन्जरापोल
महुवा, सौराष्ट्र-364280

वेगवल पिन्जगपोल
वेरावल, सौराष्ट्र 362265

रामपोरा पिन्जरापोल
रामपुर, मनकदा
वाया विरामगढ़, अहमेदाबाद 363435

दाहोद पिन्जरापोल
दाहोद, पंचमहल

खरी पिन्जरापोल
खर्गी, वाया सिहोर, सौराष्ट्र, भावनगर

नैना पिन्जरापोल
नैना, कच्छ

श्री सर्वोदया गोशाला गोसादान पिन्ज०
जरसिंहधाध, पलीतना, भावनगर, सौराष्ट्र

घोलेरा पिन्जरापोल
घोलेरा, खेड़ा-382445

कदी पिन्जरापोल
कदी, मेहासना-382715

सयाला पिन्जरापोल
सयाला, सुरेन्द्रनगर, लिमबदी-363430

गुन्देला पिन्जरापोल
गुन्देला, कच्छ, भुज-370410



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अद्रीयाना पिन्जरापोल
अद्रीयाना, सुरेन्द्रनगर-382780

पेतलद पिन्जरापोल
पेतलद, खेड़ा-388450

नादियाद पिन्जरापोल
नादियाद, खेड़ा-387001

विसनगर पिन्जरापोल
विसनगर, मेहासना-384315

थार्द पिन्जरापोल
थार्द, गुजरात-385565

धनेन्द्र पिन्जरापोल
धनेन्द्र, नार्थ गुजरात-385310

मंसा पिन्जरापोल
मंसा, बिजपुर-382845

भूजापुर पिन्जरापोल
भुजापुर, कच्छ-370405

वासद पिन्जरापोल
वासद, गुजरात-391830

गोधरा पिन्जरापोल
गोधरा, पंचमहल-389001

सोजित्रा पिन्जरापोल
सोजित्रा, खेड़ा-387240

खेड़ा महाजन पिन्जरापोल
खेड़ा, नार्थ (गुजरात)3874111

वव पिन्जरापोल
वव, मंहासना-385575

थारा पिन्जरापोल
थारा, गुजरात-385555

ढनढूका पिन्जरापोल
ढनढूका, ढलूका

भुज पिन्जरापोल
भुज, कच्छ-350001

अन्जर पिन्जरापोल
अन्जर, कच्छ, भुज

रापर पिन्जरापोल
रापर, भुज, कच्छ

भानूदद पिन्जरापोल
भानूदद, सौराष्ट्र-360510

दियोदार पिन्जरापोल
दियोदार, बौंसकंठा-385330

विरमगाँव पिन्जरापोल
विरमगाँव, अहमदाबाद-382150

दसद महाजन पिन्जरापोल
दसद, विरमगाँव-310750

रानपुर पिन्जरापोल
रानपुर, सिरेन्द्रपुर-363610

लिम्बडी पिन्जरापोल
लिम्बडी, सुरेन्द्रनगर-363421

सुरेन्द्रनगर पिन्जरापोल
सुरेन्द्रनगर-363001

राजकोट पिन्जरापोल
राजकोट, सौराष्ट्र

खँभाट पिन्जरापोल
खँभाट, खेड़ा-383620

बोरसद पिन्जरापोल
बोरसद, खेड़ा-388540

मोतीमर्द पिन्जरापोल
मोतीमर्द, वया धोराजी-368425

पाटादी महाजन
पाटादी, विरामगाँव,
अहमदाबाद-382765

लखतर पिन्जरापोल
लखतर, सुरेन्द्रनगर-382775

चूड़ा पिन्जरापोल
रानपुर, सुरेन्द्रनगर-263410

वाथवन महाजन पिन्जरापोल
वाथवन, सुरेन्द्रनगर

चोटीला पिन्जरापोल
चोटीला, सुरेन्द्रनगर

थानगढ़ पिन्जरापोल
थानगढ़, सुरेन्द्रनगर-363530

डकोर गौशाला
डकोर, खेड़ा-388225

धीराजी पिन्जरापोल
धीराजी, सौराष्ट्र-368410

भावनगर पिन्जरापोल
भावनगर, सौराष्ट्र

अहमदाबाद पिन्जरापोल संस्था
जवेरी वद, रतनपोल, अहमदाबाद

ईदर पिन्जरापोल
ईदर, सौवरकाठा-383430

लिंच पिन्जरापोल
लिंच, महंसना-384435

महेसना पिन्जरापोल
महेसना, महंसना-384001

पालनपुर पिन्जरापोल
पालनपुर, बनासकौंठा-385001

राधनपुर पिन्जरापोल
राधनपुर, बनासकौंटा-385340

खेरालू पिन्जरापोल
खेरालू, महंमना-384325

विफापुर पिन्जरापोल
विफापुर, महेसना-382870

देवनगिरी गोशाला
द्वारा धरमचन्द काकामाजी मर्चेंट
देवनगिरी, चीहादुएंर

मेन्द्र गौशाला
विया नरोदा गेड, अहमदाबाद

हीम्मतनगर पिन्जरापोल संस्था
हीम्मतनगर, स्वकंठा-383001

पतन पिन्जरापोल
पतन, मंहसना-384265

कलोल पिन्जरापोल
कलोल, मंहसना-382721

मारवाड़ी ट्रस्ट गोशाला
द्वारा चना श्यमदास राटी
जीलेग गुडा, बीजापुर



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दिशा पिन्जरापोल
दिशा, बनासकाटा-385535

उन्जा पिन्जरापोल
उन्जा, मेहसना-384170

विदानगर पिन्जरापोल
विदानगर, महेसना-384355

सानद पिन्जरापोल
सानद, अहमदाबाद-382110

देहगाम पिन्जरापोल
देहगाम, अहमदाबाद-382845

प्रंतीज पिन्जरापोल
प्रंतीज, साबरकोंटा-382204

जामनगर पिन्जरापोल
लिमदा लेन, जामनगर, सौराष्ट्र-311001

मोरवी पिन्जरापोल
मारवी, राजकोट-363641

पोरबन्दर पिन्जरापोल
पोरबन्दर, सौराष्ट्र

ढोलका पिन्जरापोल
ढोलका, अहमदाबाद

कोर्ट गंगद पिन्जरापोल
कोर्ट गंगद, अहमदाबाद

माण्डवी पिन्जरापोल
माण्डवी, कच्छ

उपलेटा पिन्जरापोल
उपलेटा, जूनागढ़

परू पिन्जरापोल
परू, खेड़ा-389238

धारंगपारा महाजन पिन्जरापोल
धारंगपारा, सुरेन्द्रनगर

पिन्जरापोल
देहगाम, अहमदाबाद-382845

गोन्दल पिन्जरापोल
गोन्दल, राजकोट

भरूच पिन्जरापोल
भरूच, सौराष्ट्र-362001

भोतद पिन्जरापोल
भोतद, भावनगर (सौराष्ट्र)

गोशाला और पिन्जरापोल
निकट भूलानल टैन्क,
द्वारा अम्बालाल शाहा,
मर्चेट एस0 एस0 रोड,
बीजापुर-586101

## बिहार

गोशाला
गुमला, बिहार-835207

श्री टाटानगर गोशाला
जुगसलाई, जमशेदपुर,
बिहार-831201

गोशाला समिति
चक्रधरपुर, सिंहभूम, बिहार-833102

झरिया धनबाद गोशाला
झरिया, धनबाद, बिहार-828111

श्री गंगा गोशाला
कटरास, धनबाद, बिहार-828114

मिरजागंज गोशाला
मिरजागंज खडीहा, गिरिडिह
बिहार-815315

रामगढ़ गोशाला
रामगढ़, राँची, बिहार

श्री कृष्ण गोशाला
क्ली हाऊस रोड, पटना
बिहार-800008

बीहाटा गोशाला
बीहाटा, पटना

गोशाला समिति
आरा, भोजपुर, बिहार-802301

सेन्दुल गोरक्षनी गोशाला
रानीगंज, गलेरिया, गया,
बिहार-824210

वसनीगंज गोशाला
वसनीगंज, गया

श्री कृष्ण गोशाला
बड़, पटना, बिहार-803202

मोकामा गोशाला
मोकामा, पटना

आदर्श गोशाला
बक्सर, भोजपुर, बिहार-802101

गोशाला सदन
मोतीहरी, ईस्ट चैपारन, बिहार-845401

श्री गाँधी पिन्जरापोल गोशाला
बेटिया, वेस्ट चैपारन
बिहार-845438

श्री कृष्ण गोशाला समिती
सुगली, वेस्ट चम्परन
बिहार-845456

आदर्श हिन्दु गो मन्दिर
डोम बलिया, बगाहा, वेस्अ चम्परन
बिहार-845101

गोशाला कमेटी
सीवन, सीवन, बिहार-841226

गोशाला
चकिया, ईस्ट चम्परन, बिहार-845449

श्री कृष्ण गोशाला
धनपतिया, वेस्ट चम्परन, बिहार-845449

श्री जनता गोशाला
विष्णुपुर कला वया एकमा, सरन

गोशाला
खस्ती, वेस्ट चम्परन, बिहार-845305

वनकटी गोशाला
छपरा, बिहार - 841301

श्री दरभंगा गोशाला सोसाईटी
दरभंगा, बिहार-846004

श्री कृष्ण गोशाला
जघानगर, मधुबनी, बिहार-847226

गोशाला
माधेपुर, मधुबनी, बिहार-847226



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री गौशाला समस्तिपुर
ब्रांच - मधुबन किशनपुर
समस्तिपुर, बिहार-848101

स्टेशन महानया गोशाला
दलसिंह सरिया, समस्तिपुर,
बिहार-848114

गोशाला
ताजपुर, समस्तिपुर, बिहार-848130

मुज्जफरपुर गोशाला
इस्लाम पोखरा, बिहार-842001

गोशाला समिति
सीतामरही, सीतामढ़ी,
बिहार-848114

गोरक्षनी गोशाला
मेहासी, चम्परन, बिहार-845406

गोशाला समिति मधुबनी
मधुबनी, बिहार-847211

सोन ब्रैग्यनिक गोशाला
देहरी, गोहतास, बिहार-821307

श्रीराम गोशाला समिति
नसरीगंज, रोहतास, बिहार-821310

गोसदन गोशाला
लोकाही, मधुबनी, बिहार-847406

गोवर्धन गोशाला
रखावरी, मधुबनी

मोहीउद्दीन नगर गोशाला
मोहीउद्दीन नगर, समस्तिपुर,
बिहार-848501

गोशाला
रोसज, समस्तिपुर, बिहार-848210

गोशाला
भीखारी, समस्तिपुर

गोशाला
हाजीपुर, वैशाली, बिहार-844102

पूपरी गोशाला
जनकपुर रोड, सीतामढ़ी, बिहार-843320

गोरक्षनी सभा
सैसन्या, सीतामढ़ी, बिहार-845426

गोशाला
बरपीधा, मुगेर, बिहार-811101

गोशाला बुगेसरी
बेगूसराय, बिहार-851101

श्री कृष्ण गोशाला
कटिहार, बिहार-854105

गोशाला गुलाबबाग
पुरनीया, कटिहार, बिहार-855114

श्री हरिहर नाथ गोशाला
फरबिसगंज, पुरनीया, बिहार-854310
सहर्षवन गाँव गोशाला
सहर्ष, बिहार-852201

श्री शंकर गोशाला
पुरनी, महर्ष

श्री किशन गोशाला
सोनबर्स राज, सहर्ष, बिहार-852129

लखीसराय चैरिटेबल गोशाला सोसाईटी
लखीसराय, मुगेर, बिहार-811311

गोशाला गोगरी जमालपुर
गोगरी जमालपुर, खगरिया

गोशाला
तेधरा, बेगूसराय, बिहार-851133

श्री पुरनीमा देवी गोशाला
सोनाली, कटिहार, बिहार-854105

श्री भतनाथ गोशाला
किशनगंज, पुरनिया, बिहार-854326

श्री गोपाल गोशाला
मुर्लीगंज, सहर्ष, बिहार-852122

श्री गोशाला मधेपुरा
मधेपुरा, सहर्ष, बिहार-852113

गोशाला
निरमली, सहर्ष, बिहार-847452

गोशाला
सुपौल, सहर्ष, बिहार-852131

छत्र गोशाला
छत्र, हजारीबाग

श्री गोशाला दुमका
दुमका, बिहार-814101

श्री गोपाल गोशाला
मधूपुर, देवघर, बिहार-815353

श्री गोपाल गोशाला
पकुर, साहेबगंज, बिहार-816107

गोशाला राजमहल
राजमहल, गोड्डा, बिहार-813203

श्री गोपाल गोशाला
कलगाँव, भागलपुर, बिहार-813203

थाना गोशाला
जिरपठी, भागलपुर, बिहार-813209

गोशाला हवेली खड़गपुर
हवेली खड़गपुर, मुगेर,
बिहार-811213

श्री कृष्णा गोशाला
झाझा, मूगेर, बिहार-811308

कोदरमा गोशाला
कोदरमा, हजारीबाग

श्री बैघयनाथ थाम गोशाला
बैघयनाथ, देवघर, बिहार-814112

श्री कृष्ण गोशाला
जमतदा, दूमका, बिहार-815351

श्री दोखीनाथ महादेव गोशाला
साहेबगंज, साहेबगंज, बिहार-816109

श्री गोशाला भागलपुर
भागलपुर, बिहार-812002

श्री गोपाल गोशाला
नवगछिया, भागलपुर, बिहार-813204

गोशाला कमिटी
टाउनहाल रोड, मुगेर, बिहार-811201

श्री राम कृष्ण गोशाला
जमूई, मूगेर, बिहार-814101



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोशाला
सेखुरा, मुगेर, बिहार-811105

गोशाला
बिहारशरीफ, नालन्दा, बिहार-803101

श्री कृष्ण गोशाला
गढ़वा, पलामू, बिहार-822114

गोशाला
लोहरदगा, राँची, बिहार-835225

गोशाला तमर
सिमदेगा, राँची, बिहार-835225

चैबसा गोशाला
चैबसा, सिंहभम, बिहार-833201

कालकट पिन्ज़रापोल सोसाईटी गोशाला
चकूलिया, सिंहभम, बिहार-832301

भवनकोरा गोशाला
धनबाद, बिहार-828001

गिरिडिह पचम्बा गोशाला
पचम्बा, गिरिडिह, बिहार-815316

कलकत्ता पिन्जरापोल सोसाईटी गोशाला
हजारबाग, बिहार-825301

गोशाला बाड़ालोटा
बाईपास रोड, डालटेनगंज, पलामू
बिहार-822114

राँची गोशाला
उप्पर बाजार, राँची, बिहार-834001

गोशाला
गूमाला, बिहार-835207

श्री टाटानगर गोशाला
जुगसलाई, जमशेदपुर, बिहार-831201

गोशाला समिति
चक्रधरपुर, सिंहभम, बिहार-833102

झरिया धनबाद गोशाला
झरिया, धनबाद, बिहार-828111

श्री गंगा गोशाला
कटरास, धनबाद, बिहार-828114

मिरज़ागंज गोशाला
मिरज़ागंज खडीहा, गिरिडिह
बिहार-815315

रामगढ़ गोशाला
रामगढ़, राँची

वशिष्ठ गोकुल गोशाला
वशिष्ठ, बेलवला, गोवाहाटी, आसाम

शीलोंग गोशाला
मोला, शीलोंग, मेघालय

श्री कृष्ण गोशाला
क्ली हाऊस रोड, पटना, बिहार-800008

बीहाटा गोशाला
बीहाटा, पटना

गोशाला समिति
अर्राह, भोजपुर, बिहार-802301

सोन बैम्यनिक गोशाला
देहरी, रोहतास, बिहार-821307

श्रीराम गोशाला समिति
नसरीगंज, रोहतास, बिहार-821310

सेन्दुल गोरक्षनी गोशाला
रानीगंज, गलेरिया, गया, बिहार-824210

वसनीगंज गोशाला
वसनीगंज, गया, बिहार

श्री कृष्ण गोशाला
बड़, पटना, बिहार-803202

मोकामा गोशाला
मोकामा, पटना, बिहार

आदर्श गोशाला
बकसर, भोजपुर, बिहार-802102

गोशाला
सेखुरा, मुगेर बिहार-811105

गोशाला
बिहारशरीफ, नालन्दा, बिहार-803101

श्री कृष्ण गोशाला
गढ़वा, पलामू, बिहार-822114

गोशाला
लोहरदगा, राँची, बिहार-835225

गोशाला तमर
सिमदेगा, राँची, बिहार-835225

चाईबासा गोशाला
चाईबासा, सिंहभम, बिहार-833201

कालकट पिन्जरापोल सोसाईटी गोशाला
चकूलिया, सिंहभम,
बिहार-832301

भवनकोरा गोशाला
धनबाद, बिहार-828001

गिरिडिह पचम्बा गोशाला
पचम्बा, गिरिडिह, बिहार-815316

कलकत्ता पिन्जरापोल सोसाईटी गोशाला
हज़ारीबाग, बिहार-825301

गोशाला बाड़ालोटा
बाईपास रोड, डालटेनगंज,
पलामू, बिहार-822114

राँची गोशाला
उप्पर बाजार, राँची, बिहार-834001

श्री कृष्ण गोशाला
भभुआ रोहतास, बिहार-821101

गया गोशाला
सुनियादगंज कृष्ण प्रकाश पथ,
गया, बिहार-823001

श्री कृष्ण गोशाला
जहानाबाग, गया, बिहार-824408

गोशाला नेवादा
नेवादा, बिहार-805110

## बंगाल

जलपाईगुड़ी गोशाला
जलपाईगुड़ी

पस्कुरा गोशाला
पस्कुरा, मिदनापुर

बकुरा गोशाला
बकुरा



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बिशनपुर गोशाला
बिशनपुर, बकूरा

औराई गोशाला
औराई, बर्धमान

मिदनापुर गोशाला
मिदनापुर

फुलिया गोशाला
फुलिया

बिशनपुर गोशाला
बिशनपुर, बकूरा

देवराजपुर गोशाला
देवराजपुर, बर्धमान

अखतेश्वर गोशाला
बकूरा

बर्धमान गोशाला
बर्धमान

बथनदरा गोशाला
बथनदरा, बर्धमान

आसनसोल गोशाला
आसानसोल, बर्धमान,

सीलीगुड़ी गोशाला
सीलीगुड़ी, दार्जिलिंग

कुशिथया गोशाला
कुशिथया, दीनाजपुर

दी मोहन्त गोशाला
बर्धमान

बखराजपुर गोशाला
बखराजपुर, बर्धमान

दाजिलिंग गोशाला
दाजिलिंग

## आसाम एवं मेघालय

दीनापुर गोशाला
दीनाजपुर

ककनरा गोशाला
ककनरा, दीनाजपुर

श्री गोपाल गोशाला
गोशाला रोड, डिब्रूगढ़

श्री कृष्ण गोवर्धन गोशाला
नदीरा, शिवनगर

अथरीघाट गोशाला
अथरीघाट वाया ब्रिंजूली, दारंग

गोसेवा गोशाला
प्रब्रिती प्रेस अमबरी, गोहाटी

शिलॉग गोशाला
बड़ाबाजार, शिलॉग, मेघालय

गोहाटी गोशाला
अथगाँव, गोहाटी

श्री लवरी पत्थर गोशाला
लवरी पत्थर वाया हेलम, सोरितपुर

वशिष्ट गोकुल गोशाला
वशिष्ट, बेलवला, गोवाहाटी

शीलॉग गोशाला
मोला, शीलॉग

श्री गौरीपुर गोशाला
गौरीपुर, धूबरी

श्री रामजानकी आश्रम गोशाला
खेराबड़ी, दारंग

नलबरी गोशाला
नलबरी

गोसेवा गोशाला
प्रब्रिती प्रेस अमबरी, गोहाटी

शिलॉग गोशाला
बड़ाबाजार, शिलॉग, मेघालय

## ओड़ीसा

गोपाल जी गोशाला
भदुध ,भदुध

जतनी गोशाला
जतनी, पुरी

श्री सम्भलपुर गोशाला
सम्भलपुर

झरसुगरा गोशाला
झरसुगरा, सम्भलपुर

श्री जग्गरनाथपुरी गोशाला
पुरी

श्री गोपाल गोशाला
बरगढ़, सम्भलपुर

श्री ब्रिजराजनगर गोशाला
ब्रिजराजनगर, सम्भलपुर

अदर्वेद गोशाला
शिवमपुर, बलसोर

श्री बोलन्गीर गोशाला
बोलन्गीर, सुन्दरगढ़

बेराहमपुर गोशाला
बेराहमपुर, गांजे

रईरंगपुर मार्केट
रईरंगपुर, मयूरगंज

रैरंगपुर गोशाला
रैरंगपुर मार्केट, रैरंगपुर, मयूरगंज

विक्टोरिया गोरक्षनो सभा
चावलियागंज जगन्नाथ रोड, कट्टक

## मध्य प्रदेश

श्रीराम गोशाला
रामपायल, बालाघाट

श्री बलवंत रोव गोशाला
निकट गोले बिलडिंग, खरगाँव

गोपाल गोशाला
निकट उघान नया आबदी, मण्डसोर

अहिल्या गोशाला
निकट रेलवे क्रासिंग,
लालबाग रोड, इन्दोर

ज्वाहर मार्ग
लनखेड़ा, सालापुर

श्री बाबूलाल जी माहेश्वरी
गोपाल गोशाला
कली हवेली, नोलाईपुरा



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पू० श्री धतुरा महाराज
माहिदपुर, उज्जैन

गोशाला बलावरी
बुद्धनी, सीहोर

श्री कृष्ण गोशाला
कटोरा तालाब, रायपुर

श्री गोपाल गोशाला
रागिन, रायपुर

श्री गोशाला पिन्जरापोल
राजनाथ गाँव, रायपुर

श्री कृष्ण गोशाला
दोसरगढ़, राजनाथ गाँव, रायपुर

श्री राष्ट्रिय गोशाला
धमतरी, रायपुर

श्री कन्हैयालाल जी भूतरा
माधव गोशाला, कन्टल, उज्जैन

श्री कृष्ण गोशाला
जेला, बिलासपुर

श्री चक्रधर गोशाला
रायगढ़

श्री गोशाला कमिटी गोशाला
नरियार, कटनी, जबलपुर

सदार्वत गोशाला
सतना

श्री हीरापुर गोशाला
हीरापुर, रायपुर

श्री गोपाल गोशाला
झटपारा, रायपुर

श्री गोपाल गोशाला
कवंधा राजनाथ गाँव, रायपुर

श्रीराम गोशाला
दुर्ग

श्री कृष्ण गोशाला
बिलासपुर

श्री कृष्ण गोशाला
छपा, बिलासपुर

श्री मदन मोहन गोशाला
खरसिया, रायगढ़

पिन्जरापोल गोशाला
जबलपुर

छपरा गोशाला
छपरा, सिरनी

श्री महावीर गोशाला
मोदहा पारा, रायपुर

## हरियाणा

श्री गोशाला
सर्फादो जिंद

श्री फुल्लू राधावली सधावरी
उचनाखुर्द, जिंद

श्री गोशाला
नखना, जिंद

श्री कृष्ण आदर्श गोशाला
सगलखा, करनाल

श्री बर्धमान गोशाला
पट्टीकलियाना, करनाल

श्री गोशाला
बपोली, करनाल

श्री गोशाला
पलवाल, फरीदाबाद

आर्य कन्या गुरुकुल
हसनपुर, फरीदाबाद

श्री गोशाला
कलयात, जिंद

श्री गोशाला (स्वामी गणेशानन्दजी)
उच्चनकला, जिंद

श्री गोशाला सोसाईटी
पानीपत, करनाल

श्री गाँधी स्मारक निधी गोशाला
पट्टीकर्लीयाँ, करनाल

श्री गोशाला
मधुबन (पाव के फूलों वाली)
करनाल

श्री पिन्जरापोल गोशाला
छयासा, फरिदाबाद

श्री कृष्ण चौंकसी गोशाला
हांदल, फरीदाबाद

श्री अमर सहीद कान्हा गोशाला
बहिन, फरीदाबाद

श्री गोशाला
चरखी दादरी, महेन्द्रगढ़

श्री एनातन धर्म गोशाला
थानेसर, कुरुक्षेत्र

श्री गोपाल गोशाला
गुरुकुल, कुरुक्षेत्र

श्री रामबाग गोशाला
अम्बाला छावनी, अम्बाला, पंजाब

श्री गोशाला
बीगट नगर, अम्बाला, पंजाब

श्री गोशाला
फरुक नगर, गिरगाँव

श्री गोशाला
टिकली, गुरगाँव

श्री गोशाला बाबा राजपुरी वाली
बाटा, जिंद

श्री आदर्श गोशाला
सातनली, महेन्द्रगढ़

श्री गोशाला
दरबारपुरी, समभदा, रामपली, कुरुक्षेत्र

श्री कुरुक्षेत्र गोशाला
कैंथल, कुरुक्षेत्र

श्री गोशाला (नन्दा जी)
वली, कुरुक्षेत्र



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री गोपाल गोशाला
जगधारी, अम्बाला

श्री गोशाला
गुड़गाँव

श्री गोपाल गोशाला
नूह, गुड़गाँव

श्री मेवट क्षेत्र गोशाला समिति
फिरोजपुर, झीरका, गुड़गाँव

श्री कुरुक्षेत्र गोशाला
जिंद

श्री गोपाल गोरस गोशाला
गुजरानी, भिवानी

श्री बाबा हरगिरी गोशाला
घनाना, भिवानी

श्री विद्यापीठ हरियाणा कुरुक्षेत्र गोशाला
भैसवल, सोनीपत

श्री कृष्ण आदर्श गोशाला
गोहना, सोनीपत

श्री कृष्ण आदर्श गोशाला
सामदी, सोनीपत

श्री गोशाला
जखोली, सोनीपत

श्री गोशाला मण्डी
उबवली, सिरसा

श्री कृष्ण गोशाला
कलवली, सिरसा

श्री गोशाला
रतिया, सिरसा

श्री गोपाल गोशाला
लोहारु, भीवानी

श्री गोशाला
सोनीपत

श्री गोशाला
भातगाँव, सोनीपत

श्री गोशाला
बाली ब्राहम्ण, सोनीपत

श्री चैरीटेबल गोशाला
सिसना, सोनीपत

श्री गोशाला
गन्नोर, सोनीपत

श्री गोशाला कमेटी
सिरसा

श्री गोशाला
ऐलानाबाद, सिरसा

श्री गोपाल गोशाला
नारनोंले, महेन्द्रगढ़

श्री कृष्ण गोशाला
नसवाला, हीसार

श्री गोशाला
तोहना, हीसार

श्री कृष्ण गोशाला
खरिया, हीसार

श्री गोशाला
शीशाह, हीसार

श्री हरियाणा पिन्जरापोल गोशाला
रोहतक, गोखरन, रोहतक

श्री पुरानी गोशाला
झानजर, रोहतक

श्री जैरामदास पंचाईती गोशाला
बेरी, रोहतक

श्री गोशाला
खिदावली, रोहतक

श्री गोशाला ट्रस्ट
भीवानी

श्री गोशाला
उकनाला, हीसार

श्री हरियाणा गोशाला
फतेहाबाद, हिसार

श्री गोशाला
जाख्रर, हिसार

श्री गोशाला
चांग, हिसार

श्री वैश्य व्यायामशाला गोशाला
रोहतक

श्री पंचाईती गोशाला
क्लानौर, रोहतक

श्री गोशाला
दीघल, रोहतक

श्री गोशाला ऐसोसिएशन
भवानीखेरा, भीवानी

श्री वैश्य अग्रसेन गोशाला
अग्रोहा, हिसार

श्री हरियाणा गोशाला
हर्न्सी, हिसार

श्री हरियाणा कुरुक्षेत्र गोशाला
हिसार

श्री गोपाला गोशाला
हंसी, हिसार

## राजस्थान

श्री लालजी महाराज बाबा
सवलदास की गोशाला,
भारतपुर, राजस्थान-321001

गोसदन
दोसा, गोसदन, राजस्थान-303303

श्री दामोदर गोशाला
निवई, टोंक, राजस्थान - 304021

श्री आर्युदेव गोशाला
सिरोही, राजस्थान - 307001

श्री गोसेवा समिति
लूनल, सिरोही

श्री पिन्जरापोल गोशाला
अहौर, जालौर, राजस्थान - 307029



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री जीव दया गोशाला
भिनमल, जालोर,
राजस्थान-343029

श्री गुरुकुल गोशाला
चित्तौड़गढ़, राजस्थान-312001

श्री म्युनिस्पल बोर्ड गोशाला
कोटा, राजस्थान-324001

श्री गाँधी गोशाला
टोंक, राजस्थान-304001

श्री जमनालाल बजाज गोशाला
वंसथली, टोंक, राजस्थान-304021

श्री राम कृष्ण गोपाल पानी सेवा
समिती गोशाला
शिगंज, सीरोही, राजस्थान-307027

श्री गोपाल गोशाला
आबू रोड, सीरोही,
राजस्थान-307026

श्री सरपोश्वर शिव मन्दिर गोशाला
सीयाना, जालोर

श्री महावीर जीव दया गोशाला
सचोर, जालोर, राजस्थान-343041

श्री जीव दया प्रबोधक मण्डल
अजौघर, जालोर

श्री रामदेव गोशाला
रामदेव, जैसलमेर, राजस्थान-345023

श्री पिन्जरापोल गोशाला
मादता शहर, नगोर,
राजस्थान-341510

श्री रामानन्द गोशाला
लदनू, नगोर, राजस्थान-341306

श्री गोविन्द गोशाला
नवा, नगोर, राजस्थान-341509

श्री सत्यनरायण गोशाला
मोलासर, नगोर, राजस्थान-341506

श्री गोपाल गोशाला
सुजानगढ़, चुरु, राजस्थान-331507

श्री जीवदया गो सेवा सघ
सीवाना, चुरु, राजस्थान-343044

श्री नाथ जी गोशाला
नाथद्वारा, उदीपुर, राजस्थान-313301

श्री सार्वजनिक गोसेवा समिती
उदवपुर, राजस्थान - 313001

श्री कृष्ण गोशाला
बड़, कोटा, राजस्थान - 325205

श्री राम गोशाला
नागौर, राजस्थान - 341001

श्री अनाथ गोरक्षा समिती गोशाला
देह, नगोर, राजस्थान - 341050

श्री चामुण्डा देवी गोशाला
तरनाऊ, नागोर, राजस्थान-341050

श्री घाटवा गोशाला धमार्थ ट्रस्ट
घाटवा, नवा, नागौर, राजस्थान-341508

श्री जैन श्वेताम्बर नकोड़ा पा० गोशाला
मावानगर, चुरु, राजस्थान - 344022

श्री गोशाला
बलोत्रा, चुरु, राजस्थान - 344022

श्री विद्या भवन सो० गोशाला
उदयपुर, राजस्थान - 313001

श्री जनता कालेज गोशाला
दाबोक, उदयपुर, राजस्थान - 313022

श्री कृष्ण मुरारी गोशाला
कोटा, राजस्थान - 324001

श्री गोशाला समिती
पीलीबंगा, श्री गंगानगर

श्री सार्वजनिक गोशाला
फलोदी, जोधपुर, राजस्थान - 342301

श्री मारवार गोपालक संघ -
दयानन्द गोशाला
मन्दोर, जोधपुर, राजस्थान - 307513

श्री जैन श्वेताम्बर संघ सभा
पिन्जरापोल गोशाला, फलोदी, जोधपुर
राजस्थान - 342301

श्रीनाथ कृष्ण गोशाला
पीपद ईती, जोधपुर, राजस्थान-342601

श्री श्याम गोशाला
चौपसनी, जोधपुर, राजस्थान-342001

श्री भोपाल गोसदन
भोपालगढ़, जोधपुर, राजस्था।-342603

श्री गंगा गोशाला
चोट्टी, ख्याटू, नागोर, राजस्थान-341302

श्री कृष्णा गोशाला
मारवार मुर्वा, नागोर, राजस्थान-341026

श्री सीवाची गेट गोशाला
जोधपुर, राजस्थान-342001

श्री सनातन धर्म गोशाला
मन्डोर, जोधपुर, राजस्थान-307513

श्री ब्रह्मचारी गोशाला
पन्नालाल गोशाला धमार्थ ट्रस्ट कागा
जोधपुर, राजस्थान - 342001

श्री पिन्जरापोल गोशाला
किचन, जोधपुर, राजस्थान-342308

श्री प्रताप गोशाला
चौपसनी, जोधपुर, राजस्थान-342001

श्री जै शिव गोपाल गोशाला
हरियारा, जोधपुर, राजस्थान-342605

श्री कृष्ण गुलाब गोशाला
निम्बीजोधा, नागोर, राजस्थान-341316

श्री कुचमन गोशाला
कुचमन शहर, नागोर, राजस्थान-341508

श्री गोपाल गोशाला
डिड़वाना, नागोर, राजस्थान-341303

श्री मानव सेवा संघ प्रेम निकेतन
आश्रम गोशाला, गर्गपुरा, बाड़मेर,
राजस्थान-302004

श्री माहेश्वरी गोशाला
झाई, बाड़मेर, नागोर, राजस्थान-302001

श्री गोशाला
रायसिंह नगर, गंगानगर, राजस्थान-335051



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री गोशाला
श्री गंगानगर, राजस्थान-335001

श्री गोशाला
भदग, गंगानगर, राजस्थान-335501

श्री गोशाला समिती
हनुमानगढ़, श्री गंगानगर,
राजस्थान-335513

श्री गोशाला
श्री विजयनगर, श्री गंगानगर,
राजस्थान-335704

श्री गोशाला
पदमपुर, श्री गंगानगर,
राजस्थान-335041

भगवान श्री कृष्ण गोशाला
संगरिया, श्री गंगानगर,
राजस्थान-335063

श्री ग्रामोदय गोशाला
रदवास, बाड़मेर, राजस्थान-335501

श्री आदर्श गोपाल कंन्द्र
प्राकृतिक चिकित्सालय गोशाला
बापूनगर, जैपुर, बरमेर

श्री गोशाला
नोहर, गंगानगर, राजस्थान-335523

श्री गोशाला
सुरतगढ़, गंगानगर, राजस्थान-335804

श्री गोशाला
श्री करणपुर, गंगानगर, राजस्थान-335073

श्री गोशाला समिती
सदुलशहर, श्री गंगानगर,
राजस्थान-335062

श्री गोशाला
अनुपगढ़, श्री गंगानगर,
राजस्थान-335701

श्री गोशाला
केशरीपुर, श्री गंगानगर,
राजस्थान-335027

श्री कृपि महाविद्यालय गो० गा० वी०
संगरिया, श्री गंगानगर,
राजस्थान-335063

श्री पिन्जरापोल गोशाला
लक्ष्क्सर, बिकानेर, राजस्थान-334201

श्री गोपाल गोशाला
गुलाबपुरा, भिलवाड़ा,
राजस्थान-311021

श्री गोपाल गोशाला
भिलवाड़ा, राजस्थान - 311001

श्रीसंवासदन कृषि गोसेवा कंन्द्र गोशाला
भिलवाड़ा, राजस्थान-311001

श्री गोपाल गोशाला
हिन्दोन, सवाई माधोपुर,
राजस्थान-322230

श्री यादववती गोशाला
करोली, सवाई माधोपुर,
राजस्थान-322241

श्री गो सेवाश्रम आदर्श स्वाध्याय
याग गोशाला
सकर, सवाई माधोपुर,
राजस्थान-322201

श्री हनुमंत गोशाला बड़के बालाजी
सांगपुर, बाड़मेर, राजस्थान-302001

श्री कृष्ण गोशाला
पावता, बरमेर, राजस्थान-303106

श्री महावीर गोशाला
मलकिसर, बिकानेर, राजस्थान-334604

श्री पशुपतीनाथ गोशाला
शाहपुरा, भिलवाड़ा,
राजस्थान-311404

श्री ग्राम विद्यायलय गोशाला
सुवना, भिलवाड़ा, राजस्थान

श्री गोशाला सवाईभोज
असिंद, भिलवाड़ा, राजस्थान

श्री महावीर गोशाला
श्री महावीर जी,
सवाई माधोपुर, राजस्थान-322220

श्री गोपाल गोशाला
गंगापुर सिटी,
सवाई माधोपुर, राजस्थान-322201

श्री सुमेर गोशाला
बाड़मेर, राजस्थान-344001

श्री गोपाल गोशाला
साभर लेख, बाड़मेर, राजस्थान-303604

श्री लक्ष्मी नारायण गोशाला
जैयपुर, बाड़मेर, राजस्थान-302003

श्री पुश्कर गोअदी गोशाला
अजमेर, राजस्थान-305001

श्री गोशाला
केकरी, अजमेर, राजस्थान-305404

श्री तिजारती चैम्बर सर्राफन गोशाला
ब्यावार, अजमेर, राजस्थान-305901

श्री उमैद गोशाला
सोजत शहर, पाली, राजस्थान-306104

श्री श्वेताम्बर जैन पिन्जरापोल
ताखतगड़, पाली, राजस्थान-306912

श्री श्वेताम्बर तेरा० शं० स० आदर्श
दुधशाला, रनवास,
पाली, राजस्थान-306023

श्री पिन्जरापोल गोशाला
धर्मापुरा, पाली, राजस्थान-306401

श्री मुरली मनोहर गोशाला
धर्मपुरा, पाली, राजस्थान-306401

श्री मुरली मनोहर गोशाला
भीनासर, बिकानेर, राजस्थान-334403

श्री जुबली पिन्जरापोल गोशाला
बिकानेर, राजस्थान-334001

श्री सीता गोशाला
अजमेर, राजस्थान-305001

श्री दयानन्द कालेज गोशाला
अजमेर, राजस्थान-305001

श्री पिन्जरापोल गोशाला
धरेरी, पाली, राजस्थान-306704

श्री जीवदया गोशाला
सदरी, पाली, राजस्थान-306702



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री पिन्जरापोल गोशाला
बाली, पाली, राजस्थान-306701

श्री महावीर जैन गोशाला
चन्दावल नगर, पाली,
राजस्थान-306306

श्री गंगा गोशाला
नोखा, बिकानेर, राजस्थान-334803

श्री कर्णी गोशाला
देशनोक, बिकानेर, राजस्थान-334801

श्री गोशाला
नपसर, बिकानेर, राजस्थान-334201

श्री पिन्जरापोल गोशाला
जयपुर, राजस्थान-302003

श्री कृषी गोपाल केन्द्र
राजस्थान गोसेवा संघ, दुर्गापुरा,
जयपुर, राजस्थान-302004

श्री राजस्थान खादी संघ क्रीगो० गोशाला
छौमू, जैयपुर, राजस्थान-303702

श्री गोपाल गोशाला
श्री दुर्गागढ़, चुरु, राजस्थान-331803

गो सदन
ईन्द्रपुरी ईन्दला, गो सदन,
राजस्थान-322001

गो सदन
कोदमदेशर, गो सदन,
राजस्थान-322241

सार्वजनिक गोशाला
अलवर, राजस्थान-301001

श्री कृष्ण गोशाला
झलावर, राजस्थान-326001

गोसदन
ठेकरा, गोसदन, राजस्थान-334001

श्री मथुरेष गोशाला
बंधा धर्मपुरा, कोटा, राजस्थान-324001

श्री वेंकटेष गोशाला
काटा, राजस्थान-342001

श्री सार्वजनिक गोशाला
देवली, टोंक, राजस्थान-304804

श्री खड़ी ग्रामां० वि० म० गोशाला
गोविन्दगढ़, जैयपुर,
राजस्थान-303712

श्रीराम शंकर गोशाला
छापर, चूरु, राजस्थान-331502

श्री गोपाल गोशाला
तारानगर, चुरु, राजस्थान-331304

श्री रतनगढ़ पिन्जरापोल गोशाला
रतनगढ़, चुरु, राजस्थान-331023

श्री रतन नगर पिन्जरापोल गोशाला
चुरु, राजस्थान-331021

श्री गोशाला समिती
सरदार शहर, चुरु, राजस्थान-331403

श्री मदनेश गोशाला
मदनगंज किशनगढ़, अजमेर,
राजस्थान-3053201

श्री नरसिंह गोशाला
नर्सीगबाद, अजमेर, राजस्थान

श्री सार्वजनिक गोशाला
रायपुर, सिकर, राजस्थान

श्री कृष्ण गोशाला
सुरजगढ़, झुनझुनु, राजस्थान-333029

श्री मुकुन्द पिन्जरापोल गोशाला
मुकुन्दगढ़, झुनझुनु, राजस्थान-333705

श्री अलसीसर गोशाला
अलसीसर, झुनझुनु, राजस्थान-331025

श्री रघुनाथ गोशाला
खेतरी, झुनझुनु, राजस्थान-333503

श्री बिसायू पिन्जरापोल
सोसाईटी गोशाला
बिसायू, झुनझुनु, राजस्थान-331027

श्री कृष्ण गोशाला
चुरियाजीतगढ़, झुनझुनु,
राजस्थान-333701

श्री गोपाल गोशाला
झुनझुनु, राजस्थान-333001

श्री गोपीनाथ गोशाला
गुरहागोरजी, झुनझुनु, राजस्थान

श्री कृष्ण गोशाला
तिबाबासाई, झुनझुनु, राजस्थान-332717

श्री पिन्जरापोल सोसाईटी गोशाला
मलसीसर, झुनझुनु, राजस्थान-331028

श्री पिन्जरापोल गोशाला
नवलगढ़, झुनझुनु, राजस्थान-333042

श्री कृष्ण गोशाला
चिरावा, झुनझुनु, राजस्थान-333026

श्री गौरी शंकर गोशाला
बगर, झुनझुनु, राजस्थान-333023

श्री मण्डवा पिन्जरापोल गोशाला
मण्डवा, झुनझुनु, राजस्थान-333704

श्री कृष्ण गोशाला
उदयपुरी, झुनझुनु, राजस्थान-333307

श्री बिरला गोशाला
पिलानी, झुनझुनु, राजस्थान-333031

श्री गोपाल गोशाला
किशनगढ़, रेनवाल, जैयपुर,
राजस्थान-305802

श्री गोपाल गोशाला
निमकथाना, सीकर, राजस्थान-332713

श्री तोरावती प्रान्तीय गोशाला
निमकथाना, सीकर, राजस्थान-332713

श्री कृष्ण गोशाला
कावत, सीकर, राजस्थान-332708

श्री कृष्ण गोशाला
अजीतगढ़, सीकर, राजस्थान-332702

श्री फतेहपुर(राज) पिन्जरापोल गोशाला
फतेहपुर, सीकर, राजस्थान-332301

श्री कृष्णा गोशाला
गुहल, सीकर, राजस्थान-332706



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री कृष्णा गोशाला
रामगढ़, सीकर, राजस्थान-331024

श्री मोहन गोशाला
भूदोली, सीकर

श्री हरदयाल गोशाला
सीगरवत, सीकर,
राजस्थान-332030

श्री कृष्ण गोशाला
श्री माधोपुर, सीकर,
राजस्थान-332715

श्री कृष्णा गोशाला
खण्डेला, सीकर, राजस्थान-332709

श्री गोपीनाथ गोशाला
सीकर, राजस्थान-332001

श्री मदन गोशाला
लोसल, सीकर, राजस्थान-332205

श्री लक्ष्मन पिन्जरापोल गोशाला
लक्ष्मनगढ़, सीकर, राजस्थान-332311

श्री सीताराम गोशाला
रिंगस, सीकर, राजस्थान-332404

श्री गोपाल गोशाला
दन्ता, सीकर, राजस्थान-332702

श्री नकशला बाबा गोशाला
महुआ ग्राम, सीकर, राजस्थान-321608

श्री कलयाण आरोग्य सदन गोशाला
बजाजग्राम, सीकर, राजस्थान-332021

## कर्नाटका

पंचवट गोसेवा आश्रम
जनगेरी, मुलागी,
तलीका मुगोद (एन० के०)
कर्नाटका-581346

पदमावती गोशाला
विजयपुर, कोलर (कर्नाटका)

महीला विघापीठ गोशाला
केंजेरी तल, बगलोर

पिन्जरापोल सोसाईटी चमुनदीहीला
मैसूर, मैसूर (कर्नाटका)

गदग पिन्जरापोल चैरीटेबल इन्सटिट्यूट
कैलासपुर रोड, गदग थरेर्द (कर्नाटक)

चिर्लरापूरामठ गोशाला
भीराली, उत्तर मनाडा (कर्नाटका)

गोरक्षन कमीटी गोशाला
मलियाबाद, रैचुर (कर्नाटका)

श्री रधेन्द्र गोशाला
गंगापुर, कोलर (कर्नाटका)

राज राजेश्वरी गोशाला
कचेनट्टी, बंगलोर (कोलर) कर्नाटका

कर्नाटका प्रेमी दया संघ गोशाला
करमगला, बंगलोर

व्यापारी गोसमर्कसुन साला
निप्पनी, बेलगम

हुबली पिन्जरापोले संस्था
कर्वार रोड, हुबली, धारवाड़
(कर्नाटका)

जैन महावीर गोशाला
कोप्पल, रायचुर-58323

कृष्ण गोरक्षन ट्रस्ट गोशाला
नन्दा गोकुल, कोदाश्रम, उडापी,
कगलोर-576116

पंचवटी गोसेवा आश्रम
जनगढ़ी, मलागी, तलुका, मुनगोड,
नार्थ कनरा, कर्नाटका-581346

किराना मर्चेंट
छन्नापट्टना बाजार, सिरीसी (एन० के०)
कर्नाटका - 581401

येम्मीदोदी गो सदन
येम्मीदोदी तल खुर
चिक्चमगलोर (कर्नाटका)

## दिल्ली

श्री स्वामी जी महाराज गोशाला
बकावली, अलीपुर, दिल्ली

गोशाला
शाहदरा, दिल्ली - 110032

गोशाला
बावना, दिल्ली

श्री गोपाल गोशाला
ईन्द्रप्रस्त फरीदाबाद क्षेत्र,
नई दिल्ली - 110044

गोशाला
जनपहागढ़, दिल्ली

गोशाला
नरेला, दिल्ली

पिन्जरापोल गोशाला
किशनगंज, दिल्ली-110007



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला, वाराणसी

## रामेश्वर शाखा

## दानदाताओं का विवरण १९९८-९९

### गोपाष्टमी संवत् २०५५

| दानदाता | रुपया | दानदाता | रुपया | दानदाता | रुपया |
|---|---|---|---|---|---|
| सेठ किशोरीलाल जालान सेवाट्रस्ट | ९, ८३०३६ | रामेश्वर दास अग्रवाल | ६००० | महेश जी | ५००० |
| सुरभि शोध संस्थान | ४, २०,००० | स्व० सीतारामजी खेमका | ६००० | रमेश जी | ५००० |
| श्रीमती विद्यावतीदेवी-अमरोहा | १,००,००० | संजय आयरन स्क्रेप वर्क्स | ६००० | सुरेश जी | ५००० |
| श्री वेंकटेश गोरक्षिणी ट्रस्ट-हैदराबाद | २५,००० | नन्दलाल मातादीन सेवाट्रस्ट | ६००० | त्रिभुवन जी- वाराणसी | ५००० |
| लालजी शुक्ला | १६,००० | श्रीमती सीतादेवी | ६००० | ओम प्रकाश जी | ५००० |
| श्रीमती कृष्णा बर्मन | १५.००० | एम०डी०अग्रवाल | ६००० | राकेश जी | ५००० |
| श्री रामकृपा | १२,५३६ | रेशम वस्त्रालय | ६००० | राधेश्याम जी | ५००० |
| श्री श्यामसुन्दरजी अग्रवाल-वृन्दावन | ११,००० | सेठनन्दरामको भिवानी चैरिटेबुल ट्रस्ट | ६००० | शैलेश जी | ५००० |
| गोकुल प्रिंटर्स-महमूरगंज | ११,००० | विष्णु पुरुषोत्तम केवट-वाराणसी | ५८०० | राधेमोहन जी | ५००० |
| रामकुमार रूँगटा | ११,००० | हरिरामजी सुल्तानियाँ | ५१००० | अनिल जी | ५००० |
| केदारनाथ भालोटिया | १०,००० | श्रीमती सीता देवी मार्फत भगवानदास | ५१३० | पुरुषोत्तम जी | ५००० |
| कमल जी शर्मा | १०,००० | गोपीलाल चेरिटेबुल ट्रस्ट | ५१०० | मुकेश जी | ४००० |
| सीताराम जी-कलकत्ता | १०,००० | नन्दलाल बाजोरिया चेरिटेबुल ट्रस्ट | ५१०० | मानस साड़ी-बंगलौर | ५००० |
| राधेश्याम जी-कलकत्ता | १०,००० | गौरीशंकर सर्राफ चेरिटेबुल ट्रस्ट | ५१०० | महावीर प्रसाद श्यामसुन्दर-कोराँव | ५००० |
| गोविन्दजी | १०,००० | नेसार एण्ड कं० मऊनाथभंजन | ५१०० | श्रीमती गायत्री देवी वाजोरिया | ५००० |
| राधेमोहन जी | १०,००० | गुरुनानक इंगलिश स्कूल-शिवपुर | ५००१ | पुरुषोत्तमदास-गोरखपुर | ५००० |
| शिवमोहन जी | १०,००० | हरिशंकर प्रसाद मोदी | ५००० | सत्यनारायण धूत | ५००० |
| लक्ष्मीनारायण जी | १०,००० | ब्राइट स्टार सिल्क इन्डस्ट्रीज-बम्बई | ५००० | राजेश्वरी जी | ४९०० |
| नन्दकिशोर जी | १०,००० | श्रीमती शशि अग्रवाल | ५००० | विवेक जी | ४९०० |
| महेश जी | १०,००० | ओम प्रकाश कुशवाहा | ५००० | लवकुश जी | ४९०० |
| शिवशंकर जी | १०,००० | गणेशजी-वाराणसी | ५००० | रामाश्रय जी | ४९०० |
| बाँके बिहारी जी | १०,००० | कृपाशंकर जी | ५००० | उमाशंकर जी | ४९०० |
| गोपाल जी | १०,००० | मनोज जी | ५००० | गोविन्द जी | ४८०० |
| बैजनाथ जी | १०,००० | अवधेश जी | ५००० | इन्द्रकुमार जी | ४८०० |
| विवेक जी | १०,००० | विवेकजी | ५००० | शिवगोपाल जी | ४८०० |
| विनोद जी | १०,००० | रमाशंकर जी | ५००० | रामलखन जी | ४८०० |
| कृष्ण मोहन जी | ८९७९ | गोपाल जी | ५००० | मिथिलेश जी | ४७०० |
| जनरल इलेक्ट्रिकल्स | ८००० | योगेश जी | ५००० | सत्यप्रकाश जी | ४७०० |
| विश्वम्भर दास अग्रवाल-वाराणसी | १२,७६७ | सुनील जी | ५००० | प्रेमशंकर जी | ४७०० |
| जनरल सेल्स सर्विस | ७००० | प्रमोद जी | ५००० | मुकेश जी | ४६०० |
| सुरेका पब्लिक चेरिटी ट्रस्ट-नई दिल्ली | ७००० | विनोद जी | ५००० | सुशील जी | ४६०० |
| गणेशराम तेजाराम चौधरी-जोधपुर | ७१४६ | दिनेश जी | ५००० | सूर्यनाथ जी | ४६०० |
| केशवनीलू स्टील प्रा०लि० | ६००० | गौरीशंकर जी | ५००० | जयशंकर जी | ४६०० |
| अशोक जी अग्रवाल | ६००० | शिवशंकर जी | ५००० | जयप्रकाश जी | ४५०० |



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

| दानदाता | रुपया |
|---|---|
| बैजनाथ जी | ४५०० |
| बृजभूषण जी | ४६०० |
| मायाशंकर जी | ४५०० |
| कृष्णगोपालजी | ४४०० |
| सत्यनारायण जी | ४२०० |
| महेश जी | ४१०० |
| प्रमोद जी | ४३०० |
| अशोक जी | ४१०० |
| राजस्थान कारपोरेशन | ४१०० |
| संजीव जालान | ३५२० |
| दीपक जालान-कलकत्ता | ३१०० |
| नेशनल सिल्क मिल्स | ३१०० |
| हनुमान प्रसाद पोद्दार स्मृति सेवा ट्रस्ट | ३१०० |
| गोविन्द जी पाली | ३१०० |
| जाफरी एण्ड संस-जलीलपुर | ३१०० |
| नसरुद्दीन-टाण्डा | ३१०० |
| रामअवतार खेमका | ३०६८ |
| देवता सिल्क हाउस | ३००० |
| जालान सिल्क मि० | २५०० |
| पवन मोदी | २५०० |
| रमाकान्त द्विवेदी | २४०० |
| वैभव-वाराणसी | २२५१ |
| मो० अख्तर-टाण्डा | २१०० |
| सेठ नन्दलाल बाजोरिया सेवा ट्रस्ट | २१०० |
| सारनाथ कोल्ड स्टोरेज | २१०० |
| भारत विकास परिषद् | २१०० |
| टापमैन फैब्रिक्स-बम्बई | २१०० |
| रामजी-फरीदाबाद | २००० |
| शाह वृजभूषण दास एण्ड कं० | १७०० |
| शाहमधुसूदन एण्ड कं० | १६५० |
| शाहवृजभूषणदास, मधुसूदन एण्ड कं० | १६५० |
| दौलत राम ब्रदर्स | १६०७ |
| हरिआयल स्टोर्स | १५६९ |
| सीतादेवी अग्रवाल-शिवपुर | १५०१ |
| थानमल मालमेटिया | १५०० |
| मौसी जी | १५०० |
| राधेश्याम जी | १२८० |
| सूरजमल केदारनाथ-भालोटिया | ११०० |
| यूनिक सेकेण्ड्री-गाँधीनगर | ११०० |
| समस्त डिडवानियाँ-सहयोगी | ११११ |
| कीर्तिवेग्मनी | ११०० |
| सीताराम सेवा ट्रस्ट-बम्बई | ११०० |
| सपना गाड़ोदिया-कलकत्ता | ११०० |
| नन्दलाल जी भगवान दास | ११०० |
| गणेशलाल गोयल | ११०० |
| निर्मल कुमार भगत-कलकत्ता | ११०० |
| स्व० अर्जुन भाई पटेल | ११०० |
| शिव प्रसाद जी | १०२१ |
| जयकृष्ण वर्मन | १००० |
| श्यामसुन्दर कानोडिया | १००० |
| प्रमोद श्रीवास्तव | १००१ |
| डॉ० कुसुम अग्रवाल | १००० |
| विश्वनाथ प्रसाद एण्ड सन्स-भदोही | १००० |
| डॉ० उदयनारायण दूबे-जौनपुर | ९०१ |
| ऋतुदीप-बुलानाला | ८६७ |
| अनन्तराम चौरसिया | ८२४ |
| माँगीलाल शारदा | ८२१ |
| कमलेश भाई | ८०० |
| गोविन्द जी | ७८१ |
| लक्खीरामजी अग्रवाल | ७४२,६८ |
| दुर्गाचरण इण्टर कॉलेज | ७०१ |
| मातादीन अग्रवाल | ७७१ |
| अनिरुद्ध फूड्स प्रा०लि० | ६१९ |
| वीणा दीदी-हापुड़ | ६४१ |
| सुदर्शन कुमार | ५०१ |
| विशेश्वर जी धूत | ५०१ |
| शिवभगवान जी | ५०१ |
| सोहनी देवी राठी | ५०१ |
| मथुरालाल जी राठी | ५०१ |
| राजकुमार जी राठी | ५०१ |
| मानिकदास | ५०१ |
| श्रीमति सुमित्रा देवी | ५०१ |
| प्रदीप कुमार | ५०१ |
| पवन जी अग्रवाल | ५०१ |
| राधेश्याम जी बागला | ५०१ |
| राजस्थान मार्बल | ५०१ |
| वी०एल०चौधरी | ५०१ |
| लक्ष्मी नारायण झँवर | ५५३ |
| रामभूषणदास शुक्ला-खीरीलखीमपुर | ५०१ |
| घनश्याम राठी | ५०१ |
| रामअवतार बजाज | ५०१ |
| एस० एम० ददियाजी-दिल्ली | ६६० |
| भुरारिया ब्रदर्स | ६३१ |
| लक्ष्मीदेवी-चूड़ीवाला | ५०० |
| किशन बैग हाउस-हड़हासराय | ५०० |
| कृष्णापण अस्तु | ५०० |
| श्रीमती रामवती देवी | ५०० |
| रामलौटन बहादुर शाह | ५०० |
| विमल जी डिडवानियाँ | ५०० |
| डालमियाजी-पटना | ५०० |
| काशी अनाथालय एसोसीएशन | ५०० |
| अरुणकुमार मिश्रा | ५०० |
| गोविद आहार | ३४५,६६४ |
| गोलकपेटी एवं फुटकर दानदाता | ८५८१४७,९५ |
| योग | ३५,१८३,६४,६३ |

## गोलघर-शाखा दानदाता १९९७-९८

| | |
|---|---|
| श्री महेशजी पोद्दार-कलकत्ता | १,५०,०००-०० |
| श्री नन्दलाल मातादीन सेवा ट्रस्ट | १,३५,०००-०० |
| श्री मुखराम अग्रवाल चे०ट्र० | १,३५,०००-०० |
| श्री सीताराम सेवा ट्रस्ट | १,००,०००-०० |
| श्रीमती विद्यादेवी, अमरोहा | ९०,०००-०० |
| श्री एनीमल वेल्फेयर बोर्ड-चेन्नई | ५०,०००-०० |
| श्री नन्दरामका भिवानी चे०ट्र० | २५,०००-०० |
| श्री जैक्शन जेनेरेटर प्रा०लि० | २४,०००-०० |
| श्री विशाल पाइप लि० | २१,०००-०० |
| श्री कुमार इन्जी० | १७,१६०-०० |
| श्री घनश्याम प्रिन्टर्स | १६,०००-०० |
| श्री यन०अग्रवाल | १५,०००-०० |
| श्री एस०एन०श्रीवास्तव | १४,०००-०० |
| श्री शुभम् | १३,०००-०० |
| श्रीमती एस० एल० अग्रवाल | १२,०००-०० |
| श्री भरत भाई | ११,०००-०० |
| श्री वृजमोहन मूँदड़ा | ११,०००-०० |
| श्री गौरी शंकर सर्राफ | ११,०००-०० |
| श्री एस०वी०साड़ी प्रा०लि० | ११,०००-०० |
| श्री शंकर लाल जाजोदिया | ११,०००-०० |
| श्री आर०के०कोठारी | ११,०००-०० |
| श्री रामनिरंजन सर्राफ | ११,०००-०० |
| श्री रोशनलाल जी | ११,०००-०० |
| श्री जवाहर लाल जी | ११,०००-०० |
| श्रीमती विमला देवी पोद्दार | १०२००-०० |
| श्री जे०के०अग्रवाल | १०,०००-०० |
| श्री के०के०अग्रवाल | १०,०००-०० |
| श्रीमती राधा देवी कोठारी | १०,०००-०० |
| श्री सी०के० कोठारी | १०,०००-०० |
| श्री आई० के० कोठारी | १०,०००-०० |
| श्री आशिष मूँन्दड़ा | १०,०००-०० |
| श्री विश्वनाथ जी डिडवानियाँ | १०,०००-०० |
| श्री भगवानदास जी | ९०००-०० |



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

| दानदाता | रुपया |
|---|---|
| श्री ग्रीन लैण्ड कं० | ८२७७-०० |
| श्री रामकुमार जी रूँगटा | ७५०१-०० |
| कुमारी ऊषा | ७०००-०० |
| कुमारी सीमा | ७०००-०० |
| श्री दीपक कुमार जी | ७०००-०० |
| श्री ओमप्रकाश जी | ७०००-०० |
| श्री राजकुमार जी | ७०००-०० |
| श्री प्रदीप कुमार जी | ७०००-०० |
| श्रीमती सरोज देवी सोमानी | ६५००-०० |
| स्व०श्रीमति कलावती देवी | ६०५५-०० |
| श्री गोपाल दास माहेश्वरी | ६०००-०० |
| श्री खेमचन्द माहेश्वरी | ६०००-०० |
| श्री सुन्दर लाल रतेरिया | ६०००-०० |
| श्री मार्निंग क्लब | ६०००-०० |
| श्री मनोज कुमार सरावगी | ६०००-०० |
| श्री शेख फरीद | ५२०१-०० |
| श्री विशन लाल छोटे लाल | ५१००-०० |
| श्री पवन कुमार प्रदीप कुमार | ५१००-०० |
| श्री महेश यार्न, साड़ीज | ५१००-०० |
| श्री संजय कुमार अग्रवाल | ५१००-०० |
| श्री विंध्यवासिनी प्रसाद अग्रवाल | ५१००-०० |
| श्री काशी नाथ चौधरी | ५१००-०० |
| श्री अतुल माहेश्वरी | ५१००-०० |
| श्री नवनीत दास मुकुन्द दास | ५१००-०० |
| श्री राधेश्याम सीता देवी राठी | ५१००-०० |
| श्री सिल्क इण्टरप्राईजेज | ५१००-०० |
| श्री अमृत सिल्क स्टोर्स | ५१००-०० |
| श्री सुरेका हैन्डलूम | ५१००-०० |
| श्री कन्हैया लाल जेठ मल | ५१००-०० |
| श्री माहेश्वरी सिल्क स्टोर्स | ५१००-०० |
| श्री विश्वनाथ प्रसाद नन्दलाल | ५१००-०० |
| श्री नवकेतन साड़ीज प्रा०लि० | ५१००-०० |
| श्रीमती प्रीति अग्रवाल | ५१००-०० |
| श्री हरिनारायण सरोज | ५१००-०० |
| श्री मनोज कुमार गिनोदिया | ५१००-०० |
| श्री अशोक साड़ी इम्पोरियम | ५१००-०० |
| श्री जवान-पुरिया टेक्सटाइल्स | ५१००-०० |
| श्रीमती किशोरी देवी | ५१००-०० |
| श्री गिरजा इन्वेस्टमेन्ट | ५१००-०० |
| श्री गणेशम साड़ीज | ५०००-०० |
| श्री देवी प्रसाद (लहरतारा) | ५०००-०० |
| श्री सुडा रामजी जाजोदिया | ५०००-०० |
| श्री अग्रवाल स्टोर्स | ५०००-०० |
| श्री राकेश कोठारी | ५०००-०० |
| श्री शिवकुमार कोठारी | ५०००-०० |
| श्री नन्दलाल जी-चौक | ५०००-०० |
| श्री सुमित कला केन्द्र | ५०००-०० |
| श्री पूनम साड़ी | ५०००-०० |
| श्री अग्रवाल साड़ी निकेतन | ५०००-०० |
| श्री प्रभात केजरीवाल | ४५००-०० |
| श्री किशन लाल ऋषिकेश | ४४०१-०० |
| श्री चन्द्र कुमार गुप्ता | ४०००-०० |
| श्री रवि कुमार गुप्ता | ४०००-०० |
| श्री सतीश कुमार गुप्ता | ४०००-०० |
| श्रीमती दुर्गा देवी | ३६००-०० |
| श्री जवाहर लाल मानिक लाल | ३६००-०० |
| श्री देवता कलेक्शन | ३६००-०० |
| श्री जानकी वल्लभ करवा | ३५००-०० |
| श्री जोशी जी | ३३००-०० |
| श्री केडिया यार्न ट्रेडर्स | ३१००-०० |
| श्री सुरेका पब्लिक चे०ट्र०-दिल्ली | ३०००-०० |
| श्री किशन लाल केजरीवाल | ३०००-०० |
| श्री देवता कलेक्शन | ३०००-०० |
| श्री राधा देवी, किशन चन्द्र | २३०१-०० |
| श्रीमती सत्यभामा बाई<br>भुवालका,-कलकत्ता | २१००-०० |
| श्री स्तुति बजाज | २१००-०० |
| श्री तरु बजाज | २१००-०० |
| श्री राधेश्याम पेपर स्टोर्स | २१००-०० |
| श्री गंगा माता ट्रेडिका क० | २१००-०० |
| श्री वृजमोहन दास शाह चे०ट्र० | २१००-०० |
| श्रीमती गोमती देवी | २१००-०० |
| श्री जयदेव डिडवानियाँ | २१००-०० |
| श्रीमती सरस्वती देवी | २१००-०० |
| श्री जायसवाल एण्ड कं० | २१००-०० |
| श्री राजेश मौर्या | २१००-०० |
| श्रीमती दुर्गा बाई बाजोरिया-कलकत्ता | २१००-०० |
| श्रीमति कमला देवी दम्मानी-बम्बई | १८००-०० |
| श्री ललित बिहारी सिंघल | १५४०-०० |
| श्री राजेश जायसवाल | १५००-०० |
| श्री जयनरायना पचारिया | १५००-०० |
| श्री विशम्भरी सिल्क स्टोर्स | १२५४-९५ |
| श्रीमती सरस्वती देवी | १२५०-०० |
| श्री परमेश्वरी बाई बूबना | १२००-०० |
| श्रीमती किरन बाई पोद्दार | १२००-०० |
| श्री ओमकार मल पंसारी | ११५४-०० |
| श्री वी०एस०भटनागर-लखनऊ | ११२५-०० |
| श्री नन्द लाल भगवान दास | ११०१-०० |
| श्री विजय कुमार गिनोडिया | ११०१-०० |
| श्री हरि आयल स्टोर्स | ११०१-०० |
| श्री आलोक कुमार | ११००-०० |
| श्री जैपुरिया | ११००-०० |
| श्री सन्तोष देव डिडवानियाँ | ११००-०० |
| श्री घनश्याम जायसवाल | ११००-०० |
| श्री श्याम सिल्क सेन्टर | ११००-०० |
| श्री वैष्णो यार्न स्टोर्स | ११००-०० |
| श्री राधेकृष्ण अग्रवाल | ११००-०० |
| श्री एम०पी० अग्रवाल | ११००-०० |
| श्री जमुना साड़ी सेन्टर | ११००-०० |
| मे० अनुभव | ११००-०० |
| श्री कैलाश राठी | ११००-०० |
| श्री विजय खेतान | ११००-०० |
| श्री घासी रामजी<br>C/0 श्रीमती इन्द्रावती देवी | ११००-०० |
| श्री मुरली धर जाजोदिया | ११००-०० |
| श्री लद्दा हौजरी कम्पनी | ११००-०० |
| श्री कुंज बिहारी गुप्ता | १००१-०० |
| श्री अग्रवाल ट्रेडिंग कं० | १००१-०० |
| श्री रमेश कुमार चाण्डक | १००१-०० |
| श्रीमती दुर्गा देवी चौधरी-सेगांरी | १००१-०० |
| श्री रूपाजंली | १००१-०० |
| श्री गोपाल दास बनारसीदास | १०००-०० |
| श्री चम्पा लाल | १०००-०० |
| श्री सुखलाल राठी | १०००-०० |
| श्री चन्द्रमोहन | ७०१-०० |
| श्री मुरारी लाल अग्रवाल-कलकत्ता | ७००-०० |
| श्री शंकर लाल-कलकत्ता | ७००-०० |
| श्री नवीन जी | ७००-०० |
| श्री अनूप जी | ७००-०० |
| श्री भटनागर मेमोरियल चे०ट्र० | ६५०-०० |
| श्री विष्णु प्रसाद भरतीया | ६४०-०० |
| श्री अश्विनी कुमार ट्रेडर्स | ५५४-०० |
| श्री मितेष ट्रेडर्स | ५५४-०० |
| श्री गोवर्धन दास लक्ष्मीदास | ५५४-०० |
| श्री कन्हैया लाल महावीर प्रसाद | ५५१-०० |
| श्री भुवन दास | ५५१-०० |
| श्री गोपाल जी गोयल | ५३१-०० |
| श्री विजय वंका | ५०१-०० |
| श्री गोपाल दास | ५०१-०० |
| श्री सीताराम चाण्डक | ५०१-०० |
| श्री संजीव कुमार चांडक | ५०१-०० |
| श्री एन०के०आथा | ५०१-०० |
| श्रीमती द्रौपदी देवी | ५०१-०० |
| श्री ओम प्रकाश प्रमोद कुमार | ५०१-०० |
| श्री लक्खी राम जी गोयल | ५०१-०० |
| श्री दम्मानी एण्ड कं० | ५०१-०० |
| श्री ललित कुमार सिंघल | ५०१-०० |
| श्री रोहित कक्कड़ | ५०१-०० |



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

| दानदाता | रुपया |
|---|---|
| श्री जगदीश नारायण ऋषि नारायण | ५०१-०० |
| श्री लक्ष्मी नारायण | ५०१-०० |
| श्री भालोटिया सिल्क हाऊस | ५०१-०० |
| श्री सुमित कला केन्द्र | ५०१-०० |
| श्री स्व० ध्रुव कुमार अग्रवाल | ५०१-०० |
| श्री जनरल ट्रेडर्स | ५०१-०० |
| श्री राजस्थान कार्पोरेशन | ५०१-०० |
| श्री पोद्दार इण्टरप्राइजेज | ५०१-०० |
| श्री जीवन लाल सुमित्रा देवी | ५०१-०० |
| श्री भोला नाथ अग्रवाल | ५०१-०० |
| श्री एम०जी०चारु | ५०१-०० |
| श्री विशन दास जगदीश कुमार | ५००-०० |
| श्री प्रयाग नारायण झुनझुनवाला | ५००-०० |
| श्री अजय कुमार जैन | ५००-०० |
| श्री शोभित अग्रवाल | ५००-०० |
| श्री गोविन्द जी बजाज | ५००-०० |
| श्री राम निरंजन बाजोरिया | ५००-०० |
| श्री सद्भावना | ५००-०० |
| श्री शुभम् | ५००-०० |
| श्री जायसवाल यार्न एजे० | ५००-०० |
| अन्य फुटकर | १७५५५.०० |
| योग | १५१८७८९ |

## विशेश्वरगंज

| दानदाता | रुपया |
|---|---|
| श्री श्रीराम वृजेश कुमार | ५५००-०० |
| श्री रघुनाथ लक्ष्मी नारायण | ५१००-०० |
| श्री अभयराम चुन्नी लाल | ५०००-०० |
| श्री मोहन अग्रवाल | ३३६५-०० |
| श्री मुकुन्द लाल रमाशंकर | ३२००-०० |
| श्री रामनारायण काशीनाथ | ३१४३-२५ |
| श्री शम्भु नाथ अभय कुमार | ३०२६-०० |
| श्री मालपानी ट्रेडर्स | २५००-०० |
| श्री फ्रेण्ड्स इन्टरप्राइजेज | २४५२-०० |
| श्री शिवनारायण शम्भुनारायण | २४०२-०० |
| श्री नारायणदास विजय कु० | १५००-०० |
| श्री अग्रवाल साल्ट ट्रेडर्स | १५००-०० |
| श्री श्रीराम ट्रेडिंग कम्पनी | १५००-०० |
| श्री रामेश्वर दास पन्ना लाल | १५००-०० |
| श्री विश्वनाथ ट्रेडर्स | ११०१-०० |
| श्री सिंघल ट्रेडिंग कं० | ११०१-०० |
| श्री जगदम्बा इण्टरप्राइजेज | ११००-०० |
| श्री वाराणसी सुगर सप्लायर्स | ११००-०० |
| श्री बजरंग आयल मिल्स | ११००-०० |
| श्री प्रभात इण्टरप्राइजेज | ११००-०० |
| श्री अग्रवाल आयल ट्रेडर्स | ११००-०० |
| श्री संकठा जाविरी एण्ड ग्रेन मर्चेन्ट | ११००-०० |
| श्री गोवर्धन दास ओमप्रकाश | ११००-०० |
| श्री राजेन्द्र नाथ बनारसीदास | ११००-०० |
| श्री पुरुषोत्तमदास श्रीकृष्णदास | ११००-०० |
| श्री अन्नपूर्णा सुगर ट्रे० कं० | ११००-०० |
| श्री प्रभु राम राम जी | ११००-०० |
| श्री छन्नू लाल राजेश कुमार | ११००-०० |
| श्री गोपाल दास बाल कृष्णदास | ११००-०० |
| श्री सीता सरन लाल | ११००-०० |
| श्री अमर ट्रेडिंग कम्पनी | १००१-०० |
| श्री शिव शंकर उमाशंकर | १००१-०० |
| श्री राणी सती इण्टरप्राइजेज | १००१-०० |
| श्री छन्नू लाल बाल कृष्ण दास | १००१-०० |
| श्री शिव शक्ति उद्योग | १०००-०० |
| श्री आर० डी० सुगर सप्लायर्स | ७०१-०० |
| श्री शरण शंकर कृष्ण दास | ७०१-०० |
| श्री लक्ष्मी फूड ग्रेन मर्चेन्ट | ६५१-०० |
| श्री मुकुन्द दास एण्ड कं० | ६०१-०० |
| श्री चौथी राम चुन्नी लाल | ६०१-०० |
| श्री नरसिंह दास ओमप्रकाश | ५९२-९५ |
| श्री रमेश चन्द्र अग्रवाल | ५०१-०० |
| श्री कन्हाई लाल फकीर चन्द्र | ५०१-०० |
| श्री नरसिंह दास ओम प्रकाश | ५०१-०० |
| श्री गुलाबदास गोपालदास | ५०१-०० |
| श्री विशेश्वर प्रसाद गुलाब चन्द | ५०१-०० |
| श्री प्रकाश ट्रेडर्स | ५०१-०० |
| श्री विरम चन्द्र अग्रवाल | ५०१-०० |
| श्री छन्नू लाल लक्ष्मीनारायण | ५०१-०० |
| श्री आत्मा राम आशोक कुमार | ५०१-०० |
| श्री वाराणसी इस्पात उद्योग | ५०१-०० |
| श्री कन्हैया लाल एण्ड सन्स | ५०१-०० |
| श्री ओमप्रकाश श्रीप्रकाश | ५०१-०० |
| श्री आनन्द ट्रेडिंग कं० | ५०१-०० |
| श्री सरिता ट्रेडर्स | ५०१-०० |
| श्री छेदी लाल हीरा लाल | ५०१-०० |
| श्री विश्वनाथ प्रसाद कन्हैया लाल | ५०१-०० |
| श्री मूलचन्द गनपत लाल | ५०१-०० |
| श्री बालाजी गल्ला भण्डार | ५०१-०० |
| योग | ७७१६०.०० |

## गोलघर-गोलक पेटी

| दानदाता | रुपया |
|---|---|
| श्री बनारस आर्ट पैलेस | ९६००-०० |
| श्री राम वल्लभ गिन्नी प्रसाद | १७३४-०० |
| श्री हरि आयल मिल्स | १७१२-०० |
| श्री विश्वनाथ भावसिंहका | ११९०-०० |
| श्री घनश्याम जी माहेश्वरी | १००१-०० |
| श्री भोला नाथ अग्रवाल | ९१५-०० |
| श्री प्रकाश ट्रेडर्स | ८६७-०० |
| श्री जैकृष्ण राधा वृन्दावन धाम | ८०३-०० |
| श्री विजय कुमार कक्कड़ | ७६५-०० |
| श्री विशम्भरी सिल्क स्टोर्स | ७३२-०० |
| श्री चित्रकला | ६६५-०० |
| श्री भरत जी लडिया | ६०३-०० |
| श्री लड्ढा फार्मा एजेन्सी | ५५१-०० |
| श्री दिलीप बाजोरिया | ५४०-०० |
| श्री भवर लाल जी राठी | ५१५-०० |
| श्री मेघराज भगवान दास | ५०२-०० |
| श्री तिरुपति सप्लायर्स | ५०१-०० |
| श्री किशन चन्द महेश कुमार | ५०१-०० |
| श्री जयराम दास जी शाह | ५००-०० |
| फुटकर गोलक पेटी | १९९८३-२० |
| योग | ४३३८०-०० |



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri


*With Best Compliments on Gopashtmi*

# Agrawal Electric Company

Visheshwarganj, Varanasi-221 001

Ph. 331670, 331672 (Off.) 310734, 310735, 311001, 312001 (Res.)

AUTHORISED DEALER

**G.E.C. Bajaj, Philips, Dowells, Incab, Permacel, Crompton, Cinni, Tullu, L&T Switchgear**

SISTER CONCERN

# General Electricals

Bansphatak, Varanasi-221 001

Ph. 252055, 352723 (shop) 331671, 310734 (Resi.)

**Whirlpool-Kelvinator, Voltas Freeze, Samsung, Panasonic, Onida, BPL, Philips, Videocon T.V. Video Camera, Washing Machine, Venus Geyser, Milcent Chakki**

# Agrawal Electric Agencies

Dealer in all kinds of Electrical and Mechanical Goods

Machodari, Varanasi-221 001

Ph. 330080

AUTHORISED DEALER

'English Electric', Fusegear, 'Kirloskar' & 'Atul' Diesel Generating Set, Portable Shreeram Honda `WOLF' Electrical Portable Tools 'Varuna Pump 'Suguna' Deep well & Submersible Pump




Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला वाराणसी

( सदर, रामेश्वर, बावनबीघा )

## आय-व्यय १९९७-९८

चार्टर्ड एकाउन्टेण्ट
शिव एण्ड दीपक, वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# SHREE KASHI JEEVDAYA VISTARINI GOUSHALA & PASHUSHALA VARANASI

## BALANCE SHEET AS AT 31.03.1998

| | Amount |
|---|---|
| **Sources of Fund** | |
| Gaushala Fund | 10,18,774.96 |
| Capital Fund | 1,45,77,424.93 |
| Current Liabilities | 11,45,119.25 |
| | **1,67,41,319.14** |
| **Application of Fund** | |
| Fixed Assets | 1,36,77,669.93 |
| Investments | 3,12,600.00 |
| Live Stock | 15,15,566.00 |
| Inventories | 2,47,726.86 |
| Sundry Debtors | 56,944.78 |
| Advances | 7,48,775.55 |
| Security Deposit | 45,331.00 |
| Cash and Bank Balances | 1,36,705.02 |
| | **1,67,41,319.14** |

## INCOME & EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31.03.1998

| | |
|---|---|
| **A. Income** | |
| Porfit from Rameshwar Branch | — |
| Profit from Sadar Golghar Branch | 15,82,456.49 |
| Interest on S/B. A/C. | 708.00 |
| **Sub Total 'A' :** | **15,83,164.49** |
| **B. Expenditure** | |
| Statutory Audit Fees | 10,000.00 |
| Loss from Bawan Bigha Branch | 14,23,265.53 |
| Loss from Rameshwar Branch | 1,05,848.91 |
| Loss from Rathyatra Branch | 42,437.95 |
| **Sub Total 'B'** | **15,81,552.39** |
| ***Excess of Income over Expenditure*** | **1,612.10** |

**For M/s. Shiv & Deepak**
Chartered Accountants

Sd/-

(DEEPAK AGRAWAL)
Partner

PLACE : VARANASI
DATED : 09.10.1998



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# SHREE KASHI JEEVDAYA VISTARINI GOUSHALA & PASHUSHALA VARANASI

## GOLGHAR (SADAR) BRANCH

## INCOME & EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31.03.1998

**A. Income**

| | | | Amount |
|---|---|---|---|
| By | Sale of Milk | | 14,07,819.00 |
| " | Sale of Gobar | | — |
| " | Smarika Advertisement | | 86,000.00 |
| " | Golak Peti | | 43,380.20 |
| " | Miscellaneous Income | | 4,990.00 |
| " | Interest | | 4,407.75 |
| " | Donation | | |
| | General | 7,04,087.19 | |
| | Specific | 50,000.00 | 7,54,087.19 |
| " | Go-grass | | 8,31,892.40 |
| " | Go-dakhila | | 4,332.00 |
| " | Go-bardai | | 2,500.00 |
| " | Dividend U.T.I. | | 74,071.88 |
| " | Gowdan | | 10,000.00 |
| " | Advance Milk Coupon (1996) | | 3,514.00 |
| | | **Sub Total 'A' :** | **32,26,994.42** |

**B. Expenditure**

| | | | |
|---|---|---|---|
| To | Pashu Ahar | | |
| | Developing Govansh | 1,18,807.50 | |
| | Dudharu Govansh | 9,09,905.89 | 10,28,713.39 |
| " | Pashu Medical Expenses | | 48,681.75 |
| " | Daily Wages | | 7,733.50 |
| " | Salary | | |
| | Administrative | 75,088.00 | |
| | Developing Govansh | 13,049.00 | |
| | Dudharu Govansh | 1,00,262.00 | |
| | Dudharu Govansh Chik | 29,095.00 | |
| | Milk Distribution | 19,638.00 | 2,37,132.00 |
| " | Stationery Expenses | | 16,465.25 |
| " | Postage Expenses | | 10.00 |
| " | Electricity Expenses | | 4,148.00 |
| " | Miscellaneous Expenses | | 31,041.55 |
| " | Telephone Expenses | | 7,731.00 |



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

| | |
|---|---|
| To Conveyance Expenses | 30.00 |
| " Legal Expenses | 16,558.15 |
| " Gopashtami Expenses | 60,078.00 |
| " Water Tax | 2,769.00 |
| " Bank Commission | 148.98 |
| " Repairs & Maintenance | 13,611.20 |
| " Staff Welfare | 5,181.91 |
| " Cycle Repair | 5,678.35 |
| " Building Tax | 4,225.00 |
| " Cartage | 7,319.00 |
| " Security Expenses | 24,055.00 |
| " Milk Wastage | 19,875.00 |
| " Golak Pati Commission | 8,823.00 |
| " Milk Distribution Expenses | 6,680.85 |
| " Internal Audit Fees | 7,200.00 |
| " Generator Expenses | 1,970.00 |
| " Petrol & Diesel | 4,606.05 |
| " Transfer to Capital Fund | |
| Investment in Fixed Assets | |
| Pashu Chikitsa Euipment | 35,070.00 |
| Building Construction | 16,432.00 |
| Cycle Purchases | 670.00 |
| Investment in U.T.I. | 22,400.00 |
| Investment in Electric Security | 1,500.00 |
| **Sub Total 'B' :** | **16,44,537.93** |
| ***Excess of Income over Expenditure (A - B)*** | **15,82,456.49** |

**For M/s. Shiv & Deepak**
**Chartered Accountants**
**Sd/-**
**(DEEPAK AGRAWAL)**
**Partner**

**PLACE : VARANASI**
**DATED : 09.10.1998**



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# SHREE KASHI JEEVDAYA VISTARINI GOUSHALA & PASHUSHALA VARANASI

## RATHYATRA (SADAR) BRANCH

## INCOME & EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31.03.1998

| | | | Amount |
|---|---|---|---|
| **A. Income** | | | |
| | By Income from Sale of Milk | | 65,788.25 |
| | | **Sub Total 'A' :** | **65,788.25** |
| **B. Expenditure** | | | |
| | To Miscellaneous Expenses | | 322.90 |
| | " Sundry Expenses | | 3,719.00 |
| | " Conveyance Expenses | | 902.00 |
| | " Cycle Repairs | | 1,029.50 |
| | " Stationery Expenses | | 764.00 |
| | " Staff Welfare | | 725.00 |
| | " Telephone Expenses | | 141.00 |
| | " Petrol Expenses | | 265.00 |
| | " Postage Expenses | | 150.00 |
| | " Advertisement | | 300.00 |
| | " Milk Freight | | 28,031.00 |
| | " Milk Distribution Expenses | | 17,796.50 |
| | " Milk Wastage Expenses | | 24,202.00 |
| | " Transfer to Capital Fund | | |
| | Cycle | 18,335.00 | |
| | Utensiles | 7,523.30 | |
| | Furniture | 4000.00 | 29,878.30 |
| | | **Sub Total 'B' :** | **1,08,226.20** |
| ***Excess of Expenditure over Income (B - A)*** | | | **42,437.95** |

**For M/s. Shiv & Deepak**
Chartered Accountants

Sd/-

(DEEPAK AGRAWAL)
Partner

PLACE : VARANASI
DATED : 09.10.1998



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

# SHREE KASHI JEEVDAYA VISTARINI GOUSHALA & PASHUSHALA VARANASI

## BAWANBIGHA BRANCH

## INCOME & EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31.03.1998

| | | | Amount |
|---|---|---|---|
| **A. Income** | | | |
| By | Agricultural Receipt | | 7,21,218.78 |
| " | Sale of Gobar | | 23,960.00 |
| " | Sale of Milk | | 6,61,713.50 |
| " | Donation | | — |
| | General | | 6,297.00 |
| | Specific | | 8,00,000.00 |
| " | Sarang Agricultural Receipt | | 21,630.00 |
| " | Go-grass | | 49,165.98 |
| " | Go-vardai | | 3,222.00 |
| " | Sale of wood | | 19,800.00 |
| | | **Sub Total 'A' :** | **23,07,007.26** |
| **B. Expenditure** | | | |
| To | Agricultural Expenses | | 3,00,512.55 |
| " | Pashu Ahar Expenses | | 10,79,318.94 |
| " | Pashu Medical Expenses | | 44,681.35 |
| " | Daily Wages | | |
| | Agricultural | 37,610.00 | |
| | Milk Production | 37,611.75 | 75,221.75 |
| " | Salary | | |
| | Agricultural | 1,45,995.00 | |
| | Milk Production | 1,45,995.35 | 2,91,990.35 |
| " | Diesel Expenses | | 70,314.15 |
| " | Tractor Repairs | | 26,977.50 |
| " | Moped Repairs | | 3,068.90 |
| " | Petrol Expenses | | 3,790.50 |
| " | Conveyance Expenses | | 1,604.00 |
| " | Electricity Charges | | 85,754.93 |
| " | Repairing & Maintenance | | 23,106.65 |
| " | Bullock Cart Repairs | | 3,363.50 |
| " | Telephone Expenses | | 5,707.00 |
| " | Printing & Stationery | | 5,685.60 |



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

| | | |
|---|---|---|
| To | Staff Welfare | 37,823.93 |
| " | Legal Expenses | 2,101.00 |
| " | Sarang Expenses | 29,630.00 |
| " | Cycle Repairs | 4,604.50 |
| " | Miscellaneous Expenses | 21,997.89 |
| " | Bagwani Expenses | 20,806.00 |
| " | Lagan Expenses | 1,131.55 |
| " | Milk Wastage | 400.75 |
| " | Cartage | 6,302.80 |
| " | Mess Expenses | 12,360.00 |
| " | Gopashtami Expenses | 828.00 |
| " | Internal Audit Fees | 4,800.00 |
| " | Land Levelling Expenses | 2,11,790.50 |
| " | Transfer to Capital Fund | |
| | Investment in Fixed Assets | |
| | Tubewell Construction | 2,03,921.63 |
| | Water Tank Nirman | 3,32,355.07 |
| | Building Construction | 66,813.50 |
| | Tractor Purchases | 2,61,265.00 |
| | Generator Purchases | 2,79,520.00 |
| | Moped Purchase | 16,590.00 |
| | Investment in Live Stock | 1,85,133.00 |
| | Investment in Electric security | 9,000.00 |
| | **Sub Total 'B' :** | **37,30,272.79** |
| | ***Excess of Expenditure over Income (B - A)*** | **14,23,265.53** |

**For M/s. Shiv & Deepak**
**Chartered Accountants**

**Sd/-**

**(DEEPAK AGRAWAL)**
**Partner**

**PLACE : VARANASI**
**DATED : 09.10.1998**



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# SHREE KASHI JEEVDAYA VISTARINI GOUSHALA & PASHUSHALA VARANASI

## RAMESHWAR BRANCH

### INCOME & EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31.03.1998

| | | | Amount |
|---|---|---|---|
| **A. Income** | | | |
| By | Milk Sale | | 25,02,576.00 |
| " | Gobar & khad | | 4,19,316.75 |
| " | Donation | | |
| | General | | 34,90,051.71 |
| | Specific | | 8,00,000.00 |
| " | Bank Interest | | 266.39 |
| " | Go-dakhila | | 20,937.00 |
| " | Golak Peti | | 35,257.20 |
| " | Agricultural Income | | 17,21,329.40 |
| " | Other Income | | 89,486.23 |
| " | Sale of Fruits, Flower & Vegetables | | 55,019.50 |
| | | **Sub Total 'A' :** | **91,34,240.18** |
| **B. Expenditure** | | | |
| To | Pashu Ahar Expenses | | 40,26,356.67 |
| " | Pashu Medical Expenses | | 1,76,322.42 |
| " | Salary | | |
| | Dairy | 90,004.34 | |
| | Agricultural | 99,820.65 | |
| | General | 2,64,744.55 | 4,54,569.54 |
| " | Daily Wages | | |
| | Dairy | 3,05,228.30 | |
| | Agricultural | 6,07,546.04 | |
| | General | 2,54,427.51 | 11,67,201.85 |
| " | Diesel & Mobile Expenses | | |
| | Dairy | 50,320.81 | |
| | Agricultural | 1,01,201.59 | |
| | General | 50,430.50 | 2,01,952.90 |
| " | Electricity Charges | | 1,13,921.55 |
| " | Petrol Expenses | | 20,553.67 |
| " | Repairs & Maintenance | | |
| | Building | | 1,07,607.30 |
| | Cart | | 4,432.80 |
| | Cycle | | 2,881.60 |
| | Generator | | 55,604.00 |
| | General | | 42,534.10 |



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

| | | |
|---|---|---|
| To | Tractor & Machinery Exp. | 84,578.10 |
| " | Agricultural Expenses | 3,04,016.36 |
| " | Horticulture Expenses | 40,721.25 |
| " | Gobansh Expenses | 64,090.13 |
| " | Miscellaneous Expenses | 30,536.95 |
| " | Vehicle Expenses | 73,136.26 |
| " | Milk Distruibution Expenses | 21,952.00 |
| " | Bank Charges | 614.50 |
| " | Legal Expenses | 43,994.05 |
| " | News Papers & Periodicals | 2,685.00 |
| " | Printing & Stationery | 22,677.55 |
| " | Staff Welfare | 13,015.10 |
| " | Travelling & Conveyance | 16,521.94 |
| " | Advertisement | 1,400.00 |
| " | Internal Audit Fees | 24,000.00 |
| " | Consumption & Wastage of Milk | 1,91,099.75 |
| " | Office Upkeep & Maintenance | 2,187.00 |
| " | Festival Expenses | 1,88,495.62 |
| " | Pumping Set Expenses | 62,224.00 |
| " | Consumption of Gobar Khad | 3,60,000.00 |
| " | Annapurna Bhandar Mess Exp. | 2,21,377.54 |
| " | Land Levelling Expenses | 2,20,438.90 |
| " | Transfer to Capital Fund | |
| | Investment in Fixed Assets | |
| | Building Constructions | 5,06,922.49 |
| | Cycle | 1,299.00 |
| | Dairy Equipment | 1,06,417.20 |
| | Furniture | 8,625.00 |
| | Agricultural Equipments | 1,23,025.00 |
| | Investment in Live Stock | 1,29,100.00 |
| | Investment in Telephone Security | 1,000.00 |
| | **Sub Total 'B' :** | **92,40,089.09** |
| | ***Excess of Expenditure over Income*** | **1,05,848.91** |

**For M/s. Shiv & Deepak**
Chartered Accountants

Sd/-

(DEEPAK AGRAWAL)
Partner

PLACE : VARANASI
DATED : 09.10.1998



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

World Class Telephone
At An Unbeatable Price

One Year Warranty

ORPAT â
TELEPHONE

Orpat - India's Langest Telephone Manufacturer by 2000

*Authorised Depot of*
*for*
VNS, Sonbhadra, Mirzapur, Bhadohi, Azamgarh, Ballia, Mau, JNP, GZP.

VARANASI MARKETING PVT. LTD.

42, Hathua Market, Chetganj, Varanasi

*Phone* : 351654 (Off.)
360138 (Res.)
*Fax No.* : 391098
*Mobile No.* : 9839056767




Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

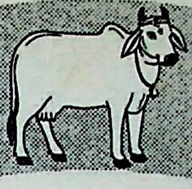

त्वं माता सर्वदेवानां त्वं च यज्ञस्य कारणम्।
त्वं तीर्थं सर्वतीर्थानां नमस्तेऽस्तु सदानघे॥

'हे निष्पापे गौ! तुम सभी देवताओं की माता हो, यज्ञ की आधारभूता हो और तुम्हीं सभी तीर्थों की तीर्थरूपा हो अतः तुम्हें बार-बार नमस्कार है।'


श्रीनिकेतन सारीज प्रा०लि०

द्वारा

**सभी गोभक्तों को**

**हार्दिक शुभ कामनाएँ**




Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

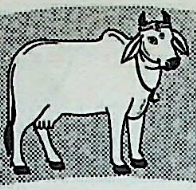

दीपावली के बाद करीब-करीब सभी घरों में गोबरधन की पूजा की जाती है। दीपावली का पर्व महालक्ष्मी जी की आराधना के लिये पूरे देश में बड़ी धूम धाम के साथ मनाया जाता है और तुरंत बाद गोबरधन की पूजा की जाती है। जरा-सा पदच्छेद कर देखें तो 'गोबर' एवं 'धन' दो शब्दों का एकीकरण है।

इस पूजा के द्वारा भी प्रतिवर्ष एक संकेत दिया जाता है कि गोबर में धन है, ऐश्वर्य की देवी महालक्ष्मी जी का वास है गोबर में, इसे ढूँढ़ों और समृद्धि पाओ, लेकिन अधिकतर लोग पूजा तो कर लेते हैं, परन्तु कभी यह नहीं सोचते कि इस पूजा का असली संकेत क्या है और उसके लिए कुछ करना है।

SADBHAVANA
ENTERPRISES
Dealers in
*Banarasi Plain Poat, Dress Materials & Sarees*
CK. 57/1 - 4, Govindpura Chowk, VARANASI - 221001
*Phone* : 353076 (Shop), 310612, 310613 (Resi.)



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

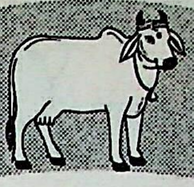

नमो देव्यौ महादेव्यै सुरभ्यै च नमो नमः। गवां बीज स्वरूपायै नमस्ते जगदम्बिके॥
नमो राधाप्रियायै च पद्मांशायै नमो नमः। नमः कृष्णप्रियायै च गवां मात्रै नमो नमः॥
कल्पवृक्षस्वरूपायै प्रदायै सर्वसम्पदाम्। श्रीदायै धनदायै च बुद्धिदायै नमो नमः॥
शुभदायै प्रसन्नायै गोप्रदायै नमो नमः। यशोदायै साख्यदायै धर्मज्ञायै नमो नमः॥

हे देवी, महादेवी, सुरभिदेवी ! आपको बार-बार प्रणाम है। हे सम्पूर्ण गौओं की आदिबीजस्वरूपा जगज्जनी! आपको प्रणाम है। हे राधिकाप्रिये, लक्ष्मीस्वरूपिणी! आपको प्रणाम है। हे कृष्णप्रिये गौओं की जननी! आपको प्रणाम है। हे कल्पवृक्षस्वरूपा! समस्त सम्पदाओं को प्रदान करने वाली, श्री-धन और बुद्धि देने वाली आपको प्रणाम है। हे परम प्रसन्नरूपा समस्त शुभ और गौ की प्रदाता! आपको प्रणाम है। हे यश और सौख्य प्रदान करने वाली धर्मज्ञादेवी! आपको बार-बार प्रणाम है।

अधिकृत विक्रेता **ओरिएन्ट पेपर मिल्स** अमलाई **ओरिएन्ट पेपर मिल्स** ब्रजराजनगर

**दी सिरपुर पेपर मिल्स लिमिटेड** कागजनगर

# राधेश्याम पेपर स्टोर्स

**कर्णघंटा, वाराणसी-२२१००१**

फोन : ३५३९५२, ३५३५४६, ३५४८२६ (कार्यालय)
३५०२८४, ३५१४०७, ३६२५६५ (निवास)



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

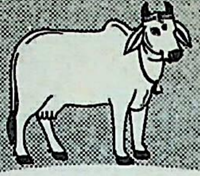

गावो भगो गाव इन्द्रो म इच्छाद् गावः सोमस्य प्रथमस्य भक्षः।
इमा या गावः स जनास इनद्र इच्छामि हृदा मनसा चिदित्रम्॥

गौएँ हमारा मुख्य धन हों, इन्द्र हमें गोधन प्रदान करें तथा यज्ञों की प्रधान वस्तु सोमरस के साथ मिलकर गौओं का दूध ही उनका नैवेद्य बने। जिसके पास ये गौएँ हैं, वह तो एक प्रकार से इन्द्र ही है। मैं अपने श्रद्धायुक्त मन से गव्य पदार्थों के द्वारा इन्द्र (भगवान्) का यजन करना चाहता हूँ।


# दी इण्डियन टेक्सटाइल्स कम्पनी लिमिटेड

ज्ञानवापी, वाराणसी

फोन : ३२१७३५

*निर्माता तथा निर्यातकर्ता*

आधुनिक बनारसी साड़ियाँ, रॉ सिल्क

कलकत्ता, बंगलोर, बम्बई, दिल्ली, भागलपुर




Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

वन्दना
साड़ी इम्पोरियम

14 सी, लिन्डसे स्ट्रीट, कलकत्ता-700087
फोन : 2443362, 2450509, निवास : 4791977, 4792056
फैक्स : 033-2447665

सुचित्रा
साड़ीज़ प्रा० लिमिटेड

सीके० 23/27, चौक, वाराणसी-221001
फोन : 320079, 320601

फैक्ट्री
चित्र निर्माण
इण्डस्ट्रियल स्टेट, चाँदपुर
वाराणसी-221106
फोन : 370092, 370594

कार्यालय
"रामायण"
बी० 37/116 जी, पं० बेनीराम बाग
रथयात्रा क्रांसिंग, वाराणसी-221010
फोन: 360861, 360862
निवास : 363864, फैक्स : 0542-360865

Suchitra© PRINTS



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

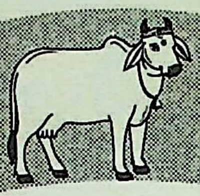

अमेरिका में

अनुसंधान द्वारा पता लगाया गया है कि

विटामिन 'बी' तो गौ के पेट में

सर्वदा ही रहता है।

इस कारण उसका दूध ही क्या

गोमूत्र तक भी पूर्ण पोषक है।

HAST KALA

Exclusive Sarees

3, Tirupati Apartment, Bhulabhai Desai Road,
Mahalaxmi Temple, Mumbai-400026
Phone :4925431, 4932853



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

What Hindalco offers which others don't?

# A Long Lasting Relationship

**BUILT ON**

- Mutual Trust
- Adherence to Delivery Commitment
- Fast Response
- Priority Customer Service

Quality Product and Quality Service is what Hindalco Stands for.

HINDALCO

HINDALCO

Where Success Comes From Commitment

HEAD OFFICE & WORKS : P.O. Renukoot-231 217, Distt. Sonbhadra (U.P.) India
Phone : (05446) 52077-9, Fax : (05446) 52107, 52427
ZONAL OFFICES AT : MUMBAI, NEW DELHI, CALCUTTA * BANGALORE

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

**एतदवै विश्वरूपं सर्वरूपं गोरूपम्।**

गाय में सभी देव समाविष्ट हैं। यह गाय का विराट रूप है।

**गावो भगो गाव इन्द्रो म इच्छात्।**

गाय सौभाग्य का चिन्ह है। परमात्मा हमें गाय दें।

**धेनुं सदनं रयीणाम्।**

गाय ऐश्वर्य का आधार है।

**भद्र गृहं कृणुथ भद्रवाचः।**

गाय मधुर ध्वनि से घर को शुभ बना देती है।

**व्रजं कृणुध्वं सहि वो नृपाणः।**

गोशाला बनाओ और मनुष्यों के लिए दुग्धशाला हो।

**अयं वो गोइड पोषयिष्णुः।**

यह गायों के लिए गोशाला है। यहाँ इनका पोषण होता है।

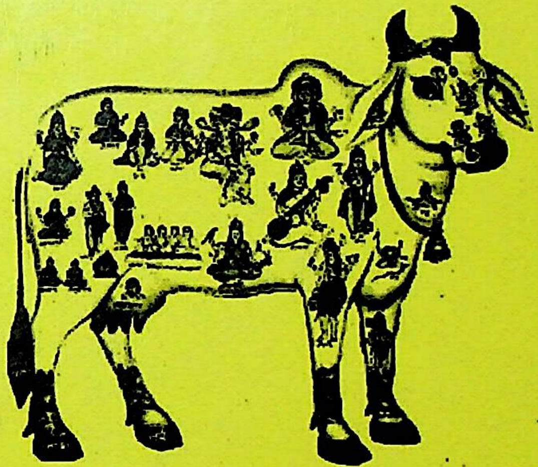

गोपाष्टमी पर्व पर हमारी विनम्र शुभकामना

# बिन्नानी चैरिटी ट्रस्ट

43, स्ट्रैण्ड रोड, कलकत्ता

मुद्रक : वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi